Dhyana Moolam Guruji Moorti
Pooja Moolam Guruji Padam
Mantra Moolam Guruji Vakyam
Moksha Moolam Guruji Kripa
divinepramilablogspot.com

बे हद की उड़ान

प्रेमियों को लिखे गुरुजी के कुछ दुर्लभ अप्रेषित पत्रों का अद्वितीय संकलन

संकलन वर्ष 2024

गुरुजी

divinepramilabhagwan.com

मिटा दे अपनी हस्ती को
अगर तू मर्त बा चाहे ...
के दाना ख़ाक में मिलकर
गु ल-ऐ-गु लज़ार होता है ...

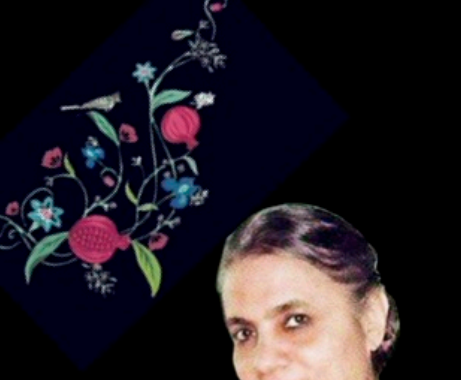

“दुनिया में जब कभी भी, मोहब्बत की कमी पाता हूँ मैं, खुद ही मोहब्बत बनकर, दुनिया में बिखर जाता हूँ मैं।”

ता लिब का मुर्शिद (गुरू) से मिलाप तब लिखा गया था जब कायनात वजूद में नहीं आई थी। तब न ही ईश्वर ने जोड़ी थी कलम, ना बनाई थी तकदीर, जब न मुल्क था ना मनुष्य (लोग) जब न ही अभी तक एक बुत में आदम आया था फिर बरसों की जुदाई के बाद युगों के फिराक (वियोग) के बाद आकर एक-दूसरे से मिलते हैं और मिलकर एक होते हैं सोई तुम्हारे लिए प्रेम और मिलाप मिलखा मुकर्रर हुआ है। आदि से यह अनोखा अजीब प्रेम जो भक्त को भगवान से मिलाकर एक कर देता है।

सच्चा गुरू अपने भक्त को अमन और अशरीर (देह-रहित) करके क्षण में तीनों तापों से छुड़ा देता है क्योंकि फिर वह संशय में पड़े हुए तालिब (शिष्य) के सभी खयाल छीनकर अजीब ज्ञान से उसे अजीब पद बख्शता है। विश्वासी को ऐसा नूर का प्याला पिलाता है जो अचानक अपने आप अजगैबी खुमारी (नशा) चढ़कर उसे उड़ाकर बेहद्द के बाजार का सैर कराता है फिर तालिब अनंत अचरज से (आश्चर्य से) बैठकर अपना ही दीदार अपने अंदर करता है। विश्वास ही तालिब को अगम देश में पहुंचाने वाला उड़न खटोला है। पूरण सेवक ही पूरण गुरू के पद पर पहुँच सकता है।

कामिल गुरू का मिलाप घर बैठे हो जाता है न कि भटकने से क्योंकि यह तो आदि से लिखा हुआ है, बाकी गुरू को रिझाना, सिर देना, यह तालिब का काम है। विश्वास और प्रेम में सब हो जाता है पता भी नहीं चलता है कि कैसे सर उतर गया, यही करामात है।

सू ची सं ख्या

पत्र 1 - किसी की बुराई सुनते सुनते ----------1
पत्र 2 - नैमत तो हर शख़्स को मिलती है ----------4
पत्र 3 - सदैव ऊंचों का संग करो ----------6
पत्र 4 - गुरु का चिंतन करते ----------9
पत्र 5 - जब मोह की दलदल से निकलेगा ----------12
पत्र 6 - प्रेम गली अति सांकरी ----------15
पत्र 7 - भाग्यशाली वो है जो जीवन में----------17
पत्र 8 - आप किसी से सितार छीन सकते हैं ----------21
पत्र 9 - समत्व योग, सम बुद्धि, सम दृष्टि----------25
पत्र 10 - शुद्ध स्वरूप मम प्रिय----------27
पत्र 11 - प्रेम गली अति सांकरी----------33
पत्र 12 - लड़का लड़ लड़ के Property ----------36
पत्र 13 - मान को छोड़ दो ----------38
पत्र 14 - ईश्वर और उस में श्रद्धा----------41
पत्र 15 - भाग्यशाली वो है जो जीवन----------44
पत्र 16 - निष्काम, भक्ति और प्रेम----------48
पत्र 17 - दशरथ के पास शोक था----------51
पत्र 18 - तुम यहां श्राद्ध करते हो ----------55
पत्र 19 - मेहरवान मेहरवान----------59
पत्र 20 - When Chela Is Ready ----------64
पत्र 21 - सतगुरु के पास सभी ----------69
पत्र 22 - प्रभू से नाता जोड़कर रखो ----------72
पत्र 23 - शिव जी की बातों में ----------73
पत्र 24 - सूर्य उदय और अस्त होता है ----------76

पत्र 25 - आप सभी का जीवन प्रेम से ----------83
पत्र 26 - जो मैं ऐसा जानती प्रीत----------84
पत्र 27 - जब सतगुरु मिल गए तो समझो----------89
पत्र 28 - कुंती माता ने कृष्ण से कहा ----------91
पत्र 29 - रक्षा बंधन के दिन----------94
पत्र 30 - रावण के मारने का ----------95
पत्र 31 - पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो ----------102
पत्र 32 - सतगुरु के पास सभी----------108
पत्र 33 - जीवन में संयम की महानता है ----------112
पत्र 34 - गुरु प्रसाद का अमृत रस पान----------116
पत्र 35 - कांटेदार पेड़ बबूल का पौधा ----------117
पत्र 36 - अब देहरादून में भी----------122
पत्र 37 - करोड़ों सूर्यों का तेज गुरु में है ----------123
पत्र 38 - सभी का प्रेम उमड़ उमड़ कर----------132
पत्र 39 - कोई यदि कहे तुम्हें प्रेम नहीं ----------133
पत्र 40 - किसी शक्ति को बढ़ाने के लिए----------136
पत्र 41 - सब कुछ गंवा कर ----------142
पत्र 42 - सदैव अपने सच्चे स्वरूप----------148
पत्र 43 - बुद्ध भगवान एक शहर में ----------149
पत्र 44 - यह जीवन कैसे हर एक का सुनहरा----------152
पत्र 45 - तुम्हारा निश्चय ही तुम्हारा साथी है----------158
पत्र 46 - जब अपने पराये का भेद मिट ----------159
पत्र 47 - किसी को दुखी करना तो पाप है----------163
पत्र 48 - शरीर के सुख दुःख ----------168
पत्र 49 - सीताराम सीताराम कहिए----------169
पत्र 50 - जीवन में साहस और धीरज----------173

पत्र 51 - आप सभी का परम पुरुषार्थ----------176
पत्र 52 - अपने प्रेम को घर परिवार----------177
पत्र 53 - सभी प्रेमी अपनी लगन----------184
पत्र 54 - पति ध्यान में बैठा था----------185
पत्र 55 - तुम सबके तरफ़ के प्रेमी ----------190
पत्र 56 - प्रारब्ध सभी की Fix है----------191
पत्र 57 - एक दीपक से अनेक दीपक----------195
पत्र 58 - जिस प्रकार का बीज है ----------196
पत्र 59 - ज्ञान व प्रेम की मस्ती----------199
पत्र 60 - मन में प्रभू के लिए ----------200
पत्र 61 - आपके यहां यह ब्रह्मज्ञान पहुंचा है ----------205
पत्र 62 - एक प्रोफ़ेसर खुद ही----------206
पत्र 63 - सत्य की जीत तो अवश्य होगी----------210
पत्र 64 - जो तू चैतन्य है माया से परे ----------214
पत्र 65 - दृढ़ निश्चय वाले की कभी हार नहीं ----------217
पत्र 66 - हम तो यहां संयम सिखाते हैं----------218
पत्र 67 - बोलो तो पहले तुम तोलो----------223
पत्र 68 - मनुष्य हर समय मस्तिष्क ----------230
पत्र 69 - सत्गुरु मिले मेरे सारे दुख बिसरे ----------234
पत्र 70 - संत दर्शन से पापी भी----------235
पत्र 71 - अपने अपने आनंद में मस्त ----------237
पत्र 72 - खुश रहने की कला ----------242
पत्र 73 - उत्पति और उपपति ----------243

पत्र।- किसी की बु राई सु नते सु नते

किसी की बुराई सुनते सुनते मन उन्हें मानने लगेगा। पिछली बातें याद करते करते उसका रूप हो जाते हैं। जिसके लिए जैसी Image बना लेते हैं वैसा ही वो दिखने लगता है। अपनी समझ अच्छी बना लें दौड़ रहे हैं कहां, कितना दौड़ना है। मनुष्य का अर्थ है - 'मननशील'। विचार जरूरी है विश्लेषण क्या है - मन को सपनो की दुनिया से हटाओ। थोड़ी देर वास्तविकता में आएं। कोई योजना बनाने से पहले मन का शांत होना जरूरी है। दूसरों के अनुभवों का फायदा ज़रूर लें। सुनना, फिर गुनना, फिर चलना ज़रूरी है। विचार विमर्श करो। कुछ बातें कुछ देर तक अच्छी लगती हैं। गुदगुदी स्वयं करने से असर नहीं होता क्योंकि संवेदना दिमाग तक पहुंचने में समय नहीं लगाना पड़ता पर दूसरा करेगा तो लगेगी क्योंकि मस्तिष्क तक नहीं पहुंचती। किसी बात पर एक बार हंसोगे, दोबारा नहीं हंसोगे क्योंकि जान गए। मुरझाए चेहरों पर हंसी नहीं देखी।

सतगुरु जोश देकर तुम्हें जोश दिलाते हैं।

जिस के जागने से जगत जागता है, उसका सोना भी कितना अच्छा लगता है।

आवाज़ में उतार चढ़ाव होता है तो प्रभाव ज्यादा होगा, कई धारा प्रवाह रहते हैं। कई कहते हैं, आशीर्वाद दे दीजिए, पीठ पर हाथ रखिए। यह मांगने से नहीं मिलती पर तेरे व्यक्तित्व से अपने आप मिलती है। "मैंने इन आंखों से भगवान देखा है"। हाथ रखने से नहीं, दिल से

आशीर्वाद मिलता है। मांगने या देने की चीज नहीं है। आशीर्वाद तो बरस जाता है नानक नदरी नदर निहाल

कृष्ण की आंख खुली तो अपने सामने पहले अर्जुन को देखा। दुर्योधन को बाद में देखा। दोनों ही सहायता के लिए गए। एक तरफ निहत्था मैं और दूसरी तरफ मेरी पूरी ही चतुरंगी सेना है। कृष्ण ने पहली बारी अर्जुन को दी। अर्जुन बोले, धर्म युद्ध कर रहा हूं, सत्य युद्ध है। आप सत्य के पक्ष में रहते हैं मुझे आप ही चाहिए। दुर्योधन को सेना मिली और वो खुश हुआ। कौरव बुरी तरह से हार गए। एक योद्धा भी ना बचा और पाण्डवों का केवल अभिमन्यु गया, बाकी पांचों जीवित रहे।

अभी तुमसे पूछा जाए, तुम भी कहोगे हमने भी कृष्ण को चुना है लेकिन यह झूठ है क्योंकि तुम्हारे अंदर जगत का साथ है। मन की मौत ही ध्यान है। मन सारे जगत का सूक्ष्म रूप है। जगत और मन एक ही चीज है। जिसका मन मरा उसका सब कुछ मर गया। सब तीर्थ, पुरी के दर्शन, यज्ञ, तप सब कर लिए उससे मन और तगड़ा हो गया। मन का मरना तुम्हारा जीना है और मन का जीना तुम्हारी मृत्यु। खाना-पीना, भोगना इसका जीवन ही क्या? लोग परेशानियों से छूटने के लिए यहां आते हैं, कोई कहता है दुकान चलती नहीं। नानक की बंद करा दी। भगवान तो बंद कराने के चक्कर में हैं। नानक ने तोलते-तोलते तेरा ही तेरा कर दिया। कहां है नानक वो शमशान घाट पर बैठ जाता था, क्यों बैठते थे, वो ढूंढते हैं कि वो व्यापक रहता कहां है। फिर क्या निकलता है जो मुर्दा हो गया। बच्चे हर्ष, शोक से अतीत रहते हैं। वो बेखबर हैं कि उसके बाप ने आत्महत्या कर ली है। ज्ञानी धीरज नहीं गंवायेगा, जो आत्महत्या कर लिया। जीवन को समझने के लिए ज्ञान की ज़रूरत है।

तुम मुझे ना सुनकर, मन की सुनते रहते हो। आए तो हो लेकिन घर हाज़िर हो। जहां तुम हो वहां यदि मन नहीं बैठता है तो तुम वहां नहीं हो। ज्ञानी कर्म करते हुए भी भीतर परमात्मा से जुड़े रहते हैं। परमात्मा मेरा कुछ नहीं, सब तेरा ही है। सब भूल जाता है। अपने को भुलाकर कर्म करना अकर्म है। कर्ता भाव ही दुखों की जड़ है। कुछ ना करना ही ज्ञान है। अपने को मन, बुद्धि, देह से अलग कर दो।

पत्र 2 - नैं मत तो हर शख़्स को मिलती है

- नैमत तो हर शख्स को मिली है, पर उसकी कद्र नहीं करते।
- पैसा तुम्हारे हाथ में है, तुमसे पूछा जाए किसका है? तुम कहोगे मेरा है। यह गलत है क्योंकि तुम उसके ग़ुलाम हो गए, परन्तु जब तुमने उसे खर्च किया तो तुम उसके मालिक हो गए। तुमने उसे निष्काम में खर्च किया।
- तुमने मज़दूर को भोजन दिया और उसने खाने में आधा घंटा लगाया, तुम्हें उस पर गुस्सा नहीं आएगा क्योंकि वो खाकर तुम्हारा काम सही तरह से करेगा। तुम भी खाते पीते हो वो ठीक है पर उस समय को तुम ने ऐशो आराम में बिताया तो दोषी हो। तुम्हारे कर्म तुम्हारी नीयत कैसी है उसे देखना पड़ता है। गलत कर्म का फल तो अवश्य मिलेगा।
- रामकृष्ण परमहंस से भक्तों ने कहा, मां से कहो एक कौर तो खा सके। मां ने कहा जगत के जितने मुख हैं, इससे तू खा तो रहा है। इसके बाद उसने मां से कुछ नहीं मांगा।
- रमन महर्षि को गैंगरीन भी हो गया जो होने वाला है वो होगा ही। सब नाटक है, चलता रहता है।
- बनाना है तो दुश्मन की भी प्रशंसा करो। धीरज, प्रेम, नम्रता, क्षमा रूपी लगन करुणा का स्वभाव हो जाए। दया धर्म का मूल है पर नर्क मूल अभिमान। यदि अभिमान आया तो सब कुछ गया। शिव ज्ञान का स्वरूप हैं, राम धर्म का स्वरूप हैं। राम धर्माचार्य, शुकदेव भक्तिचारी और कृष्ण कर्माचारी कर्मयोगेश्वर है।
- 10 सूत्र हैं ज्ञान के -

- पड़ोसी से प्रेम करो।
- अहिंसा परमोधर्म। किसी की भी हिंसा ना करो केवल मानव की हिंसा नहीं, पर सभी को मारने की मनाही।
- वृक्ष, हवा, जल, सभी आपके पड़ोसी हैं। इन्हें भी प्यार करो, केवल बगल रहने वाला पड़ोसी नहीं।
- मैं सर्वत्र हूं, कोई खाली जगह नहीं है।
- तुम जहां तक हो, वो भी वहीं तक है।
- अपने शरीर द्वारा सभी की सेवा हो जाए। प्राणी मात्र के लिए जीवन हो जाये। आलस्य ना रहे। परमात्मा के अनुग्रह से ही जीवन मिला है, इसका सदुपयोग करें। हरेक के लिए तन, मन, धन की आहुति दे दें।
- मैं और मेरे की दुनिया से हटकर 'सब मैं ही तो हूं' के भाव में आ जायें। अपने कार्य में ही समाधिष्ठ हो जाएं।
- दीपक जलाके बैठे हैं अगर तेज़ वायु से दीपक बुझ जाता है तो चुपचाप जला लो। फिर से अंधकार को गंवा के अंदर ज्योत स्वरूप प्रगट हो जाये। अपने कार्य में तत्परता से लगे रहें।
- वाचस्पति मिश्रा संत 50 वर्ष तक एक लेख लिखते रहे। एक दिन दीपक तेज वायु से बुझा और पत्नी भानुमति ने प्रज्वलित किया। ऋषि ने पूछा - तुम कौन हो? बोली- आपकी पत्नी हूं। तब पूछने पर पता चला कि 50 वर्षों से वो सेवा में संलग्न रही। तब उन्होंने कहा - इसके बाद जो ग्रंथ बनाऊंगा, उसका नाम "भानुमति" ही रखूंगा।

पत्र 3 - सदैव ऊंचों का संग करो

सदैव ऊंचों का संग करना, नीचे जाने वालों का संग मत करो। मैंने कामना को जीता है, यह निकृष्ट अहंकार मत करो। सतगुरु मेरा मैं सतगुरु का हूं यह अहंकार भले करो। मद खराब है पर श्रीमद् भागवत और श्रीमद् गीता। निकृष्ट अहंकार परमात्मा से दूर करता है। अभिमानी दया का पात्र है कृपा का पात्र नहीं। गुलाब का फूल खिला नहीं फूला था, थोड़ी देर में झड़ जाएगा। तुम ऊंचे तब हो जब उन्हें भी ऊंचा करके देखो। ऊपर वाला कब नीचे आ जाए, नीचे वाला कब ऊपर उठ जाए। पत्थर पर कारीगर की दृष्टि पड़ी तो छैनी हथौड़ी से उसे मूर्ति का आकार मिल गया। तराशते चलें, प्रकृति उसका मूल्य बढ़ा देती है। जब पत्थर मूर्ति बना तो वही फूल उस के चरणों में पड़ा था। अभिमानी का हाल ऐसा ही होता है। भाग्यशाली हैं जिसे ऐसा सतगुरु मिला है जो तुम्हें निखार देगा। अभिमान कभी भी अच्छा नहीं है। जो कुछ होता है परमात्मा की कृपा से ही होता है। सब कुछ मेरे हित के लिए ही हो रहा है। डॉक्टर की सर्जरी हमारे भले के लिए है। अबोध नहीं हो, बोध वाले हो, बचपना ना करो। अहंकार पर गुरु चोट करता है ऊंचा उठाने के लिए। “गर्वप्रहारी” भगवान का नाम है अहंकार तोड़ देते हैं । गुरु का हर वचन हमारी भलाई के लिए है। सलाह वहां दो जहां सलाह दुनिया का उद्धार जिसमें है, वो भी जब कोई पूछे तो सुनाओ।

जीवन का अनमोल खज़ाना कम होता जा रहा है, प्रभू के नाम से भरते रहें। कहीं भी बैठे हो तो स्वांस तुम्हारे साथ ही है। हर स्वांस में सुमिरन में लगे रहें। वरना तो कुत्ते की मौत मर जाएंगे। स्वांस स्वांस

ओम का जाप चलता रहे, जीवन ही ओम मय हो जाए। अपना पता ही भूल जाएं स्वांसों की कद्र करें। मृत्यु ना जवान ना वृद्ध देखती है। वक्त ही हमारा अमूल्य खज़ाना है। आज का काम कल पर नहीं रखना। आज नकद, कल उधार। क्योंकि कल तो कभी आता ही नहीं है। सत्संग में आते ही लगता है जीवन ऐसा ही बनाना है, उठते ही कहते हैं - नहीं अब यह बातें कल से करूंगा।

सत्संग से एक स्त्री को बहुत लगाव था। कई सप्ताह हो गए और वो नहीं आई। एक बार रास्ते में मिल गयी। पूछा, क्यों नहीं आती हो? बोली, 32 साल की जवान बेटी है उसके लिए चिंतित रहती हूं अब उसकी शादी के बाद आऊंगी, सदैव के लिए आऊंगी। फिर शादी हो गई तब भी नहीं आई। पूछने पर बोली - शादी तो हो गई पर दामाद की भाइयों से अनबन हो गई अब उसे कोई धंधा लगेगा तो आऊंगी। दामाद को घर भी मिल गया लेकिन माताजी फिर सत्संग नहीं आई। पूछने पर बोली - बेटी की गोद भरने वाली है, उसे बेटा हो जाए तो फिर आऊंगी आप आशीर्वाद दीजिए। फिर बेटा हुआ तब भी नहीं आई। पूछने पर बोली – बेटी भी पति के साथ दुकान जाती है, अब नाती को सम्भालती हूं, जब वो बड़ा होगा तो आऊंगी। कुछ काल बाद देखा रास्ते में भीड़ लगी थी। करीब जाकर देखा तो वो माताजी ही थी, उन्हें ट्रक ने कुचल दिया था।

लूटना है तो लूट ले बंदे, राम नाम की लूट।
फिर पाछे पछतायेंगे, जब प्राण जाएंगे छूट।

एक व्यक्ति रात को देर से कुछ पैसे देने आया सब के हित के लिए खर्च कर दीजिएगा। उसने कहा सुबह दे देना तो बोला सुबह तक शायद

मन बदल जाता। दिन में एकांत में बैठकर अपना नाता प्रभू से जोड़ो। अपने प्रभू से प्रीतम से मीठी-मीठी बातें करें। शुरू-शुरू में मन भटकेगा। उस समय याद करना 'अपना धर्म' नहीं छोड़ना है। कभी मन कहता है तुम अकेले रह जायेंगे। कृष्ण उसी को बुलाते हैं जो अकेले होते हैं। हम अभी तक अकेले नहीं हुए हैं, बेटा, आदमी अंदर है। Detachment तीसरा काम है। रोज़ किसी ना किसी की सेवा निष्काम भाव से अवश्य करें। आप सेवा करो उस परम शक्ति की। बदले की चाह ना रखो । और कितना समय हम भुलावे में वियोग में रहेंगे अज्ञान में रहेंगे। अभी जागकर अपने स्वरूप में आएं और कार्य में तत्परता से लग जाएं।

दुनिया के धंधे कभी कम ना होंगे,
अफसोस हम ना होंगे।।

पत्र ५ - गु रु का चिं तन करते

गुरु का चिंतन करते-करते गुरु रूप हो जाएं। रांझा जोगी बन कर आया। सांगी तूने जोगी का वेश धारण करके तू ही आया है। गुरु रूप बनकर आया है।

रांझा जोगीड़ा बन आया... जोगीड़ा बन आया
वाह वाह सांगी सांग रचाया, रांझा जोगीड़ा बन आया
इस जोगी दे नैन कटोरे, बाजां वांगुर लैंदे डोरे
मुख डिठियां दुख जावन दूरे, इन अखियां दे नाल है फंसाया
रांझा जोगीड़ा बन आया... जोगीड़ा बन आया
इस जोगी दी की है निशानी,
कन्न विच्च मुंदरां, गल विच्च गानी,
सूरत इस दी यूसफ़ सानी, इस अलफ़ो आप बणाया
रांझा जोगीड़ा बण आया....जोगीड़ा बण आया
रांझा जोगी दे नैन प्याली, जिसकी ख़ातिर भरसां पानी,
ऐवे पिछली उमर विहाणी, इस ने मैनुं भरमाया
रांझा जोगीड़ा बण आया ... जोगीड़ा बण आया
बुल्लेशाह दी ऐ गत बनाई, प्रीत पुराणी शोर मचाई,
ए गल कीकूं छुपे छुपाई, इसदी तपस है आज वुआई
रांझा जोगीड़ा बण आया ... जोगीड़ा बण आया
इस जोगी मैनुं नुं कीता रोगी,

सचिदानंद ही जोगी बन कर आया।

संसार में केवल एक दूसरे के शरीर से ही प्यार करते हैं। आंखें सतगुरु की बाज़ की तरह, सबसे ऊंची डाल पर बैठता है बाकी सब पक्षी नीचे ही रहते। बाज़ पक्षियों का राजा है। पैनी नज़र रात के अंधेरे में भी दूर तक देख सकती है। बाज़ Direct सीधे नीचे भी आ ही सकता है। अपने शिकार को पकड़ने के लिए एक सैकिंड में नीचे उतर आता है। अपनी ऊंचाइयों को छोड़कर नीचे आते। संसार की शुद्र चाहनाओं के कारण अपनी ऊंचाई छोड़ देता है। इसकी पकड़ इतनी तेज़ है कि शिकार भाग नहीं सकता। मरेगा, पर भाग नहीं सकता। बचना चाहता भी कौन है? गुरु का शिकार आंखों से ही होता है। कान मुन्दरा, गले में माला, उसकी सूरत यूसफ़ से आगे है। यूसफ़ भी उससे जलन करने लगे।

अलफ माना जो आद से शुरू से ही थी। “अलफ बे से शुरुआत कराते 2 ऊंचा बना दिया, ज्ञानी बना दिया। जोगी के नेत्रों से मोहित हो गया वो मेरा जोगी मैं जोगिन हो गई। बुल्ले शाह तो पुरुष थे पर स्त्री रूप में क्यों कहा? क्योंकि उसके जैसा समर्पण। स्त्री की जीत समर्पण। झुकाना पुरुष की जीत। समर्पण के लिए स्त्री भाव का होना ज़रूरी है।

एक बार बुल्लेशाह निकल रहे थे। वो अपने पति के लिए तैयार हो रही थी। (गांव में घर-घर की हरेक को खब़र रहती थी। बड़े शहरों में तो पड़ोस तक का पता नहीं रहता) अपनापन अब खत्म हो रहा है। केवल Sunday को ही मिल पाते थे। पहले Relax वातावरण था। कोई किसी के पास कभी भी आ जा सकता। पर America में बेटे से बाप Appointment ले कर बात करते हैं। प्रेम की कमी हो गई है।

बुल्लेशाह ने जब देखा मां अपने बालों में तेल डाल रही थी, पति आज आने वाले हैं। उसे देखकर प्रेम हिल्लोरे लेने लगा और बोले मेरे सिर में भी तेल लगा दो और अपने महबूब के लिए तैयार होने लगा। चोटी बनवा कर गुरू के सामने पहुंच गया, बोले - गुरुजी क्या अच्छी नहीं लगी। गुरु को ही दिलबर जानता है। इस के लिए मैं पानी भी भरुंगा, ऐसे मेरी पहली उमर व्यर्थ गई। अब रास्ता मिला है। भगवान बुद्ध के शिष्य से बिंबसार की मुलाकात हुई। भिक्षु से उम्र पूछी, बोला- मेरी उम्र ६ साल है। बिंबसार ने बोला 60-70 से ऊपर उम्र लग रही है। इसके पीछे क्या राज़ है? सिर्फ ६ साल पहले ही बुद्ध की शरण मिली। अभी ही तो कद्र हुई उम्र की, अपने को जान पाया, बाकी उम्र तो व्यर्थ गई। शरीर भले बड़ा लगता है इस उम्र में यह रास्ता मिला है। गुड से मिलने से पहले भी बुल्ले शाह खोजी थे सत्य के। किताबें पढ़ ली पर इल्म की खुशबू नहीं आई। आकांक्षाओं और विचारों के बंधन कम हो जाएं, मन की दौड़ कम हो जाए। Desireless हो जाऊं। संकल्प न टूटे देख जीवन का चक्र, लगता मृत्यु है चक्र। मन में कभी-2 शमशानी वैराग हो जाता है, फिर मन मार्ग नहीं बताता। राग हटे, द्वेष छूटे, प्रेम बने जीवन का आधार।

पत्र 5 - जब मोह की दलदल से निकले गा

जब मोह की दलदल से निकलेगा तभी तो जो पढ़ा जो सुना उस पर चल सकेगा। धन्य वे लोग जो अपने संगीतमय जीवन को जी पाते हैं। जिसे ये उपलब्धि होती है। तुम्हें सब ओर प्रेम ही प्रेम अनुभव करते हुए अपने जीवन का आनंद लेना है। जो अंतरमुखता तू खो चुका है उसे प्राप्त हो जाएगा। अपने मालिक अपने विराट रूप को प्राप्त हो जाएगा। तो ज़िंदगी आनंद से झूम जाएगी। इस राह पर तुझे करना यही है आनंद प्राप्त करने के लिए अंतरमुखता को प्राप्त करना है।

सांसारिक जीवन में जीते हुए कई Tension आएंगे पर ये ज्ञान तुम्हें उनसे ख़ाली करेगा। अपने अंदर ज्ञान का दीप जलाकर रखना। अपनी वृत्तियों को सम्भालते हुए कोई बाहर कदम उठाना है। सारी प्रकृति तुम्हारी सेवा में आ जाती है जो भीतर से जागृत होते हो। जब तुम जागते हो तो तेरा अस्तित्व जागता है और तुझे आनंद प्राप्त होता है। प्रसन्नता मुदिता मैत्री करुणा को प्राप्त हो जाता है। ये ही मानव जीवन की देन है।

तुम संसार को जितना भी दे दो तो अपने को जानो, क्या तुम उन्हें जीने की कला दे रहे हो। यह संसार नश्वर है। माया में हर जगह आग है। इस आग से बचने के लिए अपने को सत्संग की शीतलता में रखो। अपने केंद्र पर पहुंचना है तनिक मात्र खंडित न होना। बिखरी शक्तियों को एकत्रित करो। अपने स्वभाव को भूल ना जाना। लगातार स्वयं को देखना है। जाग्रति में आ जाओ। अपने को देखते रहो। केवल देखते रहो

मन को देखते रहो। तुम कहीं मन को लगाने में, control करने में लगे रहते हो। अब केवल देखते रहो, कुछ करो नहीं। साक्षी भाव में रहो।

मेरी वाणी से शरीर से कष्ट ना पहुंचे। प्रेम समान कोई तप नहीं। धर्म वो ही है जो आचरण में लगाए, शक्ति पहुंचाए। मंदिर या सत्संग में आकर भी अगर मन में शांति ना आए तो बेकार है जाना। निष्काम का अर्थ है अगले को पता भी ना चले कि मेरे ऊपर किसने उपकार किया। सभी के प्रति करुणा का भाव रहे। जियो और जीने दो। हम दे ना सकें तो भी, लें तो नहीं। प्रेम समान कोई दान नहीं। कोई मित्र नहीं। प्रेम करने से शांति मिलेगी। प्रेम वो वरदान है जिससे तुम्हारी कोई कामना नहीं बचे। तुम अजर अमर हो जाते हो। जीवन सेवामय बन जाएगा। अहिंसा का अर्थ है अपने विचारों से, अपने एक्शन से भी किसी को नाराज़ ना करो। यही तुम्हारा परम पद है।

जिसने मूर्ति पूजा का खंडन किया, लोग उसकी भी मूर्ति बना लेते हैं। कुछ भी ब्रह्मज्ञानी कहता है, द्वेत का खंडन करता है, तुम फिर भी वही कर्म करते हो। जो वो देना चाहता है, तुम लेते नहीं हो। हाथ जोड़ना, पैर छूना, पुरानी परंपराओं को मानते रहते हो। सत्य नहीं जानते हो।

मैं मेरे की भाषा हमे संसार से जोड़ती है। जब उससे पार हो जाओगे तो कण-कण में जो समाया है, उस चेतन को जान पाओगे। मन बुद्धि की भाषा है। संसार से छूटने के लिए भगवान ने कहा है - हे अर्जुन तू मन बुद्धि मुझे अर्पण कर दे। केवल मैं ही मैं हूं। पूरी सृष्टि मेरे से ही ओत प्रोत है। उसे भूल कर माया जाल में अटक गए और अपने निज रूप को नहीं जाना। अहमता, ममता, कर्ता तीन रोग समता योग से ही जायेंगे। समभाव वाला ही सब द्वन्द जोड़ो से छूटता है। पावन स्वरूप में आ

जाओ। मन तन प्राण सर्व के हित में लगा दो। सब कर्मों को धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आजा।

कंवर की मां सतरामदास संत की कथा में प्यार से पानी पिलाती थी। साईं की कृपा से उसकी झोली में संत कंवर राम का जन्म हुआ। वो प्रभू को रिझाने के लिए संगत में नृत्य करते और कहते कैसे प्रभू मैं तुझे रिझाऊं। तू ही मेरा छप्पर, तू ही छाया, गाते गाते अनजाने में रिझा लेते थे। कुछ ही दिनो में उस महापुरुष को सत्य तक पहुंचा दिया। जिससे वृति उत्पन्न होती है, वहां पहुंचना ही मेरी शरण है, जो धर्मान्तरण करने आए हैं, वह सबके हृदय को पवित्र कर देते हैं। माम् एकम् शरणम्। मीरा साधु, शबरी साधु हो गई। साधु से कोई बुरा काम नहीं होता है। जो मीठी बातें कहकर अपने सत्य से हटा दे, उसका संग कुसंग है।

गंगा, जमुना और सरस्वती। लोग कहते हैं सरस्वती कहीं लुप्त है। लेकिन संतों के मुख से जो वाणी प्रवाहित होती है वही संतों के मुख से प्रवाहित होती है।

I Know; I Know Nothing (सुकरात) अग्नि चकमक में छिपी रहती है ऐसे ही तुम्हारे अंदर छिपी हुई शक्ति है। कस्तूरी स्वयं हिरन के अंदर, वो बाहर ढूंढता।

पत्र ७ - प्रे म गली अति सां करी

प्रेम गली अति सांकरी जा मे दो ना समाए। साहस करके जो हिमालय की ऊंचाई तक जाएगा, उसे सौंदर्य का दर्शन होगा। हरेक चीज़ पुस्तकों में नहीं मिलेगी। हमें कन्हैया चाहिए, गुरु चाहिए, गुरु से नहीं चाहिए। ब्रह्म जिज्ञासा ही ब्रह्म से मिलाती है। केवल बुद्धि द्वारा हर चीज़ नहीं मिलती। अपना स्वरूप जब तक भूलें हैं तो दरिद्रता है। दुबारा गर्भ में नहीं आना है, उल्टा नहीं लटकना है, आवागमन से मुक्ति हो जाए। गर्भवास ही नर्क वास है।

मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती इसलिए आज ही मुक्ति प्राप्त करनी है। संध्या समय हर रोज़ सोचो एक दिन जीवन का कम हो गया। मनुष्य देही मिली उसके साथ मृत्यु की Ticket मिल गई। Green Signal हो गया अब तो यात्रा हो रही है। यह कब समाप्त हो जाए यह पता नहीं है। यमराज एक क्षण भी अधिक नहीं करेगा। यहां की बात वहां नहीं चलनी। रिश्वत और माया का खेल वहां नहीं चलता। भक्ति करे पाताल में...। अपने इश्क का पता सब को ना चले। तुम्हारे प्रेम की कद्र गुरु कर सकता है, संसार वाले नहीं करेंगे। यह गोपनीय क्या चीज़ है। भक्त, भगवान और भक्ति की बात तीसरे को पता नहीं लगनी चाहिए। अपने राम को दुनिया की नज़रों से बच के प्यार करो। अपना जीवन पूरी तरह समर्पित कर दो। प्रदर्शन नहीं करना है ये जीवन ईश्वर की धरोहर है, समर्पित हो गए तो क्या चाहिए, ये जीवन ही यज्ञ है। संयम नियम से ही चलना है। अपना जीवन अभिषेक कर दो। सबसे ऊपर आत्मनिवेदन है। जीवन का सदुपयोग केवल गुरु को समर्पित रहे।

हर समय अपने सतगुरु को साथ समझो तो गलती नहीं होगी। आंख खोल के देखो कि ये सत्य जो दिखाई दे रहा है; ये सब मेरा ही स्वरूप हैं; रूप अलग 2 है पर वास्तव में सब मैं ही बना हूं, यही ईश्वर का विराट रूप है। यही अनुभव हर समय होता रहे। जड़ चेतन सब मै बना हूं। मन ही सुख का कारण है और मन ही दुख का कारण है।

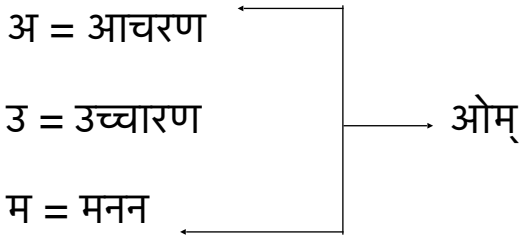

आचरण द्वारा ही सारी दुनिया जानती है। संकल्पमय सृष्टि है। यदि संकल्प से मूंगफली खा रहे हो तो काजू व बादाम क्यों नहीं खाते। आलस्य और निद्रा हमारी गति के speed breaker हैं। इन्हें कभी अपना सहयोगी नहीं बनाओ। जीवन देने का ही नाम है। सब कुछ देते देते अंत में अपने अहम भी दे डाले।

Your own self

Pramila

पत्र 7 - भाग्यशाली वो है जो जीवन में

भाग्यशाली वो है जो जीवन में U (यू) Turn लेता है, सजगता आ जाती है। अपनी शरण में ले लो राम कर ले कबूल कदमों में। कोई दुराचारी भी यदि मुझे भजता है एकाग्र मन से ध्यान करता है तो उसे भी अपना बना लेता हूं। पिता प्रेम से अपने गले लगा लेता है। हमारी हर आवश्यकता पूरी करता है। भाग्यशाली हैं वह जिनके अंदर प्रेरणा जगती है लौटने की।

मैं अब अपनी तलाश में
मेरा भी और मुकाम नहीं।

मैं क्या चाहता हूं, मेरी क्या आवश्यकता है, तेरे सिवाय कुछ ना चाहूं।

(अष्टावक्र ने कहा) - वो क्या बताऐं ये राज़े उलफत इन्हें तो अपना पता नहीं है।

(राजा जनक ने कहा) - सजदा नहीं है मुझको, तुम मेरे सजदे की लाज रखना

ये सर तेरे चरणों से पहले,
ये सर तेरे द्वारे से पहले
ये सर तेरी आस्था से पहले
किसी के आगे झुका नहीं है।
अष्टावक्र ये क्या बतायेंगे राज़ ए उल्फ़त,

ये क्या बताएंगे राज़ उसका जिन्हें खुद अपना पता नहीं है।

अपने भीतर की रोशनी में उतर कर उसे जानो तो उसका सर आसमान तक उठ जाता है। मन के साथ भागना नहीं तुम्हें जागना है। मन भय शोक में डूबा हुआ भागता है, उसे जान लो। अपने होश को जगा देना। इस महान संदेश को आत्म सात् कर लेना। एक पीने वाला, एक पिलाने वाला तो पीने में कंजूसी ना करना। अपने अस्तित्व को गुम कर दो, पुनः गौरवमय जागी हुई ज़िंदगी मिलती है। सारे दुनिया के वैभव के द्वार तुम्हारे लिए खुलेंगे। मंदिर में सत्संग में आकर भी दायें बायें देखते हैं। पर अपने भीतर कभी देखा नहीं, अपने को जाना नहीं।

मैं प्यार नू सजदा करदी हां
मेरा यार जिया सोणा होर नहीं होणा।

परमात्मा से सुंदर और कोई नहीं है। जिसको उसने स्पर्श कर दिया वो अलौकिक हो जाता है। वो चाहे ज़मीन को फलक कर दे, आदमी को ज़र्रा और ज़र्रे को फलक कर दे। वो आंख बंद करे, 14 भवन तैयार हो जाते हैं। उससे शक्तिमान कौन हो सकता है। उसको छोड़ कर और आधार नहीं हो सकता। उसे भुलाकर अपना गर्व दिखाएं, उससे मूर्ख कोई न होगा। पूरा संसार पूरा मनुष्य का जीवन एक बुलबुले से अधिक नहीं। जल की भीत पवन का खम्बा, रक्त और बूंद का गारा, ये ही तेरा अस्तित्व है। शरीर की दृष्टि से देखो तुम केवल एक बूंद हो। एक बूंद के गर्व से सागर भी छोटा हो जाता है। हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे ये अभिमान है। सबके अभिमान से राग और द्वेष पैदा हो जाता है। मुझसे पूछोगे क्या समझते हो अपने आप को।

हूं मैं इतना खामोश कि मुझे खबर नहीं है, मैं कहां हूं। या तो सब कुछ हूं या कुछ भी नहीं। सभी की प्रतिपालना करता हूं। हम जो हैं, जहां हैं, हम वहां हैं। जहां उसने बिठाया है। मुझे कुछ तुमसे लेना हो तो मैं परेशान होऊं। मुझे ना तुम्हारा मान चाहिए ना, अपमान चाहिए। इतने बेहोश अनाड़ी ना बनो। ऐसे हैं, जो तुम्हारी चाकरी करेंगे, उसके आगे बिछ जाने पर शर्म नहीं। पर संसार के आगे नहीं झुकते। खुद परमात्मा संत होता है, उसके मुख से सत्य भी बोलता है। पुराण कहते कहणी रहणी सहणी। संत के पास बैठो तो हर बात के लिए तैयार रहो। डांट सह सकें। प्यार लेकर अभिमानी ना बने। नानक नदरी नदर निहाल। तेरे गुण तो कोई नहीं। उसको मौज आई तो नज़र से निहाल कर दे। तुम जैसे बैठते हो, बताता है मन कैसा है। पाण्डवों और कौरव का युद्ध तय हो गया। दोनों कुरुक्षेत्र में पहुंचे। उस समय सबसे बड़ी सेना कृष्ण के पास थी। दोनों ही उसके पास सहायता लेने पहुंचे। दुर्योधन सिरहाने की ओर और कृष्ण के चरणों की ओर अर्जुन बैठे और केवल कृष्ण को ही मांगा। दुर्योधन उसे नहीं जानते थे तो सेना मांगी। और जहां कृष्ण थे उन्होंने उसे जिता दिया।

बस जीवन भर कृष्ण रूप सतगुरु की शरण में ही रहें। इससे ऊंचा और कोई भाग्य नहीं। सब कुछ पाया है तेरी रहमत से। तू ही मेरे रोम में समाया रहे, इससे अधिक कोई अभिलाषा नहीं। जो फूल प्रभू के चरणों में झुक गया, बिछ गया, उसकी ख़ुशबू तो दुनिया लेगी। पर कोई भी उसे अपना नहीं बना पाएगा। यही नम्रता व प्यार का नज़राना गुरु से मिलता है, जिसे सदैव अपने अंतस में सजो के रखें। जो पल इस प्यार में बीते वो अनमोल रतन बन गए और अब किसी रत्न की आवश्यकता नहीं। ये सर हमेशा झुका रहेगा, अब तो दिल की यही रज़ा है। हज़ार

शुकराने हैं गुरु के, जिसने जीना सिखा दिया है। अब तो हर पल आनंदमय बीतता है। कोई दुःख का तिनका भी आंख में नहीं पड़ेगा। तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना, जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूं। मैं आ तो गया हूं तेरे दर पर लेकिन इसी दर पर आने के काबिल नहीं था। तुम्हीं ने काबिल बनाया। तुम्हीं से मेरा राजपाट, सब रहमतें हैं। नेहमतें हैं। तुम्हारे कारण ही आज ये जीवन है। इसमें प्राण हैं, जो तुम्हीं ने डाले हैं। अब तो लगता है सब कुछ कैसे Dissolve होता जा रहा है। मैं जान भी नहीं पाया कि इतने मज़लूम, अज्ञान, अहंकार के पर्दे को कैसे तूने हटाया है और अपने जैसे मुझे बनाया है। कितनी कृपायें हैं सतगुरु की, एक दो जीभा लख होवे, लख होए लख बीस, तो भी तुम्हारे गुणगान के लिए कम है। क्या करुं गुरु देव की भेंटा न वस्तु दिखे तीन लोकन में।

ब्रह्म आनंद समान ना होये कभी, धन माणिक़ लाख करोड़ दिया। सब कुछ तुम्हारा दिया ही है। बस ये ना भूले।

पत्र 8 - आप किसी से सितार छीन सकते हैं

आप किसी से सितार छीन सकते हैं उसकी कला नहीं छीन सकते। अपनी कलाओं को विकसित करें। सत्य के जिज्ञासु को सदैव अपना लक्ष्य ही याद रखना चाहिए। बीच की बाधाओं को पार करते जाएं। शब्द और दृश्य से ऊंचे उठें। मैं करता हूं का भाव छोड़कर जो भी कर्म होंगे वह भक्ति हो जाएगी। भक्त और भगवान के हृदय का तार एक रहता है। कठोरता को नम्रता से जीतना है। मन वचन कर्म द्वारा किसी को भी कष्ट न पहुंचे। एक शब्द को 32 बार सोचकर फिर बोलना चाहिए। सभी में भगवत् भाव से सम दृष्टि से देखना हमारा धर्म है।

जोब गोलो तीन जोब चौड़

ग़ुलाम न तागा तुहिंजा नाम लिखजो बाहूतियन में

मस्त फकीरों में नाम लिखा जाएगा। अपना आनंद किसी भी क़ीमत में गंवाना नहीं चाहिए। सत चित आनंद मेरा स्वरूप है हर समय मुस्कराते रहने से कोई भी हालत असर नहीं करती। एक दिन ब्रह्मज्ञानी के साथ रहना 100 वर्षों के जीवन से बेहतर है।

“आपस कहु कर कुछ ना जनावे,

सो पंडित फिर जून ना पावे।”

किसी ने मेरी सेवा स्वीकार की उसके ही करोड़ शुकराने हैं। ईश्वर की शक्ति से ही यह शरीर कार्य करता है। ज्ञान, भक्ति और कर्म, तीनों का समन्वय है तभी सफलता मिलती है। अपने दुख सुख की कहानी केवल गुरु को ही कहनी चाहिए। बाकी सब इसकी कद्र नहीं करते।

गलती को दोहराना ही बड़ी गलती हो जाती है। गलती ना मानना मूर्खता हो जाती है। अपनी जीवन को सुगंधमय बनाएं, इसकी खुशबू दूर 2 तक फैलती है। सारी दुनिया हमारे लिए शिक्षा का शास्त्र है। दत्तात्रेय ने 24 गुरु किये, सभी से कुछ ना कुछ सीखा। सृष्टि की सैर करें बाकी अटकें नहीं। सुबह से रात तक निराकार साकार के शुकराने में डूबे रहें। लाखों, करोड़ों, अरबों में से मुझे भगवान ने चुना है अपने कार्य के लिए तो मुझसे अधिक भाग्यशाली और कौन होगा? घरवालों के भी अनंत शुकराने हैं जिन्होंने इस राह के लिए खुशी से निर्बंधन किया। सभी के लिए आदर का भाव रहे। जड़-चेतन के दिल का आशीर्वाद ही आगे बढ़ाएगा।

हर परिस्थिति हमें आगे बढ़ाने के लिए आती है। सभी से सीखते चलें सीखने की खिड़की हमेशा खुली रखनी चाहिए। “तन मन धन वारुं पर गुरु को ना बिसारुं। वैष्णव जन तो तेने कहिए, जो पीर पराई जाणे रे”। “पर दुख: उपकार करे तो ये मन अभिमान ना आए रे”। चित निर्मल, मन शांत, और अंदर का निश्चय किसी परिस्थिति में नहीं हिलना चाहिए। जो चल पड़ा सो पहुंच गया। जन्म मां-बाप ने दिया पर जीना गुरु ने सिखाया। मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार अधिक होता है। मन में ख्याल को ठहरने नहीं दें, नहीं तो हमारा मालिक बन जाएगा। मन जीते जग जीत। कभी कोई मेरा चेहरा उदास ना देखे। मूड Off माना Life off. ज्ञानी के चेहरे पर सदैव प्रफुल्लता रहती है। Free और Fresh होकर रहता है। सभी के साथ मृदु व्यवहार रहे। जल्दी खफा न हो जाएं। अपने स्वभाव को भाव से वश करें। अपने शरीर के भी मास्टर बनें क्योंकि इस शरीर रूपी रथ से ही कार्य भी होंगें। फिर तन में स्फूर्ति रहेगी तो मन भी स्फूर्ति में रहेगा। हर हालत थोड़े समय के लिए आती

है, फिर चली जाती है। किसी हालत का रूप ना बन जाएं। ये भी नहीं रहेगा। दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें। सतगुरु सिख की हलत पलत् सवारे। गुरु झिणके तो मीठा लागे। टहल में टिंड दो रहे। टहल महल ताको मिले जापे संत कृपाल। पूर्व जनम के कर्मो से ही सतगुरु से मिलन हुआ है। अब यह वक्त हाथों से ना निकल जाए। जीवन मुक्ति का आनंद लें।

परीक्षित को तो मरने के बाद मुक्ति मिली। राजा जनक राज्य में भी निरासक्त रहा और शुकदेव को उस से ज्ञान लेना पड़ा। गुरु ने दक्षिणा में निरुपयोगी चीज़ मांगी जो देह अध्यास निकला उसी को अर्पण करना है। जो सबसे बड़ा और पुराना रोग है। हो मैं दीर्घ रोग है पर दारु भी उस माहि। कृपा करे जो आपणी तो गुरु का शब्द कमाय।

बड़े भाग्य जब हरि सतगुरु बन जीवन में मिल गया। मेरे लिए ही निराकार से साकार होकर आया है। हम उसके लिए वो हमारे लिए है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। “श्याम बिन राधा अधूरी, राधा बिन श्याम”। प्रेम की महिमा सभी वेदों ने गायी है क्योंकि प्रेम बिना अभिमान न जाता। प्रेम के बंधन में बंध कर संसार के मोह बंधन से छूटते हैं। राम रस को सुनना नहीं, पीना है। इस आनंद का वर्णन वाणी नहीं कर सकती। चखा जिसने वही जानें। जो सिर रखता हथेली पर वो गाता जंग के गाने।कहें किस से सुनायें क्या, चखा जिसने वही जाने कहत कबीर गूंगे की सेना, जिन जानी तिन मानी। गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी अपनी अंतर मुखता में ही आनंद है। बाहर क्या हो रहा है, कैसा हो रहा है। कौन क्या कर रहा है, इसमें हमारा प्रयोजन नहीं है केवल एक ‘मैं’ ही तो हूं। ना मैं तन ही रहा, ना मैं मन ही रहा, सतगुरु मिलने से झगड़ा ख़त्म

हो गया मन के सब झगड़े राग द्वेष द्वैत ख़त्म हो गए। एक गुरु का ही एक छत्र राज्य रह जाए तो हर पल के जीवन का आनंद लेंगे। आख़िर भी सब कुछ भुलाने में ही मज़ा है। हर दिन की सूर्य किरण आशा का संदेशा लाती है। आशावादी जीवन जहां भय, शोक, मोह का स्थान भी नहीं है। हर रूप में हर रंग में वो मुझसे मिला है। ना मैं तुझसे जुदा ना तू मुझसे जुदा तू और नहीं मैं और नहीं। अभेद अव्यभिचारी भक्ति योग से हे अर्जुन मैं मिलता हूं। ज्ञान रूपी तप, क्षमा, सहनशीलता मौन का आनंद लेते रहें। गुरु के पद चिन्हों पर चलें। वैसी ही मेरी जीवन बन जाए। रोज़ कसौटी पर अपने को कस के देखें कि बाकी क्या खोट है। वैसे आत्मा में तो कोई खोट या कमी नहीं है। पर जो आवरण आया है तो उसे तो हटाना है। जगत रूपी दर्पण में सभी में प्रभू का दर्शन करना है। अभी मीरा सीता जैसी परीक्षाएं नहीं आयीं हैं ध्रुव प्रहलाद जैसी कठिनाईयां नहीं आयीं हैं। सहज ही सहज में सब मिलता जा रहा है। तो क्यों ना अपने पर नाज़ करें। तेरे जैसा ना हुआ ना होगा। अपने पर ही आशिक हो जायें। वो खुद आशिक़ वो खुद माशूक़ सदा भरपूर रहते हैं। आशिक़ होकर और पर अब रोना क्या। आशिक़ों की सच्ची नमाज़ है देह भुलाना। जब तक जानता हूं मैं बंदगी कर रहा हूं तो ये बंदगी नहीं। जब मैं की गंदगी चली जाए तो बंदगी उसे पसंद है। मैं और मेरा खत्म हो जाए। तू ही तू रह जाए।

Your own self

Pramila

पत्र १ - समत्व योग, सम बु द्धि, सम दृष्टि

समत्व योग सम बुद्धि सम दृष्टि में रहें यही समाधी है। अनुकूलता प्रतिकूलता में सम रहना ही साधना है। कष्ट जितने भी आएं, तुम्हें सहनशील बनना है। हर अवतारों को कष्ट मिले। उन्होंने अपने को ऐसा बनाया कि हमें सहनशील होना है, देह अध्यास से छूटते जाएं। जो अनुकूल प्रतिकूल में सम रहते थे तो देवता से भी तुम्हारे ऊपर फूलों की वर्षा हो जाएगी। राग द्वेष की प्रबलता दुख का कारण बनती है। समाधानता सभी के प्रश्नों के स्वालों के समाधान कर सके। अपना स्वाध्याय हो जाएगा तो शास्त्र ग्रंथ पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ज्ञान तप समत्व स्वाध्याय योग धारण करोगे तो महावीर हो जाओगे। निर्भयता से जियो। जिसकी प्रज्ञा जागृत हो गई उसे कुछ अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। डर बड़े में बड़ा विकार है। ग्रहस्थ में ही सन्यासी होकर रहें। महावीर घर में रहते हुए जब घर में भी साधक की तरह रहे तो उन्हें घर वालों ने छोड़ दिया कि तुम सारी सृष्टि को यह संदेश देने के लिए बनाया गया है। जीवन का संयम त्याग उपभोग नहीं उपयोग हो जाए। असंयम असंतुलन कर देता है। अहिंसा की चेतना प्रगट हो जाए। मन, वाणी, शरीर किसी के द्वारा भी किसी का अहित ना करें। प्यार नम्रता हमारे जीवन से झलकने लगे। असफलता से हार के अपनी राह से बेमुख ना हो जायें। अपना जीवन सर्व के हित में दे दें मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

जीवन इक संग्राम है जोगी संकट से क्या डरना
भव सागर में लहर बिछी हैं हंस-हंस पार उतरना।

ये सब दुख के पल जाएंगे एक दिन टल।

ओ रात के भूले हुए मुसाफ़िर सुबह हुई घर चल।

संशय संदेह या शक जीवन में पहले मुसाफ़िर की तरह आते हैं और फिर किराए दार बन जाते हैं और अंत में मालिक बन बैठते हैं। मन को मालिक नहीं बनने दो। मन जीते जग जीत। अपनी कृपा की अंत तक आवश्यकता है। सावधानी हटी दुर्घटना घटी।

पत्र 10 - शुद्ध स्वरूप मम प्रिय

शुद्ध स्वरूप, मम प्रिय।

आप सभी प्रेमी सदैव आनंद मौज मस्ती में रहो। अपने प्यारे स्वरूप को ना भूलो। जिसके लिए जीवन मिला है उसी में लगा दो। कर्मशील होकर रहो। तुम्हारे जीवन की सुगन्ध चारों ओर फैलती जाएगी। स्वयं ही आनंद में रहो। सभी को आनंद बांटो फिर बाहर खोज बंद हो जाएगी। अपने स्वरूप की ओर आओ तो हर मुसीबत से छुटकारा मिल जाएगा। निष्पक्ष होकर रहो। तुम्हारी Natural Energy में आ जाओ। देखते रहो कहीं खो ना जाओ। क्रिया को कर्म का रूप ना दें। जाग जाओ, मन बुद्धि से परे मैं दृष्टा साक्षी ब्रह्म स्वरूप हूं। मेरा सत्त चित आनंद रूप कोई कोई जाने रे। मन बुद्धि का साक्षी हूं। मन का स्वभाव मांगना है पर मेरा देना है। Actor नहीं Director हूं मैं। तुम अपने को अनुभव करो हर समय अपने अनंत स्वरूप को जानेगा। स्वस्थ का अर्थ है स्व में स्थित। प्रेम पूर्वक रहना।

समाधि का अर्थ समभाव समदृष्टि। चित्त वृत्ति का विरोध करते चलो। अनुभवी पुरुषों ने प्रसाद रूप यह ज्ञान हमें दिया है जो हम सबके लिए उपयुक्त है और तुम कर सकते हो। अभ्यास से असंभव को संभव कर सकते हैं। Practice makes the man perfect. पुरुषार्थ तेरा देव ही है परिश्रम से ही प्राप्ति होती है दूसरे महान हैं ये तो ठीक है पर तुम्हारे अंदर भी वह शक्ति है। विवेकानंद शंकराचार्य आदि ने खूब श्रम किया और उसे प्राप्त किया। तेरे अंदर ये सब शक्तियां हैं। पोथी को खोल तुम गुरु-गुरु करते हो पर अपनी शक्तियों को जगाओ तो तुम भी

उसी के रूप हो जाते हो। थोड़ी पीड़ा सहन नहीं करेंगे और सत्य पाना चाहते हैं। प्रह्लाद ध्रुव मीरा आदि ने कष्ट सहे। तुम्हारी तरह सुख बुद्धि नहीं रखी। तुम्हारा अपना आनंद कोई परिस्थिति ना छीन सके। आकाश अपने स्वरूप में स्थित है बाकी बादल बरसात सब आते जाते रहते हैं। तू सत्त स्वरूप है। तेरी शांति ना हटने पाए। दत्तात्रेय के पास आनंद की पूंजी Bank Balance था। आंतरिक शक्ति थी।

संतोष की गेहूं की रोटी खाओ। लड्डू पेड़ा खाने से ताकतवर नहीं बनोगे। मन की शक्ति को जानो। धर्माचरण में रहो। सुगंध से खाने की भावना जागी या कपड़े किसी के देखने से मैं भी ऐसे पहनूँ ऐसा नहीं पर जब भूख लगे तब भोजन की चाह हो। संशय बुद्धि गुरु में मत रखो।

जिज्ञासा का अर्थ है Desire for Knowledge. गुरु पर संदेह मत करो। तुम दुनिया भर की News रखते हो उससे क्या फायदा। Public का अर्थ है आग के बीच रहना। लेने वाले का नाम लिया, देने वाले का नहीं लेते। एक को चाय नाश्ते की व्यवस्था नहीं हो पाई और अखबार में निंदा छपवा देते हैं।

सत्यवादी के जीवन पर आरोप भी लगते हैं पर भयभीत नहीं होना। कोई कहेगा ये संत 5 लाख लेता है। संत ने कहा लेते हैं बोलो दिया किसने है। तुम क्या कीमत कर सकते हो गुरु की। ज्ञान भक्ति कर्म की हम खेती करते हैं तो साथ-साथ कूड़ा कचरा की खेती भी करते हैं। गेहूं के साथ कूड़ा कचरा भी आता है।

गुरु से लौकिक बातें नहीं करना। ज्ञान के संबंधित प्रश्न करने चाहिए। प्रश्न करना बुद्धि का झुकाव है। दूसरा अंतःकरण की शुद्धि।

मन चित्त बुद्धि अहंकार इन्हें शुद्ध करना है। जब तुमने अपने को जान लिया है तो मन चाहा खाना-पीना करते हैं। नमन करना शरीर का झुकाव है।

बिना साधन साधना संभव नहीं है। साधना बिना साध्य नहीं मिलेगा। देह से नहीं नमन वचनों पर ज़रूरी है। अपने को निरहंकार बनाओ। उसका संयम जीवन में ज़रूरी है। अपने जीवन का घोड़ा सधा हुआ होना चाहिए। मन बुद्धि ब्रह्मरूप हो जाएं। बुद्धि जगत के पदार्थों की ओर न दौड़े। स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर आ जाओ। सुख बुद्धि नहीं हो। दादा ने अपने सुख स्वार्थों की गठरी को उठाकर समुद्र में फेंक दिया अपने व अपने वालों के लिए नहीं जीआ। मैं मेरा ही बंधन का कारण है। मैं ही तो हूं यह औषधि है। ना मैं तन ही रहा, ना मैं मन ही रहा, सतगुरु मिलने से झगड़ा ख़त्म हो गया। क्या तेरा क्या मेरा। बुद्धि प्रभू में समा जाए तो सांसारिक पदार्थों से हट जाएगा। चित्त की चित्तवना अर्थात बीते हुए या आने वाले विचारों का चिंतन ख़त्म हो जाए। चित्त चैतन्य में लीन हो जाए और मैं का अभाव हो जाए। मै मुआ तो खुद खुदा हुआ। खुदी के बदले खुदा को पा जाओ। अहंकार ओंकार में विलीन हो जाए। ओहम सोहम अहम ब्रह्म तो जीव भाव का नाश हो जाता है। ओम् का अर्थ:-

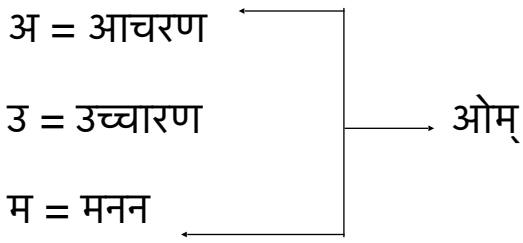

आचरण से ही व्यक्तित्व का पता चलता है।

प्यार ही श्यामा कृष्ण मुरारी,

प्यार ही ज्योत धाम अवतारी।
प्यार ही परमेश्वर की भक्ति,
प्यार ही निर्मल जीवन शक्ति।।

संसार में यदि कमी है तो केवल प्रेम की। सच्चा प्यार किसी में दोष नहीं देखता। प्यार देता रहे। प्यार की हरेक को ज़रूरत है। राधा की आंखों प्रेम के आंसू भरे रहते हैं। राधा से पूछा राधा तुम सिर्फ़ तुम मुझे बताओ तुम कृष्ण की प्यारी कैसे बन गई? सब गोपियों से आगे कैसे निकल गई? राधा ने कहा मैं तो कुछ नहीं यह तो सब कृष्ण का एहसान है, कृपा है। मैंने अपने को तीन बातों में बांधा है जिस कारण कृष्ण मेरा आशिक़ हुआ।

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे लागा हरि फिरे, कहत कबीर कबीर।।

राधा ने भी कहा कि मैंने पहली बात यह समझी कि कृष्ण हमेशा सही है और मैं हमेशा ग़लत हूं। कई बार मुझे सन्देह आता था कि गोपियां मेरे बारे में क्या क्या कहती रहती है तो कभी विचार आता था कि यह सही नहीं बताती कृष्ण इनकी बातों में आ जाते हैं। फिर मैंने उन्हें समझा कि भले ही कृष्ण उनकी सुनता है, वो इनके बहकावे में नहीं आता है। श्री कृष्ण का फ़ैसला मेरा फ़ैसला है। कृष्ण की इच्छा में मैं अपनी इच्छा मिला दूं। दूसरी बात जिससे मैंने बांधा कि मेरा कृष्ण पर कोई अधिकार नहीं है। जो कुछ वो हमें देते हैं वो हमारा रत्न है। मैं कोई Claim नहीं करती हूं ये सब उसकी कृपा है मैं कुछ Deserve नहीं करती हूं।

तीसरा मैं कुछ भी नहीं हूं कृष्ण ही सब कुछ है। मैं तो गांव की सीधी साधी लड़की हूं। मुझे कृष्ण ने चुना है। जब यह सजगता आती है तो हम निर्मल हो जाते हैं। राधा का दूसरा नाम है निर्मलता।

एक और बात राधा से पूछी कि भगवान ने तुम्हें इतनी अच्छी दुनिया की सैर कराई फिर तुम्हें उसने छोड़ दिया तो तुम्हें बुरा नहीं लगा? उसने बोला तुम भी बताओ कि पहले तो गुरू ने भी तुम्हें बहुत प्यार किया बहुत सैर कराई खिलाया पिलाया। मुझे आश्चर्य हुआ कि ये राधा कैसे जानती है बोली गुरू ने पहले इस सुंदर लोक की झलक दिखाई प्रेम रस चखाया फिर अब तुम उस आनंद रस को छोड़ नहीं सकते हो ये रस ही तुम्हारा जीवन हो गया है।

मोहे हरि रस लागा मीठा रे,
पीवत ही ये जग भूला रे
हरी रस अमर अचल अविनाशी
और सकल रस फीका रे मोहे...

इस रस के लिए अब तुम्हें पुरुषार्थ करना है।

उसने तो लिफ़्ट में चढ़ाया फिर अब सीढ़ी चढ़कर तुम्हें भी ऊपर पहुंचना है। मैं तेरा दर्शन करना चाहता हूं। तुम इस मूर्ति के अंदर शक्ति रूप हो और मैं उसका दर्शन करना चाहता हूं। तड़पते थे, रोते थे एक दिन तो उन्होंने कटार लगाई कि दर्शन देती हो या नहीं और उसी समय एक अदृश्य हाथ ने मुझे पकड़ लिया और मुझे उस शक्ति का अनुभव हुआ। फिर उसी शक्ति रूप में रहने का पुरुषार्थ किया। और उसे प्राप्त किया फिर तो वो बैठे बैठे समाधिष्ट हो जाते थे नाचने गाने लगते थे।

उन्हें अपने भीतर ही उस शक्ति का दर्शन हुआ और जीवन ही अमृतमय हो गया। और उस प्रेम के नतीजे से विवेकानंद जैसा अनमोल रत्न तैयार हुआ जिसने देश विदेश तक अपने गुरु का संदेश पहुंचाया। एक कर्मठ जीवन बनाया। जो विद्या विवेकानंद को प्राप्त हुई और जो आनंद व प्रेम का रस उसने चखा उसे पूरे विश्व में फैलाने के लिए निकल पड़ा। उसका तो केवल एक संकल्प ही था, पूरी प्रकृति उसकी सहायक हो गई। America तक उसने अपने इस संदेश को पहुंचाया। अपनी सब डिग्रियां, सांसारिक रिश्ते संबंध इस प्रेम पर कुर्बान कर दिए। ना दिन देखा ना रात चलते रहे। अपना सिंह नाद करते हुए भारत की रोती हुई स्त्री को जागृत किया उनके आंसू पोंछे और आज पूरे देश में उनका यह नाद गूंजा अपने गुरु की मेहनत को सफल किया। झूठे शरीर के भौतिक सुख त्याग दिए डिग्रियां पानी में बहा दीं अविवाहित जीवन रहते अपने भीतर की शक्तियों को जागृत किया और हर एक को बताया कि ये शक्तियां तुम्हारे भीतर ही हैं। सुषुप्त अवस्था में है। जीवन थोड़ा है काम अधिक है। संत समागम बहुत दुर्लभ है। राम कृपा बिन सुलभ ना सोई। जिन पर अति कृपा हो जाती है उन्ही को सत्य मिलता है। लोग बाहर के सुखों को भगवान की कृपा समझते हैं पर अति कृपा है तभी सत्संग मिला है सच्चा गुरु मिला। यह जीवन प्रभू के हवाले कर दो। अपना जीवन नष्ट ना करें। माया तो आनी जानी है, उसके सुख भी अनित्य हैं। इसलिए उनमे ना फंसकर नित्य सुख की प्राप्ति हो जाए यही लक्ष्य है।

Your own self Pramila

पत्र ।। - प्रे म गली अति सां करी

प्रेम गली अति सांकरी जा मे दो ना समाय। साहस करके जो हिमालय की ऊंचाई तक जाएगा उसे सौंदर्य का दर्शन होगा। हरेक चीज़ पुस्तकों में नहीं मिलेगी हमे कन्हैया चाहिए गुरु चाहिए गुरु से नहीं चाहिए। ब्रह्म जिज्ञासा ही ब्रह्म से मिलाती है केवल बुद्धि द्वारा हर चीज़ नहीं मिलती। अपना स्वरूप जब तक भूले हैं तो दरिद्री हैं। दुबारा गर्भ में नहीं आना है उल्टा नहीं लटकना है आवागमन से मुक्ति हो जाए। गर्भवास ही नर्क वास है।

मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती इसलिए आज ही मुक्ति प्राप्त करनी है संध्या समय हर रोज़ सोचो एक दिन जीवन का कम हो गया मनुष्य देही मिली उसके साथ मृत्यु की ticket मिल गई Green Signal हो गया अब तो यात्रा हो रही है यह कब समाप्त हो जाए यह पता नहीं है। यमराज एक क्षण भी अधिक नहीं करेगा यहां की बात वहां नहीं चलनी रिश्वत और माया का खेल वहां नहीं चलता। भक्ति करे पाताल में। अपने इश्क का पता सब को ना चले। तुम्हारे प्रेम का मूल्य गुरु कर सकता है। संसार वाले नहीं करेंगे, यह गोपनीय चीज़ है। भक्त भगवान और भक्ति की बात तीसरे को पता नहीं लगनी चाहिए। अपने राम को दुनिया की नज़रों से बच के प्यार करो।

भय शोक में डूबा हुआ मन भागता है उसे जान लो अपने होश को जगा देना। इस महान संदेश को आत्म सात कर लेना। एक पीने वाला एक पिलाने वाला तो पीने में कंजूसी ना करना। अपने अस्तित्त्व को गुम कर दो पुनः गौरव मय जागी हुई ज़िंदगी मिलती है सारे दुनिया के वैभव

के द्वार तुम्हारे लिए खुलेंगे। मंदिर में सत्संग में आकर भी दायें-बायें देखते हैं। पर अपने भीतर कभी देखा नहीं। अपने को जाना नहीं।

मैं प्यार नू सजदा करदी।
मेरे यार जिया सोहणा होर नहीं होणा।

परमात्मा से सुंदर और कोई नहीं है जिसको उसने स्पर्श कर दिया वह आलौकिक हो जाता है। वो चाहे ज़मीन को फलक कर दे आदमी को ज़र्रा और ज़र्रे को फलक कर दे। वो आंख बंद करे चौदह भवन तैयार हो जाते हैं। उससे शक्तिमान कौन हो सकता है। उसको छोड़कर और आधार नहीं हो सकता। उसे भूल कर अपना गर्व दिखाये उससे मूर्ख और कोई नहीं हो सकता। पूरा संसार पूरे मनुष्य का जीवन एक बुलबुले से अधिक नहीं है।

जल की भीत पवन का खम्बा रक्त और बूंद का गारा ये ही तेरा अस्तित्व है शरीर को इस दृष्टि से देखो तुम केवल बूंद हैं एक बूंद के गर्व से सागर भी छोटा हो जाता है। हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे ये अभिमान है सबके अभिमान से राग और द्वेष पैदा हो जाता है। मुझसे पूछोगे क्या समझते हो अपने आप को।

हूं मैं इतना ख़ामोश कि मुझे ख़बर नहीं कि मैं कहां हूं। या तो सब कुछ हूं या तो कुछ नहीं हूं सभी की प्रीतपालना करता हूं। हम जो हैं जहां हैं हम वहां हैं जहां उसने बिठाया है। मुझे कुछ तुझसे लेना हो तो मैं परेशान होऊं। ना तुम्हारा मान ना तुम्हारा अपमान चाहिए। इतने बेहोश अनाड़ी ना बनो। ऐसे हैं जो तुम्हारी चाकरी करेंगे।

उसके आगे बिछ जाने में शर्म नहीं। पर संसार के आगे नहीं झुकते। खुद परमात्मा संत होता है। उसके मुख से सत्य भी बोलता है। पुराण कहते कहनी रहनी सहनी। संत के पास बैठो तो हर बात के लिए तैयार रहो। डांट सह सकें। प्यार लेकर अभिमानी ना बनें। नानक नदरी नदर निहाल। तेरे गुन तो कोई नहीं। उसको मौज आई तो नज़र से निहाल कर देगा। तुम जैसे बैठते हो तो पता लगता है कि मन कैसा है। पांडवों और कौरवों का युद्ध तय हो गया। दोनों कुरुक्षेत्र में पहुंचे। उस समय सबसे बड़ी सेना कृष्ण के पास थी।

दोनों ही उनके पास सहायता लेने पहुंचे। दुर्योधन सिरहाने की और कृष्ण के चरणों की ओर अर्जुन बैठा। केवल कृष्ण को ही मांगा, दुर्योधन उसे नहीं जानता था तो सेना मांगी। और जहां कृष्ण थे उन्होंने उसे जिता दिया।

पत्र 12 - लड़ का लड़ लड़ के Property

लड़का- लड़ लड़ के Property ले लेगा। लड़की- लड़ाई (की) कुंजी। अर्धांगिनी- मांग का सिन्दूर लाल रंग वाला दो भाग घर के करने आती है। दूसरे की जड़ कटे ना कटे तेरी जड़ काटेगी। क्रोध, मान, हृदय जहां स्त्री आती है माया हृदय में आती है जाने पर धड़कन। धरती पृथ्वी स्त्री लिंग ही है। ज़र जोरु ज़मीन तीन कारण झगड़े के बन जाते हैं। इन्हीं तीनों में मनुष्य को आसक्ति होती है। आसक्ति रहित ममता रहित Unattached Disinterested होकर रहें। माया से Detached होकर रहें। संग दोष ही मनुष्य को अपने शीतल आनंद स्वरूप से अलग करता है। अग्नि का साथ पाकर पानी गर्म हो जाता है। अलग होने पर स्वत: शीतल हो जाता है। तुम भी अपने स्वभाव में आ जाओ। किसी प्रभाव अर्थात् पर+भाव में नहीं आना है। आंख, कान, मुख मूंद के नाम निरंजन लें। छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ना नहीं है। कोई भी हालत सदैव के लिए नहीं रहती है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो कुछ भी हो रहा है साक्षी भाव में देखते चलो। मन, बुद्धि, अहंकार, अविद्या सब तुमसे अलग है। नाम रूप एक दिन मिटने वाला है उसमे क्या अटकना। मनुष्य लाया कुछ नहीं पर जाते समय आसक्ति फंसा कर जाता है। गुरु हमें जीवन मुक्ति का आनंद लेना सिखाता है। माया के सब सुख क्षणिक हैं अतृप्ति पैदा करते हैं। परंतु अपने स्वरूप में आने से पूर्ण तृप्ति आ जाती है। सर्व दुखों की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति है। मनुष्य का उद्देश्य है अपने को हल्का करके रखो। संग्रह की प्रवृती उलझा देती है। अपनी आवश्यकता कम करने पर संतोष धन की प्राप्ति होती है निर-अहंकार होकर चलो। सतगुरु सिख की हलत पलत संवारे।

रहणी करणी (कैसे कर्म निष्काम भाव से हो।) रहणी का अर्थ है कैसे असंग होकर सबसे प्यार करते चलो। बहणी- बैठना गुरु के पास कैसे नम्रता भाव से रहें। सहणी यानि इस राह पर चलने में समाज से कोई कष्ट भी मिले तो भी खुशी से सहन करें। गुरु भी कभी कठोरता से कुछ कहे तो शांति पूर्वक सहन करें। उसमें अवश्य मेरी भलाई छिपी हुई होगी। अपने को रोज़-रोज़ मिटाते जाएं। मरने ते ही पाईए पूर्ण परमानंद। Die Before You Die. आप गवाइए तां शाहु पाईए और कैसी चतुराई। चतुराई से चतुर्भुज नहीं पा सकते। सब कुछ निराकार के हुकुम से ही हो रहा है। इसीलिए हर हालत हमें ऊंचा उठाने के लिए ही आती है। इसीलिए अब उनकी रज़ा में राज़ी होकर चलें। सबके लिए ढेर सारा प्यार ही प्यार।

Your own self

Pramila

पत्र 13 - मान को छोड़ दो

मान को छोड़ दो सम्मान मिलेगा। गुण धारण करने से ही पवित्र हो सकते हैं। बारिश हुई है तभी सड़कें गीली हैं - प्रेम की वर्षा हृदय में हुई है तभी जीवन में नम्रता दिखाई देती है। गुरु के दर पर सभी समान है। अपने साथ Excuse Bag रखकर नहीं चलना चाहिए। सत्य की राह पर लोग कई बार बहाने बनाते हैं पर इस कार्य के लिए तत्पर रहना चाहिए। आलस्य इस राह पर सबसे बड़ा दुर्गुण है। प्रशंसा के खोटे सिक्के से मनुष्य को खरीदा जा सकता है। मुस्कुराहट के पानी से ही गालियों की गंदगी साफ होती है। क्षमा भगवान से नहीं अपने आप से मांगनी है। चंदन के लेप से पशु मानव नहीं हो जाएगा। चिंतन में चेतना हो। हृदय कोमल मन में मृदुता। तभी कोई महान हो सकता है। जिनका जीवन निर्मल है पूरा जीवन गुरु के लिए समर्पित हो गये उनके द्वारा अनायास कहे शब्द भी पूरे हो जाते हैं। सभी का प्यार से हाल चाल पूछ कर उनके अभाव को दूर कर दें। सभी प्रसन्न होकर जायें प्रेम से सभी की बात सुनें। प्रेम से ही प्रेम की प्राप्ति होती है। दोनों हाथ से ही ताली बजती है। प्रेम की तार एक ही है। तभी मीरा इकतारा लेकर चलती है। मन पूरा ही सतगुरु को समर्पित है। तो कभी भी कहीं धोखा नहीं होता। गुरु के कठोर वचन से भी प्यार है। संसार के प्यार में भी घात है और गुरु की मार में भी प्यार है। सुअर कीड़े आदि को कीचड़ ही प्यारा है।

बाहर के सुख साधन नहीं अंदर की उमंग से ही बड़े से बड़े कार्य होते हैं। समभाव समदृष्टि ही समाधि है। दुख का कारण राग और द्वेष है। हमारा चित्त चंचल है तो संसार है और चित्त स्थिर है शांत मौन है तो

आनंद है। उसका संसार में कोई शत्रु नहीं है। मन साचा, मुख साचा होए, अवर न पेखे ऐकस बिन कोय, नानक ऐ लक्षण ब्रह्मज्ञानी होए।

चित्त को भक्ति गुरु प्रेम में लगा दो। मन को मोड़ने में ही पूरा आनंद है। सभी हदों को छोड़कर बेहद की सैर करो। अपने को भूल जाओ कि तुम कुछ हो। तुम अनंत हो जाओगे। चित्त परमात्मा में डूब जाएगा तो तुम खुद परमात्मा हो जाओगे। जल को जैसे प्रयोग करते हैं वैसा हो जाता है। दूध में डालो तो दूध, लस्सी में लस्सी हो जाता है। मन को जहां लगाते हैं उसका रूप हो जाता है। अपना अस्तित्व गुम कर दो। ना मैं ना मेरा। तो योग क्षेम का भी ध्यान नहीं रहेगा। संसार मुझे क्या समझता है यह ना सोचकर अपने निश्चय को जानो कि मैं कौन हूं। क्या हूं। अपने आप की value स्वयं करें। जो भूलें आज दिन तक हुईं वह कल से दोबारा ना हों। मैं जहां भी हूं प्रभू तुझमें हूं समर्पित हूं। तो फिर शब्द कहां बातें कहां मौन में ही पूरा दर्शन हो जाता है। अंदर ही मैखाना है बाहर में कुछ है नहीं। शब्द और दृश्य से ऊंचा उठते जाएं। जो कल था वो आज नहीं और जो आज है वह कल नहीं रहेगा। मस्ती का बादशाह बन जाओ।

“मैखाने में बैठे हैं तेरी दीद को तरसते हैं”

यह प्यास बाहर न जाए भीतर से ही पीते रहें। अपनी गहराइयों में भीतर उतरते जायें जहां कोई बाहरी बातों का प्रभाव अंदर नहीं जाता।

माहौल है फूलों से पत्थर से बरसते हैं
पत्थर भी फूल हैं और काटें भी धूल हैं

“दीवानों की नगरी में दीवानों के दरबार में ही स्यार भी रहते हैं”। बड़े-बड़े अभिमानी भी रहते है बड़े बुद्धिमान तार्किक लोग भी रहते है यहां होशियारी का क्या काम। शास्त्र तोते की तरह रट लेते हैं वो लोगों को रिझाने में लगे हैं सतगुरु को रिझाने में नहीं लगते हैं।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाए

ज्ञानी को किसी से एलर्जी नहीं है। सर्वेश्वर से प्रीति करके मुक्त हो जायें। जीवन तुम्हारे लेखे। ना मैं हूं ना मेरा है। कामिनी कंचन कीर्ति से परे रहें। अब इस तन मन धन पर पूरा गुरु का ही अधिकार है। यह जीवन रूपी पुष्प जो प्रभू के आगे चढ़ चुका है, जिसकी खुशबू तो दुनिया को मिलेगी पर इसे कोई अपना नहीं बनाएगा।

Your own self Pramila

पत्र।५ - ईश्वर और उस में श्रद्धा

सभी प्रेमी बरेली वासी सदैव आनंद में रहो। ईश्वर और उस में श्रद्धा सदैव बढ़ती रहे। प्रेम गली अति सांकरी जा मे दो ना समाये। हिमालय देखने गए थे गली सांकरी थी तब बोले साहस करके ऊपर जो आता है वो हिमालय का सौंदर्य देखता है श्रद्धा तो है पर अगर साहस नहीं है तो यहां नहीं चल सकता। केवल बौद्धिक कसरत से कुछ नहीं होगा। तुम अपना स्वरूप जो भूल गये हो जब तक उसे ना प्राप्त किया,उसका ज्ञान नहीं हुआ तब तक आनंद नहीं है। गर्भ वास ही नर्कवास है। इसके बाद मुझे किसी की बेटी बेटा नहीं बनना है। आज ही प्राप्ति करनी है। संध्या समय एक बार रोज़ ये कहो आज का एक दिन और गया। मनुष्य देही मिली माना टिकट मिलेगी और सामान बहुत लाए हो Green Signal हो गया और Train चल पड़ी है अब कब TC बिना Ticket उतार दे पता नहीं चलेगा। यहां तो T.C पैसा लेकर टिकट बना देगा पर वहां की Train में नहीं चलेगा। यमराज एक sec भी नहीं बढ़ाएगा। मृत्यु तो होनी ही है। उससे पहले अपने काम उतार दें। भजन पर्दे के अंदर होना चाहिए। प्रभू की भक्ति का प्रदर्शन न करो। ये नहीं समझेंगे दुनिया वाले। वो तुम्हारे आंसुओं की कीमत नहीं करेंगे। ईश्वर के प्रेम के आंसू तुम्हारे अंतः करण को स्वच्छ कर देंगे। पागल होना है तो प्रभू प्रेम में पागल हो जाओ। बाहरी कर्मों से मन की शांति नहीं मिलेगी। यह जीवन अब प्रभू को समर्पित हो गया। मेरा अब कुछ नहीं है फिर तो काल भी नहीं ले जाए। ज्ञान यज्ञ जीवन में हो जाए। मेरा जीवन ही नहीं तो अब उसके लिए मैं क्या चिंता करुं। बालक की तरह सतगुरु को समर्पित हो जायें। जीवन सतगुरु की प्रसन्नता के लिए है। मैं सो रहा हूं तो प्रभू के

साथ सो रहा हूं। हर कार्य के मध्य में सतगुरु को रखो। तो तुमसे कोई पाप नहीं होगा मुख से अपशब्द नहीं लगेंगे मूर्ख भी कर्म करता है श्रृंगार भी करता है। प्रेमी का सब प्रभू के लिए होता है ना मैं हूं ना मेरा है फिर चिंता किस बात की हर कार्य अपने समय से होगा अपने को ढीला छोड़ दें। मुझे कुछ नहीं करना। सब हुकुम से हो रहा है और होगा कबीर ने भी कहा मैं क्यों चिंता करुं, मम चिंते क्या होए, मेरी चिंता हरि करे, मुझे न चिंता कोए।

चिंता तो चिता समान है जो जीते जी जलाती है। कुछ सोचना तुम्हारा धर्म नहीं है अपनी भक्ति में मस्त रहो यही हमारा लक्ष्य है। गुरु जैसी जीवन मेरी बन जाए। ये तन मन प्राण उसी की अमानत है उसी को दे दें। संसार से आज दिन तक सुख न मिला ना मिल सकता है। सब मृग तृष्णा की तरह हैं। प्यास नहीं बुझेगी जब जल ही नहीं। जिसके लिए जीवन मिला है उसी के लिए इसे अर्पण कर दे। जीवन निर्वाह के जो कर्म हो रहे वह सहज भाव से होते रहें पर मेरा लक्ष्य है जो है मुझे वही करना है। ज्ञानी चतुर है वह अपना काम उतार के बैठा है। भगवान से कुछ नहीं चाहिए सिर्फ भगवान ही मिल जाए। जीवन का हर क्षण उसके अनुकूल ही बीते। भाग्यशाली हैं जो कलयुग में सतयुग की प्राप्ति हुई है। परमात्मा के राज्य में पूरा इंसाफ हो रहा है। पिछले कर्मों के फल व भोगों से यह शरीर नहीं छूट सकता। इसी जन्म में सब कर्म समाप्त हो जायें। भगवान का सखा सुदामा उसे भी कर्म फल मिला। बचपन के चने चुराए हुओं के कारण उन्हें ये भी दरिद्रता मिली। जब भोग पूरे हुए तो प्रभू ने दो लोक अधिकार दे दिया। एक एक sec कभी निराशा को मन में नहीं रहने दो। Negative Thinking अंदर से दीमक की तरह खोखला कर देती है। गुरु कृपा से ही सजगता मिलती है। इतना जीवन

तो गुम करके आए हैं बाकी का जीवन प्रभू के लेखे कर दें। हमारे और सब कार्य तो कोई भी कर देगा पर ये कार्य हर एक को स्वयं करना है। पिछले जीवन के लिए भी पश्चाताप हो कि कैसे गए। बस अब तो लौट के आगे बढ़ें। जो बीत गया भूल जा उसको अब तू सोच विचार सत्य वचन से सतगुरु तेरा करेगा बेड़ा पार।

माया जाल से छूटना है। खुदी गवां के खुद में आना है।

लौट मुसाफिर अब तो लौट
काल चक्र की लग रही चोट।

आज ही माया से यू (u turn) ले लो। God is with me मैं अकेला नहीं हूं मुझे कोई प्रार्थना नहीं करनी कि भगवान ऐसा या वैसा कर दो। मांगन मरन समान है परमात्मा से भी नहीं मांगना। मेरा प्रभू मुझसे अधिक होशियार है। जिसमे मेरी भलाई होगी वही देगा। इसीलिए उसकी रज़ा पर छोड़ दिया आबाद करे बर्बाद करे उनका था उनको सौंप दिया दिल दे के तकाज़ा कौन करे। आ लौट के आजा मेरे मीत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं।

Your own self Pramila

पत्र 15 - भाग्यशाली वो हैं जो जीवन

भाग्यशाली वो है जो जीवन में U (यू) Turn लेता है सजगता आ जाती है। अपनी शरण में ले लो राम कर ले कबूल कदमों में। कोई दुराचारी भी यदि मुझे भजता है एकाग्र मन से ध्यान करता है तो उसे अपना बना लेता है पिता प्रेम से अपने गले से लगा लेता है। हमारी हर आवश्यकता पूरी करता है। भाग्यशाली है वह जिनके अंदर प्रेरणा जागती है लौटने की।

मैं अब अपनी तलाश में

मेरा की और मुकाम नहीं

मैं क्या चाहता हूं मेरी क्या आवश्यकता है तेरे सिवाय कुछ ना चाहूं।

(अष्टावक्र ने कहा) वो क्या बताये ये राज़े उल्फत इन्हें तो अपना पता नहीं है

(राजा जनक ने कहा) शकूर सजदा नही है मुझको तुम मेरे सजदों की लाज रखना ये सर तेरे चरणों से पहले ये सर तेरे द्वारे से पहले ये सर तेरे आस्था से पहले किसी के आगे झुका नही है

(अष्टावक्र) ये क्या बतायेंगे राज़े उल्फत ये क्या बतायेंगे राज़े उसका जिन्हें खुद अपना पता नहीं है

अपने भीतर की रौशनी में उतर कर उसे जाने तो उसका सर आसमान तक उठ जाता है। मन के साथ भागना नही तुम्हें जागना है। मन भय

शोक में डूबा हुआ मन भागता है। उसे जान लो अपने होश को जगा देना। इस महान संदेश को आत्म सात कर लेना

एक पीने वाला एक पिलाने वाला तो पीने में कंजूसी न करना अपने अस्तित्व को गुम कर दो पुनः गौरव मय जागी हुई ज़िंदगी मिलती है

सारे दुनियां के वैभव के द्वार तुम्हारे लिये खुलेगा। मंदिर में सत्संग में आकर भी दांय बांय देखते हैं पर अपने भीतर कभी देखा नहीं अपने को जाना नहीं।

मैं प्यार नू सजदा कर दी मेरे यार जियां सोना होर नही होना

परमात्मा से सुंदर और कोई नहीं है जिसको उसने स्पर्श कर दिया वो आलोकिक हो जाता है। वो चाहे ज़मी को फलक कर दे आदमी को ज़र्रा और ज़र्रे को फलक कर दे। वो आंख बंद करे चौदह भवन तैयार हो जाते है। उससे शक्तिमान कौन हो सकता। उसको छोड़कर और आधार नहीं हो सकता उसे भुला के अपना गर्व दिखाये उससे मूर्ख कोई ना होगा।

पूरा संसार पूरा मनुष्य का जीवन एक बुलबुले से अधिक नही। जल की मीन, पवन का खंबा रक्त और बूंद का गारा ये ही तेरा अस्तित्व है।

शरीर को इस दृष्टि से देखो तुम केवल एक बूंद है।

एक बूंद के गर्व से सागर भी छोटा हो जाता है। हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे ये अभिमान है सब के अभिमान से राग और द्वेष पैदा हो जाता है। मुझसे पूछोगे क्या समझते हो अपने आप को।

हूं मैं इतना खामोश कि मुझे खबर नही मैं कहां हूं।

या तो सब कुछ हूं या तो कुछ नही हूं। सभी की प्रतिपालना करता हूं।

हम जो हैं जहां है हम वहां है जहां उसने बिठाया है। मुझे कुछ तुमसे लेना हो तो मैं परेशान होयूं ना तुम्हारा मान ना अपमान चाहिये। इतने बेहोश अनाड़ी न बनो ऐसे हैं जो तुम्हारी चाकरी करेंगे उसके आगे बिछ जाने में शर्म नही पर संसार के आगे नही झुकते खुद परमात्मा संत होता है उसके मुख से सत्य भी बोलता है। पुराना कहनी बहनी रहनी सहनी। संत के पास बैठो तो हर बात के लिये तैयार रहो डांट सह सके। प्यार लेकर अभिमानी न बने। नानक नदरी नदर निहाल। तेरे गुण तो कोई नही। उसको मौज आई नज़र से निहाल कर दे। तुम जैसे बैठते हो वो बताता है मन कैसा है। पांडवो और कौरवों का युद्ध तय हो गया दोनो कुरूक्षेत्र में पहुंचे। उस समय सबसे बड़ी सेना कृष्ण के पास थी दोनो ही उनके पास सहायता लेने पहुंचे दुर्योधन सिरहाने की ओर कृष्ण के चरणों की ओर अर्जुन बैठे और केवल कृष्ण को ही मांगा दुर्योधन उसे नहीं जानते थे तो सेना मांगी। और जहां कृष्ण थे उन्होंने उसे जिता दिया।

बस जीवन भर कृष्ण रूप सतगुरु शरण में ही रहे इससे ऊंचा और कोई भाग्य नही सब कुछ पाया है तेरी रहमत से तू ही मेरे रोम में समाया रहे। इससे अधिक कोई और अभिलाषा नही। जो फूल प्रभू के चरणो में झुक गया बिछ गया उसकी ख़ुशबू तो दुनिया लेगी पर कोई भी उसे अपना नहीं बना सकेगा यही नम्रता व प्यार का नज़राना गुरु से मिलता है जिसे सदैव अपने अंतस में सजो के रखें। जो पल इस प्यार में बीते वे अनमोल रत्न बन गये अब और किसी भी रत्न की आवश्यकता नही है। ये सर हमेशा झुका रहेगा अब तो दिल की यही रज़ा है। हज़ार शुकराने

हैं गुरु के जिसने जीना सिखा दिया है। अब तो हर पल आनन्दमय बीतता है कोई दुख का तिनका भी आंख में नही पड़ेगा। तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना कि मैं वो उठाने के काबिल नहीं हूं। मैं आ तो गया हूं तेरे दर पे लेकिन इस दर पर आने के काबिल नही था तुम्हीं ने काबिल बनाया तुमसे ही मेरा राजपाट सब नैमतें हैं। तुम्हारे कारण ही आज ये जीवन है। इसमें प्राण है जो तुम्ही ने डाले हैं अब तो लगता है सब कुछ कैसे Dissolve होता जा रहा है जो मैं जान भी ना पाया कि इतने मज़बूत अज्ञान अहंकार के पर्दों को कैसे तूने हटाया है और अपने जैसा मुझे बनाया। कितनी कृपाए हैं सतगुरु की इक दो जीवाह लख होवें लख होए लख बीस तो भी तुम्हारे गुणगान के लिये कम है। क्या करुं गुरुदेव की भेंट न वस्तु दिखे तीन लोकन में ब्रह्म आनन्द समान न होय कभी धन माणिक लाख क़रोड़ दिया सब कुछ तुम्हारा दिया ही है। बस ये ना भूले।

Your own self Pramila

पत्र १७ - निष्काम, भक्ति और प्रेम

निष्काम भक्ति और प्रेम की महानता है। सभी को बचपन से ही यह संस्कार डालने चाहिए। जो बचपन से ही अगरबत्ती जलाते हैं वह सिगरट के नशे में नहीं जाएंगे। जिसके हाथों में प्रभू को अर्पण करने का प्रेम जल होगा वह कभी शराब का प्याला नहीं पकड़ेंगे। एक बार कानों से ईश्वर का सत्संग सुनो तो कान कभी संसार की बातें नहीं सुनेंगे। अपने मन इंद्रियों को प्रभू भक्ति में लगा दो तो तन मन प्राण उसी को समर्पित हो जाएं। दोनों जहां के मालिक की भक्ति करने का हक़ इस मनुष्य को ही मिला है। मनुष्य देही सब देह से उत्तम है इसी में विवेक और विचार है और इसी द्वारा ही सब सत्य को प्राप्त कर सकते हैं। भाग्यशाली हैं जो गुरु से मिलन हुआ है। जीवन में change आ गई। नया जन्म हो गया अब पुराना जीवन भुला दो। तुम कहते हो तन मन धन तेरा परंतु इस पर क़ब्ज़ा मेरा दुनिया कहती है कब जा रहा है। सब तेरा तेरा कहेगा तो वफ़ादारी से जीना किसी चीज़ का दावा न करना मस्त मतवाले मालिक होकर जियोगे। कोई बुरा नहीं है पर तेरी उल्टी धारा प्रभू तक नहीं पहुंचा सकती। अंदर पकड़े रहते हो ऊपर से कहते हो सब तेरा। जिसने अपना सब कुछ प्रभू को दे दिया उसे किस बात की चिंता है। God is with me. तुम कभी अकेले नहीं हो। Brilliant future हो गया जब गुरू मिला। प्रारब्ध पर पूरा पूरा भरोसा रखो। कभी भी तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा। Impartial justice of God. इन्साफ़ का मंदिर है ये भगवान का घर है। प्रभू ही एक आधार है अब और किसी आधार की आवश्यकता नहीं है। साधना के लिए ज्ञान का आधार चाहिए। साधना की सीढ़ी का आधार है वैराग्य। ये बात हमें समझनी है

कि हम ज्ञान की राह पर चलना चाहते हैं तो उसके आधार की ज़रूरत है। वो आधार तुम्हारे पास सतगुरु है। गुरु मेरे संग सदा है नाल। सतगुरु की कृपा से ही इस ज्ञान की प्राप्ति है। ज्ञान भक्ति और कर्म का समन्वय ज़रूरी है। हृदय प्रभू में और शरीर इन्द्रियों से कार्य हो रहा है। मैं करने वाला नहीं है। केवल सुनने से कुछ न होगा पर आचरण में आ जाए। सत्यमेव जयते। उसे जानो अनुभव करो। Your experience is the only teacher. गुरु हमें अपना अनुभव सुनाकर हमें भी अनुभवी बनाना चाहता है। सतगुरु को करुणा है कि तुम भी मेरे जैसे हो जाओ। केवल खाने पीने कमाने के लिए नहीं है। पर जीवन का अनुभव अवश्य होना चाहिए। सांसारिक विद्या भले ना हो पर अध्यात्मिक विद्या ही सब विद्याओं से उत्तम है। कबीर आदि सब अनपढ़ थे पर उनका साहित्य इतना ऊंचा था कि आज भी कोई इस तत्व को जान नहीं पाते हैं। सांसारिक विद्या दुनियादारी का कुछ पता नहीं है पर एक ही चीज़ की समझ है जो दुनिया के पास नहीं है। इसलिए संतों के पीछे सारी दुनिया चलती है। प्रेम की भाषा सभी समझ सकते हैं। स्वार्थी लोग तुम्हें नहीं पहचान सकते क्योंकि उनके पास परमेश्वर का प्रेम नहीं उदारता नहीं निष्कामता नहीं। एक निष्कामी का प्रेम सभी के साथ एक सा ही होता है। Love all alike. बुद्धि उस तत्त्व तक नहीं पहुंचाती है। जो माया के विषय में जानते हैं वह इस सत्य को नहीं जान पाते। एक कारख़ाने की मशीन ख़राब हो गई। कोई इंजीनियर ठीक नहीं कर पाया था। एक बाहर का इंजीनियर आया एक स्क्रू Tight किया और मशीनरी ठीक हो गई 9900 जानने के 100 रुपय स्क्रू Tight करने के लिए।

सत्य के बारे में सुना, एक चला और एक चल के वहां पहुंचा। जिसे इस ज्ञान की समझ नहीं है वो दो पैर का जानवर हैं। वहां पूंछ यहां मूंछ है। चार पैर के पशु देखे हैं जिनके अंदर अज्ञान है वो भी पशु समान ही है क्योंकि वो पाश से बंधा है। सभी को रस्सी से बांध कर रखते हैं। मां भी कहते हो लेकिन बांधते भी हैं। पांच ज्ञान इन्द्रियां और पांच कर्म इन्द्रियां भी हैं। ये दस द्वार इस शरीर में लगे हुए हैं। इनका संयम भी ज़रूरी है नहीं तो जीवन पशुवत् नहीं बिताओ। जब जाओ संसार से तो तुम्हारे पास ये ज्ञान हो और देवत्व को प्राप्त होकर जाओ धन है सदुपयोग करने के लिए संग्रह के लिए नहीं। खाने का यदि पेट में संग्रह होगा तो बीमारियां आएंगी विचारों का संग्रह करोगे तो Depression हो जाएगा। धन कमाना जुटाना सामर्थ्य हो सकती है, स्वामित्व नहीं हो सकता। तुम धन के स्वामी नहीं हो। त्याग की सामर्थ्य जीवन में आनी चाहिए। 5-50 करोड़ वाला कोई उनका स्वामी नहीं है। पति को पत्नी भी स्वामी कहती है ऐसे ही स्वामी कोई भी हो सकता है। पर जो त्याग कर सकता है वह स्वामी है। पाना और पकड़ना कोई बड़ी बात नहीं है पर अपने जीवन का त्याग भी सर्व के हित्त के लिए हो जाए।

“सभी के लिए ढेर सारा प्यार।”

Your own self Pramila

पत्र 17 - दशरथ के पास शोक था

दशरथ के पास शोक था वे मर गए। गोपियों के अंदर प्रेम था वह जी गई। भगवान की कथा अमृत है अश्रु है आश्रय है आंसू है। सतगुरु के चरणों में बैठकर स्वाध्याय करेगा तभी कुछ कह पाओगे सत्संग हो पाएगा। गुरु कृपा से आशीर्वाद से हृदय की ज्योति जलती है सत्संग की ज्योति से विश्व उजागर है अंदर बाहर उसी से जीवन है। ये जगत किस ज्योति से जगता है बोला सूर्य से चलता है। रात को चंद्रमा व तारे प्रकाश देते हैं पर यदि अमावस्या हो और बादल हों तो फिर किसके प्रकाश में जीयें। हम प्रकाश के उजाले के उपासक हैं पूजक हैं। बोले फिर अग्नि के आश्रय में काम कर सकता है। यदि अग्नि भी न हो तो फिर किस प्रकाश में विकसित किया जाए। फिर आती है शब्द की ज्योति। आवाज़ देने से उस दिशा में जा सकते हैं और शब्द भी कहने वाला हो और सुनने वाला बहरा हो तो फिर स्पर्श ज्योति काम देती है कि ये पेड़ है यह पत्थर है। इस कृम का दर्शन करने से कई व्याख्यायें हैं। सात सोपान सात ज्योतियां हैं। आज कल सब प्रभावित करने में लगे हुए हैं प्रकाशित करने की कोशिश नहीं की गई।

1. बाल कांड
2. अयोध्या कांड
3. अरण्य कांड
4. किष्किन्धा कांड
5. सुंदर कांड
6. लंका कांड

7. उत्तर कांड

1. बाल कांड में कहा सूर्य ज्योति है। बालक के रूप में सूर्य उदय हुआ है। वैसे तो सूर्य अस्ताचल को जाता है पर बाल कांड के एक मात्र श्रवण से प्रकाशित कर सकते हैं।
2. अयोध्या कांड - चंद्र ज्योति। चंद्रमा शीतल- सूर्य मध्यान्ह में तपता भी संध्या को अस्त भी होता है। अयोध्या कांड में प्रेम है और साहित्य में कहा प्रेम रूपी चंद्रमा प्रतिपल बढ़ता है लोग कहते हैं प्रेम की चर्चा तो आसान है पर प्रेम में रहना कठिन है। अग्नि ज्योति का आश्रय अरण्य कांड में शबरी ने दिया। पाश्चात्य जगत को सूर्य की ज्योति कम है। पर यहां सातों ज्योतियां है।
3. अरण्य कांड - अग्नि ज्योति है। अगर अनुकूल ना हो तो किसी सतगुरु की शब्द ज्योति में रहे। सतगुरु को सहोदर जाना है। जिसने शब्द को पचा लिया वह आदमी धन्य हो जाता है। सतगुरु से जो प्रकाशित नहीं होता तो पूरा जीवन तमस में ही जीता है। सतगुरु बैठ वचन विश्वासा। चमत्कार होता है भगवान राम सीता के वियोग में लताओं से पूछते हैं सीता कहां गई। विद्वान ब्रह्मचारी पहली बार सुन रहा हूं। शब्द का अतिक्रमण करके ज्योतियां प्रगटी।
4. किष्किंधा कांड - किष्किंधा कांड में तुलसी ने कराया है। पूरा अस्तित्व बोल रहा है कितना बोला जाए। पूरा अस्तित्व गा रहा है। मैं सुनता हूं हर वक्त तेरी कहानी। हर जगह तेरा ही स्रोत बह रहा है।
5. सुंदर कांड - शब्द ज्योति के बाद सुंदर कांड में स्पर्श ज्योति में जाते हैं। पांचवे कांड का वरदान तेल के व्यापारी के पास लोहे के ड्रम थे

संत से अनुनय करके पारस ले आया और लोहे के ड्रम में डाल दिया। जब सोना ना हुआ संत में संशय हुआ कि झूठा है। 'मुख देखत पाप हरे' लेकिन सोना क्यों नहीं हुआ। संत ने जाकर देखा मैल व जालो में पत्थर फंसा था स्पर्श हुआ ही नहीं तो सोना कैसे हो।

6. लंका कांड - लंका कांड में ज्योतिर लिंग। सब ने देखा जिसके मस्तक से गंगा निकलती है उसको क्या जल चढ़ाएं। बाल काण्ड न समझ आए तो क्या करें चंद्रमा को समझें। और जब सब समझ ना आए तो उत्तर कांड में आत्म ज्योति बताई। आत्म ज्योति सुख की देने वाली है। रामचरित्र मानस के 7 सोपान है। महादेव से तुलसी तक किसी एक ज्योति का चुनाव करो। चंद्रमा की रोशनी में ताजमहल सुंदर दिखाई देता है। मानस की एक ज्योति मिली तो 14 भवन दिख जाते हैं। एक शहंशाह ने बनवा के हंसी ताजमहल सारी दुनिया को मोहब्बत की निशानी दी है। मथुरा के पास होने से वरदान वृंदावन धाम का है। तो प्रेम आगरा में पनप गया। जहां चाय की खेती होती है चाय के बीज से बगीचे बन जाते हैं। केवल अर्थ नहीं है अतिश्योक्ति नहीं है। गुरु कृपा से जो मिला वो नम्रता से पेश करते हैं।

हम सरे राह बैठे है लेकर चिंगारी
जिसका जी चाहे चिराग जलाकर जाए
हम फ़क़ीरों से जो चाहे दुआ ले जाए
फिर खुद जाने हवा कहां ले जाए।

पीना एक बात पचाना दूसरी बात पर फिर संसार के लिए प्रसाद बना लें। वहां तक की यात्रा कराने वाला ये जीवन केवल हरि कृपा ही है। कहीं भी सत्संग होता है अस्तित्व को ही प्रगट होती है। सूर्य से प्रकाश हो रहा है। सूर्य प्रकाश दे नहीं रहा है। प्रेम कोई मांग नहीं है, नहीं तो व्यापार हो जाएगा। भक्त प्रहलाद ने कुछ नहीं मांगा। जब भगवान ने अधिक कहा कि मांगो तो बोले यही वरदान दो कि कभी कुछ नहीं मांगू। प्रभू आपकी शरण हूं हमेशा शरण में रहो। भगवान ने कहा तुम्हारा हाथ जिस पर पड़ेगा उसका कल्याण हो जाएगा। भगवान ने कहा अब क्या चाहिए। बोला जब कुछ नहीं था तो ज़रूरत नहीं थी पर अब वरदान दिया ही है तो अब यह मांग रहा हूं कि ये वर मेरे हाथ को ना दें पर मेरी छाया जिस पर पड़े उसका मुझे पता ना चले। नहीं तो उसका अभिमान आ जाएगा।

पत्र 18 - तुम यहां श्राद्ध करते हो

तुम यहां श्राद्ध करते हो और प्राणी घोड़ा हो गया उसे कैसे मिलेंगे। विधान का महत्व है श्राद्ध में। याद करने के लिए पिता को पहुंचेगा ये भाव है। शुभ संकल्प शुभ आशीर्वाद ही कार्य करता है। Money order गलत ऐड्रेस पर नहीं पहुंचेगी Cellular भागती हुई कार में अमेरिका पहुंचा सकते हैं तो तुम्हारा प्यार संकल्प भी गुरु तक अवश्य पहुंचेगा। मन की भाव की वस्तु की व्यवहार की पवित्रता भूमि की शुद्धि ज्ञान की शक्ति सब तुम्हारे जीवन की पुष्टि करते हैं। जब ज्ञान सुनते हैं तो मन मनाभव होकर सुनो। भोजन खाना एक बात है पचाना और बात है पचाने पर ही यह शरीर को शक्ति देता है इसी तरह ज्ञान को भी पचाना है। पियो रे राम रस है कोई प्यासा। अंदर की प्यास ही परमात्मा तक पहुंचाती है। अक्सर यह महसूस होता है हम कुछ कहना चाहते हैं, कह नहीं पाते भाव आते हैं उन्हें बांध नहीं पाते। जिसके जीवन में थोड़ी सी भी गहराई आएगी तो जानेगे मैं शब्दों से परे हूं शब्द बांध नहीं सकते। जो सोचते हैं वो बता पाते तो जीवन में कोई गहराई ना होती रस ना होता जीवन ना होता जैसे पागल के दिमाग में जो आता है वो बोलता रहता है।

प्रेम अनिवर्चनीय है वर्णन कर नहीं सकते। झुक जाते हैं गले लगाते हैं। भाव को अभिव्यक्त करने की चेष्टायें करते हैं। हज़ार शब्द का प्रयोग एक चेष्टा के बराबर है। हज़ार चेष्टा एक दृष्टि के बराबर है। न वचनों से न चेष्टा न क्रिया कलाप उपचारों से पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकते प्रेम हर वाणी में झलक जाता है। नाटक भी प्रेम का कर

सकते हैं जैसे Cinema में भीतर में भाव उमड़ते नहीं दिखाते हैं। प्रेम अनिर्वचनीय है हजारों शब्द के बराबर चेष्टा का मतलब उसके लिए कार्य कर दो। एक दिल से प्रणाम दो आंसू प्रेम में गिराना वो बोलने से अधिक है। एक क्षण पूर्ण मौन हों दृष्टि डाले मन बिखरे हुए को समेटना मौन हो जाता है। प्रेम कोई भावना नहीं है आरोप नहीं है। जो स्वभाव है उसको बताना बहुत मुश्किल है। प्रेम हो जाता है करना नहीं पड़ता है। प्रेम में स्वतः ही ज्ञान की उत्पत्ति हो जाती है। फकीर के घर में सारी दुनिया के लिए जगह होती है क्योंकि प्रेम है अमीर के महल छोटे पड़ जाते है। आत्मीयता की बात है जहां गधे के लिए भी स्थान है। गरीब की झोपड़ी में सब आ सकते हैं। इंद्रियों का संयम है, नौकर मालिक के वश में होना चाहिये । कर्मचारी के बिना हम नहीं रह सकते वह रह लेते हैं। एक भी चीज़ आपके वश में नहीं है। ज्ञानी का इंद्रियों पर control रहता है।

जो गांधी को जानते नहीं थे गांधी जी train में जा रहे थे उन्हें seat से उठा दिया बाकी जय गांधी जय गांधी कर रहे थे। गांधी के दिल में खरोंच भी नहीं आई अपमान की। तुम भी बिना ज्ञान के भक्ति करते हो तो किसी काम की नहीं है। तुम्हारे बगल में बैठा हुआ व्यक्ति यदि गंदगी कर रहा है तो तुम उस से कुछ कहो नहीं चुपचाप सफाई कर दो। सर्व के हित की भावना होनी चाहिए। कल्याण की भावना हो। जब दूसरे के लिए अहित की भावना आती है। यदि हित नहीं कर सकते तो अहित भी मत करो। परमात्मा की प्रार्थना की भगवान ने दर्शन दिया कहा जितना तुम्हें मिलेगा दुगना पड़ोसी को दुगना मिलेगा। उसने 7 मंजिल का मकान मांगा तो पड़ोसी का 14 मंजिल का मकान बन गया। उसने कहा

मेरी एक आंख निकल जाए तो पड़ोसी की दोनों फूट गईं। दूसरे के दुख में तुम्हें आनंद आता है।

एकनाथ काशी से जल लेकर रामेश्वर में चढ़ाने जा रहा था। मरुस्थल में प्यासा मिला उसे उसने प्यासे गधे के मुख में डाल दिया और सिर झुका दिया। सर्व में पेखे भगवान। 48 दिन भूखे प्यासे रहते थे जो धन बचता था सब के हित में लगा दिया।

शनिदेव ने कहा मैं हर एक के ह्रदय में बैठना चाहता हूं। भगवान ने कहा वहां तो मैं पहले ही बैठा हूं। उसने कहा तुम तो कुछ करते तो नहीं हो। उसने कहा मैं बैठकर उनके कष्ट सह लूंगा तुम सुख भोग लेना।

चिंतन से तेज़ बल बुद्धि बढ़ती है; विकास का रास्ता है; चिंता विनाश का रास्ता है।

शरीर की रीढ़ सबसे महत्वपूर्ण है। अंदर सुषुम्ना नाड़ी है जहां से भौतिक जगत से अध्यात्म की ओर चला जाता है। बाहर से हटकर चेतना अंदर हो जाए। जब भी समय मिले हमारा ध्यान अंदर जाए। सही मार्ग का चुनाव करो। ध्यान का अर्थ है भीतर की ओर जाना। संयम होना चाहिए। Train पटरी पर जाती है तो सुरक्षित पहुंचती है। पटरी से उतरेगी तो सभी डिब्बों को गिराएगी। भटकाव ना हो। Highway पर भी कहीं खड्डे हैं जो मार्ग में अड़चनें हैं। हम भी संयम में रहे तभी मंजिल तक पहुंचेंगे। हाथ का पैर का इंद्रियों का संयम करो। जीभ का संयम करो वाणी का एक-एक शब्द का संयम करो तो भीतर तक पहुंच पायेंगे। अपना समय अपने अभ्यास में लगाएं, इधर-उधर के विचार ना आएं। अपने कदम प्रभू की ओर उठाएं ऐसी जिंदगी जीयेंगे तो मंजिल

तक ज़रूर पहुंचेंगे। ऊंच नीच तो जीवन में आएगी। द्वंदी जोड़े चलते रहेंगे अलग-अलग तौर तरीके से जिंदगी चलेगी। कर्मों का फल मिलेगा ही परमात्मा हमारे अंग संग है। कदम बाहर उठेंगे तो सत्य से दूर होते जायेंगे प्रभू अवश्य मिलेगा। ध्यान प्रभू की ओर ही करना है। सत्ता का अनुभव करना है। दुनिया मां-बाप सब बाहर है प्रभू भीतर है उसके लिए अंतरमुखता में जाना है। 24 घंटे सभी के लिए बराबर हैं गरीब अमीर सबको उतना ही समय है उसे व्यर्थ विचारों में ना गवाएं प्रभू की ओर करें तो मंजिल तक पहुंचेंगे। अगर ध्यान प्रभू की ओर नहीं रखा तो मंजिल नहीं मिलेगी। दुनिया के कार्य शरीर से हो रहे हैं पर ध्यान प्रभू की ओर हो।तुम्हीं को पाना है मिलकर एक हो जाएं। जिंदगी उसी के लिए मिली है। जब तक उनसे मिलकर एक नहीं हुए तो यह जीवन व्यर्थ गई। अपने शरीर व मन को शांत करना है। मन ही मन प्रभू का चिंतन करते रहे। अपने अंदर ज्योत जलाएं। सभी महापुरुषों का यही कहना है। सारी दुनिया पैसे के पीछे जा रही है। ए ज़र्रे तू खुदा तो नहीं है पर तू खुदा से कम भी नहीं है। धन साधन है साध्य नहीं। वाहन है मंजिल नहीं। जूती पैरों में ठीक है। सुख सुविधा चरणों की ओर रहे पर सिर पर बिठाकर दुखी मत होना। जीवन का लक्ष्य इन्हें मत बनाना। बोझ मत बनाओ। धन केवल जीवन व्यतीत के लिए है पर सारी जिंदगी जोड़ तोड़ में ना लगा दो। जीवन का आनंद लेना है। बहुत पैसा इकट्ठे करने वालों के पास तनाव बीमारियां भी अधिक हैं। धन वाद्य यंत्र दे सकता है संगीत नहीं। नौकर मिलेगा सच्ची सेवा नहीं। चापलूस मिल सकते हैं पर सही हितकारी नहीं मिलेंगे। जो चमकती है वह सीप है चांदी नहीं है। जीवन में ऐसे रहो कि आनंद मय है। श्रीमान व श्रीमती समृद्धि से भरे हो जिनमें प्रेम हो सम्मान हो। जो दयालु है प्रेम पूर्ण है वो श्रीमंत है।

पत्र 17 - मे हरवान मे हरवान

"मेहरवान मेहरवान साहिब मेरा मेहरवान
जीव सकल को देवे दान
जिन पैदाइश तू किया
सोई लहसी सार मेहरबान
जिन उपायी मेदनी सोई दे आधार।"

मक्खन शाह ने गुरु के लिए पूछताछ की जब देखा तो 22 गद्दी पर बैठे थे वह समझ नहीं पाए किसको 500 मोहरें दे। उसने दो दो मोहरें सबको दी सब प्रसन्न हुए। परंतु जब तेग बहादुर ने कहा तुमने तो मुझे 500 मोहरें देने का वायदा किया था जब तुम्हारा बेड़ा डूब रहा था अब कम क्यों दिया। मक्खन शाह को आनंद आया और छत पर आवाज दी कि मैं गुरु लधा मैंने गुरु पाया। उसके बाद संसार के 22 गुरुओं ने गोलियां चलाई। गुरु के माथे पर गोली लगी और खून बहने लगा। एक गुरु ने कहा सबको माफी दी। राखे राम तो मारे कौन। फिर उन्होंने सोचा अब रटन का समय आया है। पटना में पत्नी गर्भवती थी पर गुरु सैर करते रहे। पीछे उन्हें पुत्र उत्पन्न हुआ। बचपन से ही वो गौरवशाली था। दूर गांव से लोगों ने आकर भेंट में एक गांव और बगीचा उन्हें भेंट दिया। गोविंद सिंह तब 5 वर्ष का था। ढेकन शाह एक मुसलमान फकीर थे। उन्होंने अपना सर झुकाया उसके शिष्यों ने कहा आपने एक काफिर के आगे सर क्यों झुकाया। वो बोले तुम नहीं जानोगे शिवादत्त नाम का पंडित रहता था वो ध्यान में था तो उस बालक ने कान में कहा

मैं आ गया हूं। वो बोला यह तो मेरा कृष्ण है। इस बालक के पीछे लोग दीवाने होकर घूमते थे। बच्चे कहते थे हमें ये जो कहेगा हम मानेंगे।

नवाब ने कहा हमें सलाम करो। बोला ये सर तो केवल सच्चे बादशाह को ही सलाम करे। गोविंद राय को पिता ने आज्ञा दी पटना से वापस आनंदपुर जाओ। वहां के रहने वाले दीवाने थे।

मत जाओ रे जोगी (मत जाओ) 2 रे जोगी
राम नाम यह सुंदर मेला,
उठ जाग प्यारे जाग सवेरा
यूं गफलत में ना जाए सुंदर वेला
सुनकर सब आना जाना
आया अकेला जाना अकेला
नाम बिना यह जग है बेगाना
मत जाओ रे जोगी (मत जाओ) 3

वृंदावन वालों की भी हालत ऐसी ही थी जब अक्रूर उन्हें ले जा रहे थे। पटना वासी भी ऐसे ही व्याकुल थे। चलते चलते वो एक वृद्ध महिला के पास पहुंचे। खूब बड़ा लंगर लग गया। बालक ने हर तरह की विद्यायें सीखी। कश्मीर के पंडित रोते हुए आए कि उन्हें जनेऊ उतारने के लिए कह रहे हैं। इस्लाम धर्म को स्वीकार करो। गुरु तेग बहादुर ने कहा भारत इस समय कठिनाई से गुज़र रहा है। वह उस समय बोले कि कोई पवित्र सत्पुरुष संत हो जिसका जीवन पवित्र हो। बालक ने कहा वह तो मेरा पिता ही है। गुरु तेग बहादुर ने सोचा यह बालक भगवान ही आज्ञा दे रहा है। उन्होंने बादशाह से पंडितों द्वारा कहलवाया कि यदि तेग

बहादुर जनेयू उतारेंगे तो हम भी उतारेंगे। उन्हें फिर बहुत कष्ट दिए गए। उनका सिर भी काट लिया गया लेकिन उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा। लाल किले में सिर काटा गया और चांदनी चौक में जाकर गिरा। और वहां पर आज भी सीसगंज गुरुद्वारा है। महापुरुषों के त्यागमय जीवन से हज़ारों को प्रेरणा मिलती है और वह भी सत्य की ओर अग्रसर होते हैं त्याग तपस्या का जीवन में बहुत महत्व है।

आप कितने ईमानदार हैं जब सामने आकर्षण आए। व्यंजनों के सामने जीव का संयम हो तब त्याग है। परीक्षण के समय ही त्याग की परीक्षा होती है। नेता बनने से पहले भाषण देते हैं। कुर्सी मिलने के बाद प्रलोभन में फंस जाते हैं। लालच चुंबक का काम करती है। माया बढ़ाते जाओ लोभ में फंस जाएंगे। पैसा बढ़ाते जायें तो काम बन जायेंगे लालच माया का तेज हो गया तो आप फेल हो जाते हैं। जो सारी बातों को हटाकर मंजिल तक पहुंचता है प्रेम और आनंद को प्राप्त होता है। जो जल्दी फिसल गये वह इस मंजिल से दूर हो जाते हैं। अपना लक्ष्य याद रखो। योग्यता और क्षमता को बढ़ाना है। पशु के साथ समस्या है वो थोड़े समय में ही हट जाता है लालच से। पर मनुष्य के दिमाग में दिन रात चिंता घूमती रहती है फिर उसकी नींद खराब हो जाती है और नशे का सहारा लेता है। सुख संवेदन के लिए और दुख के लिए भी प्रकोष्ठ है। कमज़ोर व्यक्ति को शक्ति मिलती है तो वह गलत इस्तेमाल करता है। अपने को ढकने के लिए किसी बड़े व्यक्ति का नाम लेकर अपना पर्दा ढकता है। बातों को मिर्च मसाला लगाकर ना बनाओ। सात्विकता में आ जाओ। कोई कितना बुरा कर रहा है तुम ध्यान मत दो। माली की तरह सबका कूड़ा हटा दो कूड़े पर कूड़ा डाल कर बढ़ाओ मत। भगवान कृष्ण ने मरे हुए काले कुत्ते को देखा। सभी ने नाक बंद कर लिया पर

कृष्ण ने कहा देखो इसके दांत चमक रहे हैं। जहां नफरत जाग रही हो वहां भी ऐसा विचार लाओ जो प्रेम पैदा हो जाए।

जब क्षमता को इस्तेमाल नहीं करते तो आदतें खराब आने लगती हैं। व्यवहार कैसा होगा उसके पीछे तुम्हारा स्वभाव काम करेगा। अपनी छवि संसार के आगे अच्छी बनाओ और अंदर भी अच्छे हो जाओ। अपने स्वरूप को याद करो प्रेममय आनंदमय होने का अभ्यास करो। क्षमाशील दयावान बनते जाओ। ज्ञान की ओर जाते रहो, अज्ञान छूट जाता है।

जो कर रहे हो उसके बारे में होश में रहो। बेहोश मत हो जाओ। गा रहे हैं तो पूरा ध्यान उसमें हो। खा रहे हो तो भी जागरूक होकर रहो उस स्वाद का आनंद लो। गंगा किनारे बैठे हो तो ठंडक महसूस होगी। यदि जागरूक होकर रहोगे तो हर समय आनंद महसूस करोगे। जागरूकता की आवश्यकता है। ज्ञान सुनते समय तन मन एक रस हो जाए। केवल सुनो नहीं सामना करो। कैसे वैराग्य पक्का हो। जो घर में वातावरण नहीं है, यहां मिला है उसका सदुपयोग करो

जब मरने लगोगे और कहो ना मरुं तो भी मर जाओगे। डॉक्टर भी कुछ नहीं कर सकेंगे। प्रतिपल जाग्रत सजग होकर रहो। शरीर के सुखों की ओर दृष्टि ना रखो। ऋषिकेश में भी जाकर जलेबी खा रहे हैं बाजार में घूमते हैं Mobile साथ रखते हैं। कोई तो उसके द्वारा अपना P.C.O. खोले बैठे हैं। भंडारा भी खाएगा चोटी वाले के यहां परोंठा भी खाओगे। Restaurant वालों का भी मज़ा होता है। सोचते हैं संत जल्दी जल्दी आए तो हमारा भी Business चलता रहे। असली साधक वही है जो उपलब्धि करने आए हो उसे हासिल करो। तुम अभी समझते नहीं हो

वैरागवान नहीं हो। तुम्हारे लिए नियम और डंडे लगाने की ज़रूरत न होती।

प्रतिपल कैसे कहां कहां रस्सी बंधी पड़ी है पहले ढूंढो तभी तो काटोगे। रस्सी आसक्ति की बंधी हो तो नाव आगे कैसे बढ़ेगी। जब वैराग्य आएगा तो मन संसार की ओर नहीं जाएगा। जिस जगत को छोड़कर जाना है या जो छूटना है उसी की ओर दौड़ न करो। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में ही समय लगाओ।

Pramila

पत्र 20 - When Chela Is Ready

When chela is ready Guru is there कुएं का पानी एक ही है उसे कहीं से भी निकालें पानी तो एक ही है। ज्ञान एक है था और रहेगा। केवल मेरे लिए श्रद्धा होनी चाहिए। कोई पट्टा नहीं बांधता किसी को। कच्चे गुरु ही एक दूसरे से पूछते हैं तेरे कितने चेले हैं। ज्ञानी चेला नहीं मानते वह तो मेला लगाने आते हैं मेला गया चेला गया। शिष्य सच्चा वो है जो अपने को मिटाना चाहे। मेला देखने वाले तो बहुत है। लोग कहते हैं मन नहीं टिकता हम कहते हैं यहां आकर 15 दिन रहो। कहते हैं समय नहीं है और रिश्तेदारों में जाया जा सकता है तो गुरु के पास नहीं आ सकते मेहनत से दूर भागते हैं। कई कहते हैं सत्संग लंबा चलना चाहिए। मैं क्यों अधिक समय दूं जब तुम देना नहीं चाहते। बाकी कहते हैं मिल सब जाए। तुम्हारी श्रद्धा कम है प्रेम तो मनुष्य को 1 मिनट में काबू हो जाता है। बुल्लेशाह ने कहा मैं गुरु का दर्शन कर लिया सब हो गया।

ऐ तन मेरा चश्मा होवे ते मैं मुर्शिद वेख ना रजा हूं।

एक दिन ना देखूं तो सब्र नहीं आता तो और किसी के पास कैसे जाऊं। दर मुर्शिद का मंदिर काबा जहां आशिक भी सजदे करते हैं। सजदा कर करके मैं स्वाद लेता रहूं। अब कौन से काबे में जाऊं। मुझे तीर्थ या हज करने की ज़रूरत है। मेरे शरीर का रोम रोम आंख बन जाए उसमें लाखों आंखें हो जायें। जिसको प्यार नहीं होता उसका मन नहीं टिकता है। गुरु को बिठाने के लिए तुम सुंदर आसन बनाते हो और जिस पर परमेश्वर को बिठाना चाहते हो वहां सफाई नहीं करोगे? जिसके चित्त में छल और कपट है तब तक कुछ ना होगा। सत्संग की गंगा में

नहाने से निश्चित पाप नष्ट होते हैं। एक तीर्थ पर जा रही थी सब ने कहा हमारे नाम की डुबकी लगा देना। बोली पैसे मैं खर्चूं और पुण्य तुम्हें मिले। सबसे पैसे लिए और सबके नाम की डुबकी लगाई।

जगत छुड़ाने की चीज़ नहीं है छूट जाए तो ठीक है। शराब छोड़ कर आया गंगा पर झूठ बोलना छोड़ा ऐसा नहीं करेला अच्छा नहीं लगता तो छोड़ दिया केला खाता ही नहीं था तो छोड़ दिया। बाक़ी बुरी बातें बुराइयां तो छोड़ नहीं पाते। गुरु के साथ में ही सब छूटता है जो मेरे अंधेरे मन को उजाला दे दे। सतगुरु हमारे विकारों को नष्ट करके आत्म ज्योति को प्रगट करता है, जो तू पहले से ही है केवल अज्ञान का पर्दा आ जाता है पर्दा हटा तो आप हुआ फिर आपको सजदा कौन करे। पारस तो लोहे को कंचन बनाता है पर सतगुरु करे आप समान। मानसिक रोगों से ठीक करके अंतःकरण को शुद्ध करें। केवल लायक बनो तो लायकी अपने आप मिलेगी। Only Deserve need not to Desire. गुरु मिलने से तन मन के रोगों से मुक्ति मिलती है। ज्ञान तलवार है ज्ञान सुरमा है नाव है जो हमें सारे संसार से पार करती है। गुरु का प्यार हमें सात समुंदर पार भी शक्ति देता है। लाख कोस साजन दूर बसे तो भी हृदय माहि हज़ूर द्वारे पर दुर्जन बसे तो भी लाख कोस है दूर।

तपस्या से अंतःकरण शुद्ध होता है। मान अपमान दुख सुख लाभ हानि मरण जनम आवागमन से गुरु ही छुड़ाता है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े
काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताए।

जे सौ चंदा उगवे सूरज चढ़े हजार
एते चानन होदियां गुरु बिन घोर अंधार।
सब धरती कागज करूं लेखन सब बनराए
सात समुद्र की मसि करूं
तो भी गुरु गुन लिखा ना जाए।

जो स्थान सतगुरु का है वह कोई भी ले नहीं सकता। जिसने हमें मनुष्य से देवता बनाया और करत ना लागी बार। हमारे आसुरी गुणों को खत्म करके दैवी गुणों को प्रकट करता है।

ऐसे गुरु पर तन मन वारुं
गुरु को ना तजूं हरि को मैं तज डारुं

सब साधन का मूल है दुर्लभ सतगुरु प्रेम
प्रेम बिना थोथे सभी, जाप ताप व्रत नेम।।

प्रेम सुराही सो पिएजो सीस दक्षिणा दे
लोभी सीस न दे सके क्या नाम प्रेम का ले।
यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहि
यहां तो शीश दक्षिणा देनी पड़ती है।
एक सीस दे हरि मिले तो गल है आसान
लाख सीस दे हरि मिले तो भी सस्ता जान।

सतगुरु का ऋण तो किसी जन्म में भी नहीं उतार सकते। ना ही यह जिह्वा उसकी महिमा का वर्णन कर सकती है।

सो ही वडभागी जो सतगुरु पावे
तन मन धन की ममता मिटावे
आपस कहु कर कुछ ना जनावे,
सो पंडित फिर जून ना पावे
आपस को जो भला कहावे
तिसहि भलाई निकट ना आवे
तीर्थ तप और दान करें मन में धरे गुमान
नानक निष्फल जाइए ज्यों कुंचर स्नान।

मैत्री करुणा मुदिता संग करना विहार रे। ये नहीं छूटनी चाहिए। सर्व से प्यार भगवान जानकर द्वैत का द्वेष का भाव अंदर ना रहे अंदर विषय विकार अहंकार राग द्वेष ईर्ष्या रूप गंदगी रहेगी तो दुनिया कचरे पर और कचरा डालेगी हृदय की सफाई करके वहां सतगुरु को बिठा दो तो वहां किसी की हिम्मत नहीं होगी कूड़ा डालने की।

पवित्र प्रेम की गंगा जो तुम्हारे मस्तक से बहती है जो तुम शव से शिव बनते हो और फिर वह गंगा सर्व के हित के लिए प्रवाहित होती है। गंगा मैया से किसी ने पूछा लोग जो तुम्हारे में अपने पाप डाल जाते हैं तो उनसे तुम कैसे शुद्ध होती हो। बोली मैं ब्रह्मज्ञानी का इंतजार करती रहती हूं कि कब वो इसमें चरण डालेगा और मैं पवित्र हो जाऊंगी। ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर। ब्रह्मज्ञानी ऊंच ते ऊंचा पर मन अपने है सबते नीचा। मन नीवा मत ऊंची हो जाए बुद्धिमान वही है जिसकी बुद्धि

गुरु का वचन मान कर अपना जीवन भी प्रभू मय बना लेता है। सिया राम मय सब जग जानू करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी। कण-कण में भी नहीं पर सर्वत्र पूरम पूर ठसाठस गुरु परमात्मा विराजमान है। यही सत्य है इसे जान लो तो मृत्यु निकट भी नहीं आएगी।

ना वो मरे ना ठागे जाए, जिसके नाम बसे मन माहे

अमर अजर अविनाशी आत्मा निरंजन दाग रहित हो जाता है। उसे कोई भी अपने निश्चय से नहीं हिला सकता। छोटे फायदे में ना खुश हो जाओ अमरता का अमृत चखो और जीवन को सार्थक करो तो दुनिया तुम्हारी पूजा करने लगेगी। आचरण गुरु का उसका अर्क तुम पियो तो तुम्हारा भी आचरण वैसा ही हो जायेगा। Knowledge without Character is for Evil Only. अवर उपदेशे आप ना करे आवत जावत जन्में मरे। Practice What You Preach.

पहले अनुभव में लाओ फिर किसी को सुनाओ प्रेम ज्ञान सुनना सरल है पर पचाना कठिन है। जब पचेगा तभी शक्ति तुम्हारे अंदर प्रगट होगी।

पत्र 21 - सतगुरु के पास सभी

सतगुरु के पास सभी कोई न कोई भेंट गुरु गोविंद सिंह के आगे रखते थे। एक भक्त हाथी ले आया वो उनको चंवर झुला रहा था दूसरा नहलाता है फिर उनके शरीर को पोंछता है। (मुक्तानंद के आश्रम में भी ऐसा हाथी देखा गया)।

भक्त को ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि में नहीं जलना चाहिए। गुरु गोविंद सिंह ने परीक्षा ली नंगी तलवार हाथ में लेकर कहते हैं - है कोई ऐसा भक्त जो अपना शीश देने को तैयार है। केवल पांच प्यारे ही निकले। ये सिर और जो कुछ है सब आपका ही है मेरा तो कुछ है नहीं। खून से भरी तलवार लेकर गुरु बाहर आते हैं। तब दूसरी तीसरी बार चौथी बार पांचवी बार एक-एक भक्त को बाहर निकाला। पांच प्यारों को बाहर निकाला और खालसा पंथ बनाया। इस्लाम से मुक़ाबला करना है।

जो भक्त डरे वे मन मुख हैं
जो भक्त बैठे रहें वो सनमुख हैं
जो गर्दन कटाने को आए गुरुमुख है

जब खालसा पंथ बना तो कई उनसे जुड़कर सेना तैयार की। ये शरीर तू नहीं है। शरीर को ज़रा भी कष्ट होता है तो तुम दुखी होता है। पहले मरण क़बूल कर जीवन की छोड़ आस। तो आओ हमारे पास। गुर गोविंद सिंह ने कहा तुम अकाल पुरुष हो अमर हो। कृष्ण ने भी यही ज्ञान दिया। जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाए गलावे न पानी ना मृत्यु मिटावे

महिलायें पुरुष सब तैयार हो गए। बहादुर होकर इस्लाम के विरुद्ध लड़ाई छिड़ गयी। फिर अनाज ख़त्म हो गया। 40 मुक्ते कहने लगे भूख सहन नहीं हो रही वे अपने घर लौटने लगे। गुरु ने कहा जाओ पर ये लिख दो कि हमारा गुरु से कोई सम्बंध नहीं है। पत्नियों ने विरोध किया। जाओ लौट जाओ। 40 वापिस आ गए। सभी गुरु की सेना में शामिल हो गए। मान सिंह अंत में बचा उसे भी गोली लगी। उसने अंतिम समय में कहा कि वो पत्र मेहरबानी करके फाड़ दीजिए। उन्होंने फाड़ दिया। एक मां कहती है पति और 2 पुत्र आपके युद्ध में शहीद हो गए। एक बच्चा बीमार है वह भी ठीक होकर आपकी सेना में शामिल हो जाए।

शक्ति खोलो तुम शक्ति के भंडार हो शक्ति को खोलो उसे निष्काम कार्य में खर्च करो। एक एक के अंदर वह शक्ति छिपी है तुम उसे खोलो और आनंद की प्राप्ति करो। जो करो ध्यान से करो। अर्ध मूर्छित होकर नहीं करो । तन मन एक रस होकर रहो तो हर चीज़ का आनंद लेते हो। पूरी प्रकृति तुम्हारे लिए है। उस ठंडक को महसूस करो। आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ो। नारद से कहा किसी ने, हमें स्वर्ग दिखाओ। नारद ने कहा जीते जी तो नहीं जा सकते। बहुत प्रार्थना करने पर एक ग्रामीण को स्वर्ग दिखाया। उसे बहुत अच्छा लगा। अचानक चलते-चलते कल्पवृक्ष के नीचे पहुंच गया। संकल्प हुआ काश खाट होती तो कितना अच्छा होता। मन ही कल्प वृक्ष है। मेरा मन शुभ संकल्प वाला है। शिवमय कल्याणमय हो जाए। संकल्प से खाट गद्दा बिच्छोना आ जाए फिर कहा पांव दबाने वाला हो फिर हुक्के की चाह हुई। फिर डरा कि यदि पत्नी ने देख लिया तो झाड़ू से मार देगी तो वो भी आ गयी और वो

डर गए। नारद से बोला यहां भी झाड़ू से पिटे तो ये कैसा स्वर्ग है। नारद ने कहा तुम्हारे सोचने में है।

पत्र 22 - प्रभू से नाता जोड़ कर रखो

प्रभू से नाता जोड़ के रखो यही सच है बाक़ी तो सब नाते बनते हैं टूटते हैं। केवल यही सत्य है। हर चीज़ प्रभू की अमानत है केवल गुरु ही हमें ये बातें पक्की कराता है बाक़ी तो सारी दुनिया ही सत्य दिखती है इसलिए साचा तेरा नाम, तेरा आधार ही मेरा सब कुछ है।

Your own self

Pramila

पत्र 23 - शिव जी की बातों में

शिव जी की बातों में समानता है भेद भाव नहीं है। सत्यम शिवम् सुंदरम। सत्य ही सुंदर ही है शिव ही कल्याणकारी है। मन संसार की ओर आकर्षित करता है पर जब मन उस तत्व को पा जाए तो संसार से विरक्त हो जाता है। मूल कारण मन ही है सब दुखों का। मन बुद्धि मुझे अर्पण करो। हमारी जीवन की वृत्तियां भगवत कर्मों में आसक्त हो जाएं तो जीवन ही यज्ञ हो जाये। इस संसार में जो प्रवृति बनी हुई हैं उसे निवृति में लगाना है।

हमारे ऋषि मुनियों नें शुद्ध नदियों के पावन तट पर बैठ कर अपने जीवन को सफल किया है। प्रभू की आराधना सत्संग मनन हमारे जीवन की आधार शिला है। मानव शरीर को प्राप्त करके जो प्रभू की शरण नहीं लेता है। उसका जीवन व्यर्थ है। प्रभू के शरण में ही जीवन व्यतीत हो जाए। सतगुरु के आधार से जीवन को सुंदर बना लें फिर हमारे संस्कार अच्छे होंगे। संस्कार हमारे कर्मों से बनते हैं। यदि कुछ ग़लत खाया है तो शरीर पर असर होगा। सही भोजन से शरीर स्वस्थ रहता है। हम अपनी चेष्टाओं को भी सुंदर बना सकते हैं। जो हमारे शास्त्र हैं, उनका निचोड़ गुरु बताता है उसके मनन से हमारे अंदर सदभाव होता है और संसार से विरक्ति होती है निरंतर सत्संग को आचरण में लगायें यह हमारे जीवन को सुंदर बनाते हैं। सत्संग बिना सब आसुरी प्रवृतियां पैदा होती हैं तो इन शास्त्रों का सही अर्थ भी सतगुरु के मिलने के बाद ही समझ आता है। आज की गीता समझने के लिए आज का कृष्ण

चाहिए। मत कोई भरम भूले संसार गुरु बिन ना कोई उतरस पार। आज का Bible समझने के लिए आज का Christ चाहिए।

बिन गुरु वक्त मुक्ति ना पावे।
बिन गुरु वक्त सतलोक न जावे।
पर काचे गुरु ते मुक्त ना होए
पूरे गुर का सुन उपदेश पारब्रह्म निकट कर पेख।

गोपियों ने कहा हमें संसार का आराम नहीं चाहिए वो मुझसे दूर ना रहे।

भुला दिया संसार इक (तेरी याद में) 2
भुला दिया सारा संसार इक (तेरी याद में) 2

एक दिन कृष्ण से पूछा उद्धव ने कि आपके चेहरे पर उदासी क्यूं है? क्या राधा की याद है तो मैं उसे संदेश पहुंचा सकता हूं। कृष्ण ने अपनी सब बाल लीलायें उद्धव को बतायीं कि मेरी मां यशोधा मुझे याद कर रही होगी मुझे उन गोपियों ग्वालों की याद आ रही है। उद्धव कहता है तुम उन्हें क्यों याद करते हो। तुम तो मथुरा के राजा हो वही बड़ा कार्य करने आये हो। कृष्ण ने कहा उद्धव मोहे ब्रज बिसरत नाही। वो सीधी साधी गोपियां और गाय ग्वाल याद आ रही हैं। वह प्रेम के अवतार थे। उद्धव को वृंदावन भेजा। आधे रास्ते में ही उसके रथ को रोककर कृष्ण का हाल पूछने आए बोले हमारी याद उसे आती है कि नहीं। फिर वह उसे नंद बाबा के घर ले आए, वहां उसने सभी को व्याकुल देखा वह पूछने लगे कृष्ण यहां कब आएगा। उद्धव निराकार का भक्त था वहां उसने गोपियों को राधा को रोते हुए देखा वह कह रही थी

श्याम तेरी याद मुझे पल पल सताए
कैसी ये याद गया तू हमारे दिल में लगाए।
उठ के रात आधी मैं तुझको बुलाऊं।
प्रभात पर्दे में नैनन नीर बहाऊं
तुझ बिन हर दिन दुःख में बिताऊं।
कहां है तू प्यारा कोई तो खबर लाए
श्याम तेरी याद मुझे पल पल सताए।

ऊधव ने राधा से बताया कि कृष्ण तुम्हारी याद करता है क्या संदेश पहुंचाना है राधा ने कहा, जब से कृष्ण गये हैं उसके बिना हमारी हालत फूल बिना ख़ुशबू के है। मेरे पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। ऊधव ने कहा मैंने ऐसी पवित्रता नहीं देखी थी। राधा की आंखे निस्तेज हो गयी थी। प्रेम में उसका शरीर कमज़ोर पड़ गया था। ऊधव उन्हें ज्ञान समझाते रहे परंतु फिर स्वयं ही उनके प्रेम रस में डूब गए। राधा ने कहा मेरे रोम रोम में जब श्याम का निवास हो गया है तो लग रहा है मैं ही कृष्ण रूप हो गयी हूं। ऐसा लगा कि इधर राधा बनी है श्याम मोहन की जुदाई में उधर मोहन बने राधा वियोगन के जुदाई में। सुनो इस तौर योगी द्वेत में अद्वेत रहते हैं। दो जिस्म दिखायी देते हैं पर जान एक ही हो जाती है। प्रेम में देह भूलती है और ज्ञान स्वतः ही आ जाता है। प्रेम ही परमात्मा का स्वरूप है। Love is God and God is Love. इसलिए सर्व से प्रेम करते चलो। जिसमें अपना अस्तित्व भूल जाए। मैं मैं न रहूं तू तू ना रहे हम राम में ऐसे रम जायें। पानी में मिली जैसे नमक डली हम राम में ऐसे रम जायें। गुरु और हम एक रूप हो जायें।

Your own self Pramila

पत्र 25 - सू र्य उदय और अस्त होता है

सूर्य उदय और अस्त होता है। और आत्मा का प्रकाश सदैव समभाव से प्रकाशित करता है। सूर्य तो बारी बारी कुछ पृथ्वी के हिस्सों को प्रकाशित करता है पर प्रभू आपका मुख कमल चंद्र सदैव प्रकाशित रहता है। आपका रूप सर्वत्र प्रकाशित करता है।

चंद्रमा का प्रकाश राहु केतु ग्रस्ता है। बादल से ढक जाता है परंतु आपका प्रकाश तो सदैव प्रकाशित करता है। आप सूर्य चंद्र से भी अधिक प्रकाशित करने वाले हैं।

हे भगवान सम्पूर्ण आत्म ज्ञान आपके हृदय में प्रकाशित वैसा और कहां जो मणि का प्रकाश है वह भी आपके आगे धूमिल है। आपको जानने के बाद मन कही जगत में भटक नहीं सकता आपके समान कोई हो नहीं सकता।

संसार में अनेकों स्त्रियां अनेक पुत्रों को जन्म देती हैं पर सूर्य पुत्र तो केवल आप ही पैदा करते हैं। आप राग द्वेष से अलग हो। अंतः करण को स्वच्छ करके काल को भी परास्त कर सकते हैं।

हे प्रभू ! संसार के सभी भक्त कई स्वरूपों को भजते हैं पर आप अचिंत्य हैं आप अनंत हैं। आप योगेश्वर हैं अर्थात योगियों के आराध्य हैं। आप शुद्ध चैतन्य हैं और विकारों से रहित हैं। तीनों लोकों का कल्याण करने वाले शंकर भी आप हैं ब्रह्मा भी हैं विश्व रूप हैं पुरुषोत्तम भी आप हैं। हे नाथ आप तीन लोकों के कष्ट हरन करने वाले हैं भव सागर से पार करने वाले भी आप ही हैं। हे मुनीश्वर आपके दुर्गुण आपने

नहीं अपनाए वे कहीं और चले गए। समस्त सदगुन आपमें विराजमान हैं। कोई विकार आपको नहीं छू सकता है। जैसे अंधकार को सूर्य दूर करता है वैसे आपका रूप समस्त अज्ञान को दूर करने वाला है। जैसे सूर्य पूरा आकाश प्रकाशित करता है ऐसे आपका प्रकाश सब भूतों में समान रूप में है। प्रभू के रूप की तुलना किसी से नहीं कर सकते अतुलनीय है। न शस्त्र काटे, न अग्नि जलाए मैं शिष्य भाव से मिटने की तत्पर्ता लाया हूं। मेरा कर्म पूरा हुआ अब आप अपनी कृपा करिए।

मेरे मालिक, मेरे मुर्शिद, निगाहे कर्म हो अगर
न दवा चाहिए, न शफा चाहिए
है मरीज़े मोहब्बत मुझको अगर
इक नज़र या हक़ीक तेरी चाहिए
इक नज़र या मालिक तेरी चाहिए
अब तो महरे नज़र तेरी चाहिए
आख़िरी वक्त है तेरे बीमार का
कुछ भी इसके सिवा अब नहीं चाहिए
कुछ भी इसके सिवा मैं नहीं मांगता
तेरे दामन की ठंडी छाया चाहिए
क्या होगा परिणाम कैसा होगा?
क्या चल पाएगा तेरे मार्ग पर परिणाम हो
परिणाम हर कदम की सफलता चाहिए।
कल की यह हशर हमें क्या तड़पायेगी
ख़ुद ही कदमों पर जन्नत चली आएगी

बात बिगड़ी सबकी बन चाहिए
तेरे नज़र का एक इशारा चाहिये
दोनों नाज़गारे जो आला हक़ीके ख़ुदा
कौन जाने कि कितना रुतबा है तेरा
चाहते हैं तो आलमी ख़ुदा की रज़ा
पर ख़ुदा को भी तेरी रज़ा चाहिए
चाहते हैं तो आलमी ख़ुदा की रज़ा
मेरे मुर्शिद निगाहें करम हों अगर

ओ गुरुदेव नमः, ओंक़ार गुरुदेव, ओंक़ार गुरुवे नमः। गुरु के प्रेम में मस्त होकर अपनी खुदी को भुला कर ख़ुदा को प्रगट करें मेरा अपना कोई अस्तित्व नहीं है। जो कुछ मेरे पास है आपका दिया हुआ है। आपकी कृपा से प्राप्त है। अंदर की नम्रता प्रेम शुद्धता ही आगे बढ़ाती है। अपना जीवन तेरे चरणों में अर्पित है। क्या करुं तेरे वैकुंठ को जहां साध संगत नहीं होये। साध संगत ही स्वर्ग के समान है। सांसारिक भोग तो सब नर्क के समान है। अब अपनी बची हुई जीवन इसी कार्य में लगा दे जहां अपना कुछ भी नहीं है। सब कुछ तो यहां ही छूटने वाला है। संग्रह की प्रवृति संसार में फंसाती है। अपनी आवश्यकता से अधिक अपने पास ना रखो। सबसे मन हटाकर मुझमें रख। प्रभू को तो Challenge है कि सर्व कर्मान परितज्य सर्व धर्मान सन्यसत माम एकम शरणम वज्र। मैं सब पापों व तापों से मुक्त करुंगा। प्रभू की सेवा में ही रहना। मां की गोद में जाना चाहे तो भर देती है।

बहुत अच्छा हुआ जो मैं सतगुरु के पास पहुंच गया और सही दिशा मिल गयी राह मिल गई। अब नहीं भटकना है। बस गुरु का सच्चा आशीर्वाद सदा साथ है। राम हमेशा हमारे साथ रहे। संसार हमेशा बदलता है उसमे पूर्ण रति ना होगी भोगों में तृप्ति नहीं। राम के प्रेम में लगातार डूबे रहें तो कामना नहीं रहेगी। अविरल गति बनी रहे। चित्त मलीन नहीं रहता। राम ही तेरे रोम रोम में बस जाए। तू विदेही है। सिया राम मय सब जग जानहू करहुं प्रणाम जोर जुग पानी। बाहर वर्षा हो रही है पानी दृष्टि गोचर हो रहा है पर कमरे में भी H_2O के रूप में जल विद्यमान है। AC से कमरे की नमी का पानी ही तो निकलता है। अंदर अदृष्ट है बाहर दृष्ट है। ऐसे ही सारी सृष्टि राममय है भगवान कण कण में नहीं क्यूंकि कणों के बीच में भी दूरी है पर वो तो पूरा पूर व्यापक है। सर्वत्र समान रूप से है उसे जानना है उसी में समा जाए। गुरु के साथ तुम्हें महात्मा हो जाना है। महावीर महात्मा ही है। घट आकाश मठ आकाश महा आकाश। हद में व्यक्ति है बेहद में भगवान हो जाओ। ध्यान के आगे समाधि। समाधि के आगे वीतरागिता है। भटकने का डर है, गिरने का डर है जब तक वीतरागिता नहीं होता। इसलिए हमेशा कृतज्ञ बने रहें। अपनी त्रुटियों को निकालते चलें। अज्ञान में अभिमान है पर इस राह पर चले जायें तो अभिमान छूटेगा। मैं जानता हूं यह अज्ञानी की भाषा है। ज्ञानी जानते हुए भी कहते हैं मैं कुछ नहीं जानता। ज्ञानी सदैव विनीत होकर रहता है। ऐसे ही भक्त पर आशीर्वाद की बरसात होती है। गुरु संसार समुंदर से पार करता है। जल में तरंगें उत्पन्न होती हैं तूफ़ान उठते हैं पानी खारा होता है भँवर उठते हैं उथल पुथल रहती है। किनारे पर आ गए पर नौका छोड़ी नहीं। कभी तरंगें उछाल सकती हैं किश्ती फिर फंस सकती है। इसलिए गुरु कहता है अब यह शरीर रूपी

किश्ती को छोड़ दो। किसी की देह को पकड़ कर न बैठो। धर्म ध्यान में रहो। ध्यान लगाए खड़ा है। मन को डांवा डोल न करो मन में दुश्मन दोस्त बनाकर रखते हो। इसलिए हर समय ध्यान सत्संग में रहें। तुम समाधी तब तक नहीं लगा सकते जब तक संसार में वृति है। ध्याता, ध्येय, ध्यान त्रिपुटी से न्यारे हो जाओ। मेरी जो Existence है उसे वो जानो। समाधी में भी मैं बना रहता है। आनंद शांति ही रह जाए। आत्मा की अनुभूति रह जाए बाकी सब (-) हो जाए। जब तक वो स्थिति नहीं आती तब तक डर है। नौका माने जब देह में हैं तो फिर भी भटक सकते हैं पर इस देह को भी छोड़ दो नहीं तो कभी आलस्य आ जाता है। सबसे बड़ा प्रसाद है स्वयं को मूल जानना। इस राह पर ये आलस्य छोड़ना। ना मन ना बुद्धि ना चित्त ना अहंकार रहे केवल तुम्हारा स्वरूप रह जाए। जब आत्मा को भूलें तो फिर श्रद्धा भक्ति कहां है। जो अज्ञानी है वह आत्मा को भूल जाता है। मुमुक्षु बन कर सतगुरु के पास जाना है मैं कुछ सीखने के लिए आया हूं,कुछ बनना चाहता हूं तो गुरु की आज्ञा में रहना है। तर्क नहीं करना है। अपने को सेवा में लगाओ सेवा से गुरु से निकटता होती है। गुरु के पास छोटे से छोटा काम करने में भी कभी आलसी ना बनें। सहर्ष व जाग्रत होकर रहो नहीं तो गुरु की छड़ी कभी भी लग सकती है। सावधान होकर रहो। रहते रहते गुरु की आहट से भी सावधान हो जाता है। केवल मुख से नहीं कहना है कि मैं तेरा हूं वास्तव में सीखने के भाव से रहो। सोए हुए भी जाग्रत रहो। विश्राम करते हुए भी सावधान रहो। सोया हुआ भी जाग जाएगा कि कभी भी गुरु की छड़ी लग सकती है। काम करता हुआ भी जागता है। जागते हुए भी जागृत है। एक दिन शिष्य को ख़याल आया कि मैं भी देखूं गुरु भी जाग्रत है या नहीं। परख तो लूं गुरु पेड़ के नीचे धूप सेक रहा था किताब पढ़ रहे थे।

गुरु ने पीछे मुड़ कर कहा ये क्या सोच रहे हो। जो सोच रहे हो वो कर मत देना। अरे नासमझ कैसा ख़्याल कर रहा है। गुरु ने उसके मन को समझ लिया ये है जागरण। अगर पांव की चाप सुनायी देती है तो तुम्हारे मन की तरंग भी उठेगी तो उसकी आवाज़ भी गुरु को सुनाई देती है। अप्रमाद हो जायें समय कम है वीतरागिता के शिखर पर पहुंचना है। इस प्रमाद को छोड़ कर शीघ्रता करो ये शरीर कभी भी छूट सकता है। इन बातों में रहेंगे तो सत्य तक पहुंच सकते हैं। गुरु अंत तक सावधान रहने को कहता है कि तुम कहां भूले हुए हो। जल्दी अपने लक्ष्य को प्राप्त हो जाओ।

साधारण पूजा से कोई काम नहीं। जब तक भाव सहित ना हो। पुष्प के रूप में हृदय पुष्प अर्पण करता हूं। स्वर्ग का साम्राज्य उनके लिए खुला है जो बालक वत्त हो। वो निष्कपट होते हैं। हृदय में वो प्रकाशित हैं। अंधेरे को हटाने के लिए झाड़ू से हटाने की आवश्यकता नहीं है- केवल दीपक जलाने की ज़रूरत है। छह विकारों के कारण अपराध होते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद। ये सब मन में अंधकार के समान है। इसके लिए हज़ार वर्ष का अंधकार एक क्षण में प्रकाश करने से दूर हो जाता है।

धर्म के नाम पर भेद और घृणा पैदा कर रहे हैं। सत्संग की पहली सीढ़ी है संतों का संग करना है। यदि सत्संग में नहीं हो तो कहीं ना कहीं तो बैठे हो और वहां माया तुम्हें घेर लेती है। अपने को इस माया से बचाना है तो सत्संग से ही बच सकते हैं।

पानी में पड़ा बड़ा पत्थर सूखा ही रहता है। भक्ति में मांग चढ़ी तो भक्ति मरी कोई चाह नहीं होनी चाहिए। हे प्रभू! आपकी एक किरण

जब धरा पर उतरती है तो हमारा हृदय कमल खिल जाता है। हम साधु तालाब की तरह हृदय पर कमल खिल जाता है। सदैव निष्काम भक्ति और ज्ञान का प्रसाद बंटता रहे।

पत्र 25 - आप सभी का जीवन प्रे म से

आप सभी का जीवन प्रेम से सराबोर है। बस ये प्रेम अंत तक निभ जाए। भरिया उसका जानिए जाका तोड़ चढ़े। अपनी लगन मेहनत पुरुषार्थ साहस धैर्य द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है थकना नहीं है ना कमज़ोर होना है। माया अपने खेल दिखाती है पर सब मिथ्या स्वप्न है उसमें फंसना नहीं है। मृग तृष्णा की नदी से किसी की प्यास ना बुझी है ना बुझेगी।

Your own self

Pramila

पत्र 26 - जो मैं ऐसा जानती प्रीत

जो मैं ऐसा जानती प्रीत किए दुःख होए नगर ढिंढोरा पीटती प्रीत ना करियो कोये। प्रीत हो जाती है की नहीं जाती। हो जाती है वाह वाह रमज़ सजन दी होर। इस प्रेम में ही सारी दुनिया भूल जाती है। सब साधन का मूल है दुर्लभ सतगुरु प्रेम। प्रेम बिना थोथे सभी जाप ताप व्रत नेम। गोपियों का सहज प्रेम था और उन्हें कोई और साधन करना नहीं पड़ा। जितनी प्रीत सतगुरु से बढ़ेगी उतनी संसार से छूट जाएगी। मन, इंद्रियों, वाणी का संयम ही इस भव सागर से तारता है। ना मैं तन ही रहा ना मैं मन ही रहा सतगुरु मिलने से झगड़ा ख़त्म हो गया। हठ योग से मन वश न होगा। To suppress the desire is also a desire. ना भागो ना भोगो। मध्य मार्ग अपनाना है। वीणा के तार ना कसे होने चाहिए ना ढीले होने चाहिए। तभी स्वर सही निकलते हैं। ये बातें आशिक़ी के बग़ैर समझ में भी नहीं आती। दूज के चंद्रमा की तरह दिनों दिन यह प्रेम बढ़ता ही रहे। अहंकार का अंत प्रेम से ही होता है। जिसे यह इश्क़ लग जाता है ना घर में चैन ना बाहर चैन कोई कहता है प्रेम करे तो चैन आ जाए लेकिन यह प्रेम तो और भी बेचैन कर देता है। जिस ठग ने ठगी की कुल जहान से उस ठग से मेरी पूरण प्रीत लगी। गोपियां को कहते थे तुम उस गली ना जाना जहां कृष्ण हो क्यूंकि वो तुम्हें लूट लेगा। ठग भी ऐसा है जो तुम ठगवा के ख़ुश होते हैं। आशिक़ों में चुप्पी आ जाती है। (I Love you) 2 नहीं कहते। कई कहते हैं लवेरिया हो गया जैसे मलेरिया ऐसे ये प्रेम रोग भी भयंकर है। इश्क़ में मौन आ जाती है। मदमस्त हो जाते हैं। मैं तो उसके प्रेम में फंस गया।

बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह थे। बोले बस इसने मुझे अपने में फंसा दिया है। उसकी सूरत जैसी किसी की सूरत नहीं होती। वो कहता है मेरे गुरु की ओर ना देखना नहीं तो तुम उसके नेत्रों को देखकर शिकार कर दिया। उसे मिलकर उसने अंदर वाले परमात्मा से मिला दिया। जिसका ना रूप, ना रंग ना रेख है। गुरु चोर है जो हमारे हृदय को चोरी कर जाता है। गुरु कहता है मैं चोर हूं काम है चोरी।

दुनिया में हूं बदनाम
दिल को चुराता आया हूं मैं ये है मेरा काम।

सबकी अपनी 2 दुनिया है। कारोबार लेना देना सब अलग 2 है। तुम सब उसमें खोए बैठे हो लेकिन उससे जो अलग कर दे वो रहबर। न बंदूक़ न तलवार चलायी पर ये बात आशिक़ हुए बिना नहीं समझ पाओगे। बाहर की बात नहीं है। गुरु के माध्यम से गुरु के द्वारा मुलाक़ात पूरी कर लें। मन के बंधन खोलने हैं। अच्छी ख़ासी ज़िंदगी कोई जी रहा है बस वही रोज़ वही काम वही घर था। जब प्रेम चखा तो दुनिया सारी बदल गयी। गुरु के मिलने पर दुनिया नई नई लगने लगती है। दुःख सागर अब सुख सागर बन जाता है। ये प्रेम ही देह अध्यास को गुम करने वाला सहज योग है। बाक़ी ना मंत्र से ना जंत्र से किसी को वश कर सकते हैं। मन भी वश नहीं होता।

पोथी पढ़ जग मुआ हुआ ना पंडित कोए
ढाई अख़र प्रेम के पढ़े सो पंडित होए।

कबीर को इसी प्रेम ने तार दिया। जैसी प्रीत हराम में ऐसी हरि से होए। चला जाए बैकुंठ में पल्ला ना पकड़े कोए। माया को तो खूब सम्भाला राम रत्न धन छोड़ दिया। तूने नाम जपना क्यों छोड़ दिया।

हम बदल गए तो ज़माना बदल जाए। लेकिन लोग कहते हैं कि ज़माना बदले तो हम बदले। प्रेम के चश्मे से देखोगे तो कोई बुरा नहीं दिखेगा। दुःख हो परेशानी हो शत्रु हो मित्र हो क्या करोगे। आप एक ही लाखों करवा देता है, घर घर दा मालिक है दिलबर की करदा। वो क्या करता है प्रीतम क्या करता है बस अंदर वाले को बदल देता है हाज़िर नाज़िर हर जगह वो है हर एक दिल में रहता है जीवन जीने की कला ज्ञान से आती है। मेरे जीवन में परिवर्तन गुरु से आया है गुरु के जीवन में ज्ञान से परिवर्तन आया। तुम कहोगे गुरु हम कहेंगे ज्ञान। ज्ञान से Transformation हुई तो पल्ला गुरु का नहीं ज्ञान का पकड़ा। दिवाली में बम को आग लगाते हैं तो उसके धागे को लगाते हैं। जब उसे पकड़ते हैं तो वो बम तक पहुंच कर विस्फोट कर देता है। चिंता कलेश सब है ज्ञान आया सब आया। ज्ञान से गुरु श्रेष्ठ हुआ फिर तुम ज्ञान लाए तो तुम भी श्रेष्ठ हुए। गुरु महाराज की जय दस बार कहते हो। कहते हो गुरु की तो सदा ही जीत है तुम कहो या ना कहो। गुरु विजयी है तो क्या तुम हारे हुए हो। ममता में क्रोध में हारे हुए हो पुरानी ग़लतियों को दोहराते रहते हो। तो तुम कैसे शिष्य हो। गुरु को आनंद स्वरूप कहते हो या तो गुरु को रोने वाली मूर्ति बना। मर गया बेटा तो क्या करोगे जियोगे, मरोगे क्या। कभी डिब्बे में कई यात्री से बैठते हो। एक दूसरे से बात चीत करते हो दोस्ती करते हो। गाड़ी से उतरते हो तो कौन याद करता है। केवल टाइम पास किया। बाप बेटा साथ सफ़र कर रहे थे सामने बच्चे को प्यार कर रहे थे उसके साथ Time Pass कर

लिया। ऐसे ही यह संसार में भी घर में Co Travellers हैं। हंसो खेलो खाओ पियो पर दिल ना दे दो। अपना दिल अपने दिलबर के साथ रखना और से न लगाना। क्यूंकि दिल तो दिलबर की जगह है बात ये कोई क्यूं भूलता है। जो ना बसाए दिलबर को वो जीवन खोता है। तू ही मेरे दिल का मालिक है। क्या करते हो। अपने को गवाओ और उस सच को प्राप्त हो जाओ। बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद।

फूल से पूछो उस पर कैसे छाई है बहार
कब तलक काटों पर सोया, डाल पर आने के बाद।

बीच की मुसीबतों से घबराना नहीं है परीक्षायें तो आती है ऊपर उठाने के लिए बीच राह में ही अधीरज मत बनो धीरज के जहाज़ पर सवार हो जाओ सभी से आत्मिक प्रेम का नाता रखो। ना कोई अपना ना कोई बेगाना अपना ही आप समाया। सर्व में ही वो ही प्यारा है जित वल देखूं उत वल प्यारा। पूरमपूर कण-कण में भी नहीं उसमें भी कुछ जगह खाली रहती है। पर सम्पूर्ण सृष्टि में समाया पड़ा है कोई तिल मात्र जगह भी उससे खाली नहीं है बस अब देखना शुरू कर दो। एकोहम बहुस्याम।संकल्प से ही सृष्टि तैयार हो गई। As you think so you become. Omnipresent. हर चीज़ उससे ओत प्रोत है। जैसे बर्फ़ में पानी, सूर्य की हर किरण में जल समाया है। H_2O रूप में पूरे घर मठ महा आकाश में समाया हुआ है। अपना उद्देश्य ऊंचा रखो। What is your Aim - I Am. इसी को जानना है। Capital 'I' पर अहंकार की बिंदी नहीं है (i) मैं वो सत्य स्वरूप आत्मा हूं अपने को ही जानना है। सारी दुनिया को प्रेम का संदेश देते चलो। निष्काम जीवन से ही उद्धार होगा। पूरा समय अपने मन में गुरु का ही डेरा हो जाए। विकार रहित

होकर शुद्ध पवित्र जीवन बनाना है। Be You as Pure as Holy as Humble as your Father is in Heaven. Thoughtless Egoless Effortless Unattached Disinterested Unconcerned होकर रहो, ये माया के पर्दे हटाते चलो। न तेरा ना मेरा। पूरा समय जीवन प्रभू को समर्पित हो जाए। तन मन धन सब तेरा है मेरा कुछ भी नहीं।

पत्र 27 - जब सतगु रु मिल गए तो समझो

आप सभी का जीवन इस ज्ञान से सुनहरा हो गया है। जब सतगुरु मिल गए तो समझो बड़ी से बड़ी लॉटरी मिल गई जो मालामाल हो जाते हैं जहां दुःख की परछाई भी असर नहीं करती।

दुःख जम नसै। भव न व्यापे। सर्व सुख होवत।

एक भी ज्ञानी घर में है तो हम सुरक्षित हैं। संत न होते जगत में तो जल मरता संसार आज गुरु की कृपा से उस जलन कुढ़न से बच गए जलती आग से गुरु ने ही बचाया है वरना तो यह माया हमें अपने बहाव में न मालूम कहां की कहां बहा लेती। सत्य असत्य की पहचान भी मिल गई। अब असत्य हमें कभी भ्रमित नहीं कर सकता। अरे मन समझ समझ पग धरिये। इस जग में नहीं कोई अपना परछाई सो डरिए।

सुख में आन बहुत मिल बैठन रहत चहु दिस घेरे। विपत्ति पड़ी सभई संग छाडत कोउ न आवत नेढ़े।

संसार में साथी बहुत मिलते हैं बिछड़ते भी हैं पर सगा तो केवल एक सतगुरु है जो हर समय हृदय में विराजमान रहता है। उसी का प्यार निश्छल है निस्वार्थ है और हमें भी निष्काम जीवन जीना सिखाता है। अब सब कर्म अकर्म बन जाते हैं क्यूंकि कोई कर्ताभाव अंदर नहीं है अकर्तापन ही सच्ची समाधी है। आया अकेला जाए अकेला और अंत समय जीव सोचता है मैं ये सब छोड़ कर जा रहा हूं तो जब उसका कुछ है ही नहीं तो छोड़कर क्या जाता है केवल वासना और आसक्ति। पर गुरु तो हमारी सभी आसक्तियों को काटता है। अपने में आसक्त भाव

रखा के और अंदर वाला कहता है तुम्हें चुना है तुम्हें चुनेंगे। सदा रही है सदा रहेगी। यही सच्ची मोहब्बत है। दुनिया इस प्रेम को नहीं जानती तो भक्तों की हंसी उड़ाती है। पर भक्तों की नांव तो हमेशा तरी है तरेगी ये पक्का विश्वास है।

Your own self

Pramila

पत्र 28 - कुं ती माता ने कृ ष्ण से कहा

कुंती माता ने कृष्ण से कहा विपत्ति आई तो आप आए विपत्ति गई तो आप गए इसलिये हम चाहते है ये विपत्ति हमेशा रहे। वैसे मनुष्य सुख में भूल जाते है पर

जे सुख मे सिमरन करे
तो दुःख काहे को होये
दुख मे सुमरन सब करे
सुख में करे न कोय

दुख के पास गहराई है सुख उथले पानी की तरह छिछला है आनन्द में डूबना है तो गहराई में जाये सुख में लम्बाई है चौड़ाई है जब दुख जाता है तो सुख के लिये जगह करता है और सुख चला जाये तो दुख काहे को होय

सूय पुत्र शनि और समुंद्रपुत्री लक्ष्मी भगवान के पास गये और पूछा हम दोनों में से सुंदर कौन है लक्ष्मी आती हुई अच्छी लगी और शनि जाता हुआ अच्छा लगा

दुख सुख अपने पाप पुण्य का नतीजा है
कर्ज कम हो जाये तो चिंता करनी चाहिये
कर्ज बढ़ता जाये तो चिंता करनी चाहिये
सुखों में पुण्य की पूंजी खर्च होती है

बिना इजाज़त के मृत्यु भी आ नही सकती ऐसे योगी थे भीष्म पितामह। युधिष्ठिर अर्थात धर्म के आज्ञा में चल रहे थे पांडव युधिष्ठिर के आदेश को सर्वोपरि माना जाता था तो उनके पक्ष में भगवान है। उतरा के गर्भ से बालक मरा हुआ जन्मा। भगवान ने तब कहा कि यदि मैने केवल धर्म के लिये सत्य के लिये जीया हो तो ये बालक जी जाये तो बालक जी गया। वैसे कहते है कृष्ण ने बचपन में झूठ बोला माखन चुराया सत्य के लिये प्रतिज्ञा तोड़ी पहिया हथियार चलाया।

सत्य श्रीकृष्ण के रूप में प्रगट हुआ है। रणछोड़ में भय नही युक्ति है। ये कर्ता नही है भोकता नहीं है। इनका प्रमाण श्रुति में है। सत्य के बल से ही पृथ्वी खड़ी है। (सत्य) विदुर जो कहते है धृतराष्ट्र सुन लेते है पर चलते नही केवल चर्चा करते हैं। राजा अंधा नहीं होना चाहिये। पांडु को पहले गद्दी मिली शासक अंधा नहीं होना चाहिये जिसके पास सच झूठ की दृष्टि न हो वो न्याय नहीं कर सकता।

राजा अंधा हो तो भी मंत्री विदुर जैसा समझदार होना चाहिए। उसकी धृतराष्ट्र मानते नहीं थे। जब उसे अपमानित किया तो हार गये कौरव। जब तक रखा था तब तक जीवित थे। मनुष्य चाहता है हमारे अनुसार धर्म चले ऐसा दुर्योधन था जो कह रहा था रोटी हमारी खाता है पक्ष पाण्डवों का लेता है हम थोड़ा खर्च करते हैं तो सोचते हैं धर्म इस पर मोहर लगाये। जब तक विभीषण लंका में थे तब तक लंका सुरक्षित रही। एक भी सत्यवादी होगा तो घर बचा रहेगा।

10 मिनट का सत्संग भी बहुत काम करता है Positive Thinking रहती है। एक व्यक्ति को बीमार करना हो उसे कहो तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है कुछ ढीले लग रहे हो देखो बुखार तो नहीं है। इस प्रकार के

Negative Thought मनुष्य को गिरा देते हैं। बीमार कर देते हैं। अपने अंदर के वीचार ही गिराते या चढ़ाते हैं। अपनी सोच ही हमें ठीक कर सकती है हमेशा ऊंचे विचार रखने चाहिये।

विचार से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई। विचार सूक्ष्म होते हैं फिर स्थूल हो जाते हैं। विचार से एको हम बहुश्याम सृष्टि बन गयी। किसी की बुराई देखते रहेंगे तो वो बुराई तुम्हारे अंदर आ जायेगी या समाज सुधारक बन जाओगे। दोष दुनिया में नहीं अपनी दृष्टि में है। Reformers wanted of Themselves not of Others. गुण ग्राहक दृष्टि रखो। एक एक गुण इकट्ठा करके गुणों के भंडार बन जाओगे।

पत्र 21 - रक्षा बंधन के दिन

रक्षा बंधन के दिन सभी प्रेम के एक सूत्र में बंध गए ये प्रेम की डोरी सदैव बंधी रहे सबको यह प्रेम का संदेश देते चलें अपने को मिटाकर गुरु को प्रगट करते चलें। बाक़ी तो कोई संगी साथी नहीं है ना कोई साथ आएगा ना जाएगा विरक्त भाव से रहो। सभी के बीच सभी से न्यारा होकर रहो। जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया है अब हर दिन जीवन मुक्ति का आनंद लेते रहो।

Your own self

Pramila

पत्र 30 - रावण के मारने का

रावण के मारने का तरीक़ा विभीषण ने ही बताया - ज्ञान और भक्ति में क्या अंतर है?

वैसे तो कोई विशेष अंतर नहीं है ज्ञान का मार्ग कृपाण की धार। ज्ञान की राह पर बाधायें अनेक आती हैं। कृपाण में दोनों और धार है। तलवार के एक और धार होती है। कृपाण चाहे उल्टा चाहे सीधा काट देती है। संतोष रूपी कृपाण से इच्छा को काटना है। इच्छा का कोई अंत नहीं है एक पूरी हुई दूसरी खड़ी है इच्छा का लोभ का कोई अंत नहीं। हिरण्य और हिरण्यकश्यप पैदा हुए तो पैदा होते ही बढ़ते जा रहे थे याने इच्छा व लोभ कभी समाप्त नहीं है पैदा होते ही बढ़ते रहे।

लोभ मन की व्याधि बढ़ती है इच्छा से तन की व्याधि बढ़ती

लाभ बढ़ेगा लोभ बढ़ेगा। ताप बढ़ेगा तो सुखों की आशा बढ़ती रहती है मानव संताप से जल रहा है इस ताप से बचने का एक ही उपाय सत्संग। सत्संग का श्रवण करने से अंत:करण शुद्ध होता है और मन रूपी रावण का अंत होता है जो मन सब को नचाता रहता है। क्रोधाग्नि विषयों की अग्नि जला रही है सब प्राणियों को। वो ही सुखी हो सकता है जो सत्गुरु की शरण में आ जाता है। स्वर्ग के अमृत का पता नहीं है पर सत्संग रूपी अमृत पर सब का अधिकार है। सब कार्यों में सफलता मिलती जाती है जब यह अहंकार रूपी रावण मरता है नहीं तो इसका एक सिर काटो तो दूसरा निकल आता है। गुरु ही मनुष्य रूप में आकर इन संस्कारों से बचाता उसका प्रेम सब दुखों से बचाने वाला है। सच्ची बादशाही मिल जाती है जीवन का एक एक दिन प्रेम से व्यतीत होता है

अंदर में हरेक के प्रति प्रेम का भाव रखें तो कोई भी हमारा दुश्मन नहीं होता। ईश्वर की भक्ति से अहिल्या, शबरी मीरा राधा सभी को तारा। जिसने अपने को मिटाया उसने ही जीवन मुक्ति का आनंद पाया। सभी मरने के बाद की मुक्ति बताते हैं। सत्य से ही सब तीर्थ धाम पूरे हो जाते हैं सफलता के लिए सत्गुरु की सब से अधिक ज़रूरत है। गुरु हमें उंगली पकड़ कर चलना सिखाता है। सत्गुरु सिख की हलत पलत सवारे। गुरु मिलने से बदलाहट शुरू हो जाती है अथक प्यार और साहस ही इस राह पर बढ़ाते हैं अथक मेहनत कभी थक कर बैठें नहीं पुरुषार्थ तेरा देव है। संत तुलसीदास को रत्नावली द्वारा वैराग्य प्राप्त हुआ और कहा मुझे अपनी शरण में ले लो राम। जितनी प्रीति शरीरों से करते हैं उतनी राम से हो जाये जैसी प्रीति हराम में वैसी हरि से होय चला जाये बैकुंठ में तो पला ना पकड़े कोये। करोड़ जप तप करें तो भी बिना श्रद्धा के कुछ नहीं मिलता। अनुराग विहीन कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। अनुराग का अर्थ है सत्गुरु के प्रति राग यानी प्यार। पूर्ण रूप से समर्पण अपना भाव भक्ति इसके बिना कुछ नहीं पा सकता है वैर विरोध अंदर से समाप्त हो जाये महाभारत भी अंत:करण की लड़ाई है अंत काल में मेरा स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करता मुझे प्राप्त होता है। जिस जिस भाव में शरीर त्याग करता है उसी उसी योनि को प्राप्त करता हैं। जो जो जीवन में भाव रखे है वही ख़्याल अंत समय में आता है। निरंतर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर आज ही में कर कल तो आते नहीं। निरंतर चिंतन की रीति बताई वैराग्य में स्थित होकर मेरा चिंतन कर सिवाय मेरे किसी भी विषय का चिंतन मत कर एकांत देश में सेवन करें झगड़ा किस से करें। क्षेत्र क्षेत्रज्ञ की लड़ाई है। इसमें सब और से चित को समेट कर केवल इष्ट का चिंतन हो जाये। पुराने संस्कारों से

जीतना है। शाश्वत विजय होगी तो फिर कभी हार नहीं होगा। एक व्यक्ति बीमार था सोने का भाव 100 के क़रीब था उसने सोना 80 में खरीदा था जब डॉक्टर ने बताया बुख़ार 105 उसने समझा सोना 105 हो गया तो बोला बेच दो बेच दो और तभी प्राण पखेरू उड़ गये। ज़िंदगी भर पेट के लिए ता ता थैया का नृत्य करते हो मिलता क्या है। संत तपस्या में बैठे हुए वैश्या के घर कितने लोग गये गिनती करता था वैश्या संत का चिंतन करती थी उसके सब कुकर्म जल गये उसके पाप तुम्हें मिले और वैश्या को तुम्हारे पुण्य ख़त्म हो गए कल आता ही नहीं इसलिए तू मेरा चिंतन कर हरेक मनुष्य शांति चाहता है और काम अशांति के करता है व्याकुलता नींद ना आने का कारण यही है यह रोग बढ़ता जा रहा है भयभीत होना दिल का घटना यह बीमारियां सोचने से ही हैं डिप्रेशन से ही सब बीमारियां हैं रोने का मन करता है या ग़ुस्सा ज़्यादा आये अकेला रहना अच्छा लगता है। बहुत लोग ऐसे भी होते हैं रास्ते में या गाड़ी में बड़बड़ाती जा रही है कपड़े पर डंडा चल रहा है साथ ही शब्द भी ऐसे बोलती जा रही है। भूलने की बीमारी समस्या इतनी बढ़ती है कि अपने बच्चों के नाम रिश्तेदारों के नाम भी भूलने लगते हैं BP और Sugar का प्रकोप बढ़ता है यादाश्त कमज़ोर शरीर ख़राब सब का कारण तनाव है आदमी हंसना ही नहीं चाहता है मनोरंजन के साधन हैं लेकिन मनोरंजन का असर नहीं है। समस्या बढ़ रही है सहनशीलता कम हो रही है। ज्वालामुखी की तरह फटने लगता है। मन अंदर से भरा हुआ है तो किसी पर भी अपना ग़ुस्सा उतारता है और अगर नहीं ग़ुस्सा करता तो रोने का मन करता है। नींद लेता है पर अंदर नींद नहीं लगती है। यह सब बातें तनाव के कारण ही हो रही हैं। यह सब मन की वजह से है। और हमारा दिमाग़ किस बात से भरा हुआ है। Past के

या Future के विचार रहते हैं गुरु हमारे मन को अपने स्वरूप में लाता है तो हम ठीक फील करते हैं। मनुष्य जब तक रहेगा तब तक झगड़े हैं पर यहां विजय होगी तो लौट कर आने का कोई कारण ही नहीं बचेगा। चित को अंतर आत्मा में स्थित कर के आशा ममता रहित होकर चिंतन कर। सब करमों को मुझमें समर्पित कर दें। आंख खोलने से ममता चाहना भी आ जाती है हे अर्जुन मेरे मत अनुसार श्रद्धा से आचरण करता है तो उसे दूसरे जन्म में नहीं जाना पड़ता है और जो ऐसा नहीं करते वो अधोगति में जाते हैं और ज्ञान से भ्रष्ट हो जाते हैं। सब करमों को मुझमें समर्पण कर। चित की एकाग्रता आयेगी तो काम क्रोध की समाप्ति होगी। अंदर के विकार दुर्जय शक्ति है। जिस से सुख मिला उसमे आसक्ति है। तुम्हारे रास्ते में यह रोड़े हैं। अर्जुन ने कहा अगर यही सत्य है तो फिर क्यों पाप का आचरण करता है। काम और क्रोध भोगने से संतुष्ट नहीं होता इन्हीं के पंजे में फंसा हुआ जीव ग़लत करम करता रहता है। जैसे धुयें से अग्नि जेरे से जर्म और धूल से दर्पण ढका हुआ है ऐसे ही मनुष्य में काम व क्रोध ढके हुए हैं इन्हीं को जीतना है फिर तो मन जीते जगजीत है।

दान पुण्य करने वालों के अंदर अहंकार बढ़ता रहता है। जैसे जैसे लोग कीर्ति करते है वैसे अहंकार बढ़ता रहता है। संसार की नज़रों में तुम कीर्तिवान बनोगे पर आत्म दृष्टि से ऊंचे नहीं हो एक राजा के पास कुबेर जितना धन था वो उसे खर्च नहीं करता था। किसी को देता नहीं था। पाप से कमाई माया से अच्छे कर्म नहीं होंगे।

तुम जानो प्रभू है अवश्य है। साधु संगत में रह कर अपने अंदर के गुणों को प्रगट करो। संतों की कृपा से गूंगा बोले अंधा देखे लंगड़ा चल कर पहुंचे काशी रे। प्रभू तुम क्या नहीं कर सकते। क्या नाहीं घर तेरे

जिस देवे सो पाये। हमें केवल प्रभू की और ही देखना है। दर्शन की प्यास दिनों दिन बढ़ता जाये। तब तुम्हारे ऊपर प्रभू की कृपा हो जाती है। तुम जिसे देते हो वो माला माल हो जाता है। मुझे अपनी प्रीति का दान दो। गुरु के पास शिष्य गया बोला सब छोड़ कर तेरे पास आया गुरु ने लात लगाई वो पेड़ के नीचे जा कर गिरा। बहुत सुंदर चंद्रमा देखा उसके अंदर कोई शंका नहीं आई उसे आनंद मिल गया आत्म तृप्ति आत्म शांति आ गई। अपनी खोपड़ी अपना दिमाग़ ना लगाना। सत्गुरु कैसे परीक्षा लेता है तुम किस तरह React करते हो शरीर के शुद्धि बिना मन शुद्ध नहीं होता और फिर मुक्ति भी नहीं मिलती। त्याग के अहंकार का भी त्याग करना है।

राज नेता गांव पर वहां गया वहां हाल चाल लिया एक आदमी सोया पड़ा था आलसी था। बिल्ली देख लो यदि गीली है तो बारिश पड़ी है नहीं तो बारिश नहीं हो रही है। तमोगुण वाले काम करना नहीं चाहते। शिष्य से कहा दीया बुझा दो। बोला आंख बंद कर लो अंधेरा हो जाएगा। संत ने कहा दरवाज़ा बंद करो शिष्य बोला दो काम हमने किए एक तुम कर दो। तमोगुण वाले अध कच्चे अध पक्के होते हैं। जिस में तुम भी मरोगे सभी को मारो Instant का ज़माना आ गया है। जैसे Juice डिब्बे वाले पीते हो यह तामसी आहार है तुम्हें क्या भरोसा कब बनाई गई कब खायी गई। बंद डिब्बी के आहार बिस्कुट टाफ़ी तामसी आहार है व्यायाम नहीं करते पसीना नहीं निकालना चाहते शरीर को श्रम में नहीं लगाते। राज मार्ग पर चलो मेहनत करो पसीना बहाओ सब दुखों की जड़ है कामना। ना राग ना द्वेष होगी तो कोई बीमारियां नहीं होगी मन विचार सही नहीं है तभी बीमार रहते हो। जिज्ञासु को अपने को सेवा में लगाओ।

मन को साधना में लगाओ। तन मन एक रस हो के रहो। Diamond cutting वालों को देखो कितनी एकाग्रता से करते हैं। हीरे की शक्ल बिगड़ी तो मूल्य बिगड़ जाएगा। Creativity आएगी तभी अच्छे भाव में जाता है। मूर्तिकार मूर्ति एकाग्रता से ही बनाता है। एक ग़लत हथौड़ा गिरा तो मूर्ति बिगड़ जाती है। हरेक अपने कार्य में निपुण है। मन की एकाग्रता से हाथ सहाता है। एक पेंटर कितने भाव से कार्य कर रहा है एकाग्रता से तो क्या सत्संग के लिए एकाग्रता की ज़रूरत है मन को तराशते जाओ विचार हटाते जाओ अंदर की मूर्ति को प्रगट करो। तुम कभी इतने बेहोश रहते हो जो खांस रहा है उधर ध्यान बट गया। एक आदमी उबासी ले तो बाक़ियों को भी आने लगती है। सभी एक दूसरे को देख कर तुम भी वही करने लगते हैं। जाने की ज़रूरत नहीं है तो भी जाते हैं। अनजाने में हम बहुत कुछ कर जाते हैं। कभी अपने को ज़बरदस्ती रोकने की चेष्ठायें करते हैं। ज्ञान में बहुत संभल कर चलो यह राह खंडे की धारा है। अगर इस पर तुम को आना है तो लाज उतार कर आना है नहीं तो कदम कभी भी बढ़ाना नहीं। सत्संग में एकाग्रता से बैठो तुम पूरा समय हिलते डुलते रहते हो। मन बहाने करता रहता है। संकल्प दृढ़ करोगे आगे बढ़ने का तो अवश्य सफल होओगे। जिस प्रकार का संकल्प होगा तो वो तुम्हारे साथ है और पूरा होगा। परछाई तुम से है तुम इस से नहीं हो। तुम वो नहीं है। संकल्प की मज़बूती से बुद्धि को लाभ होता है तुम आगे बढ़ते हो। जब बुद्धि सूक्ष्म हो जाएगी तो यह प्रज्ञ हो जाएगी। प्रज्ञानम ब्रह्म। हृदय इतना साफ़ हो जाये जिस में तुम अपना दर्शन कर सकते हो।

मन जड़ है पर जीव के साथ रह कर चेतन का कार्य करता है। आपकी आत्मा का प्रकाश उस पर पड़ता है तब मन चेतन हो जाता है

फिर दुख सुख को प्रगट करता है हमारा मन जहां एकाग्र होता है वही सोचता है। तन मन एक रस नहीं है तो केवल क्रिया हो रही है पर अंदर आनंद नहीं है। हमारे अंदर का अंत:करण अपने आप कार्य करता है। मन का काम है अच्छा सोचना बुरा सोचना। मन ऐसा कार्य करता है जैसे ऊपर से सब और Light का कार्य करता है। अच्छा भी बताता है बुरा भी बताता है ऐसा वकील है जो दोनों का पक्ष लेता है। चित्त के अंदर हर्ष शोक की लहर आती रहती है। कभी आशा निराशा के ख़्याल अंत:करण के सरोवर लहरें लाता रहता है। अहंकार आता है तो कहता मैं यह कर सकता हूं वो कर सकता हूं नहीं कर पाएगा तो बढ़ा चढ़ा कर बातें करेगा। दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करता है। इसी मन से जीतना है कभी Inferiority में बह नहीं जायें सावधान हो कर चलें। God Is With Me. मैं कभी अकेला नहीं हूं। मेरा सोचने वाला शहंशाह बैठा है कुछ भी सोचना तुम्हारा धर्म नहीं है निश्चिंत होकर बैठें होवनहार होवत सो जाने प्रभू अपने का हुकुम पछाने हुकुम में राज़ी होकर रहें अपने अंत:करण में कोई मैल ना आये। जो तुध भावे साईं भली कार तू सदा सलामत निरअहंकार। मन मधुसूदन में रखें। बाक़ी बातों में ना जायें।

Your own self

Pramila

पत्र 31 - पायो जी मैं ने राम रत्न धन पायो

पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो
वस्तु अमोलक दीनी मेरे सतगुरु
कृपा कर अपनायो।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरा
गुरु साक्षात पारब्रहम तस्मै श्री गुरु देव नमः
हरि ओम् हरि ओम्।
हरि हरि ओम् (हरि हरि ओम्) x 6
नद नंदन आनंद कंद भगवान।

जब यह अनमोल ख़ज़ाना मिल जाता है तो फिर और किसी धन की आवश्यकता नहीं रहती। मीरा मतवाली हो गई ये प्रेम प्याली पीकर। जिसे ये प्यार आनंद मिला उसे फिर किसी वस्तु की ज़रूरत नहीं रहती। मैं धन पायो हरि नाम।

भगवान राम जी घर जवाई हैं। पृथ्वी पुत्री सीता जी पृथ्वी पुत्री थी भगवान ने पृथ्वी पर अवतरण लिया जहां कथा नहीं वहां व्यथा है। सबको धरती धार रही है। पूरे विश्व को पृथ्वी धारण करती है। ये सत्संग स्थिर है पृथ्वी घूमती है। पृथ्वी घूम रही है और भीतर से अचल है। पहाड़ का जलाशय का नुक़सान नहीं हुआ घूमने पर भी। भक्ति की धारायें नदियां है। पवित्र हृदय वाले संत हैं। पूरा विश्व सत्संग पर टिका है संत न होते जगत में जल मरता संसार।

यमराज का मुंह काला करने वाला सत्संग है। यम सूर्य का बेटा बेटी का नाम यमुना। द्वितीय के दिन भाई दूज होता है। यमुना बहन भाई यमराज है। बहन को क्या भेंट दूं यमुना ने कहा जो भाई दूज के दिन जो स्नान करे तो उस दिन यमराज के दूत वापस हो जायें। वैसे यम के दूत कभी लौटते नहीं। इसलिए कृष्ण ने यमुना किनारे लीलायें की।

मेहमान ने कहा घर हमारे नाम है या तुम्हारे नाम मेहमान तो शांत था जब कि ट्रेन 2 मिनट रुकी बोला मेहमान गाड़ी रोको कहने लगे बोले क्यों बोला मेज़बान चढ़ा गये। यमराज एक ना एक को ले के ही जाता है जब यह मेहमान घर में आएगा मृत्यु भयानक नहीं होगी। मृत्यु क्या करेगी। यम का मुख काला हो जाता है। केवल योगी का चेहरा चमकता रहता है क्यूंकि काल को जीता है ज्ञान रूपी यमुना में नहाने से।

काशी में प्राण त्यागने वाले मुक्त होते हैं वहां जाना पड़ेगा मृत्यु के बाद मुक्ति पर सत्संग में मृत्यु से पहले ही मुक्ति मिलती है।

मित्र की चिट्ठी मित्र का प्रस्ताव अच्छा लगता है शास्त्रज्ञ की केवल इज़्ज़त करें तो क्या फ़ायदा।

मनुष्य औरों को तो समय देता है अपने लिए समय नहीं यदि दूर दृष्टि ख़राब है या पास दृष्टि ख़राब है तो उसके लिए चश्मा लेते हें। दिव्य दृष्टि की ज़रूरत है अपने स्वरूप को जानने के लिए। सच्ची शिक्षा की कमी है। कैसे प्यार प्रेम बना रहे, आचरण श्रेष्ठ बना रहे। सच्ची स्वतंत्रता बाहर की नहीं है, स्वच्छंद बनें। एक युवक कहता है कि मैं स्वतंत्र हूं। धन कमाया है कैसे भी खर्च करुं व्यसन हमें ग़ुलाम बनाते हैं।

हमें अधिकारी नहीं बनाते हैं। मर्यादायें हैं Discipline है संसार के क़ायदे क़ानून भी हैं। सत्संग में रहकर अपनी अपनी मंशायें कैसे कम हों मूल्यवान जीवन अधोगति में जा रहा है। शांति भीतर है उसे बाहर ढूंढ रहे हैं। शांति को मनन से, प्रभू की याद से बनायें। अपने चिंतन से न्यारे भी बन सकें, प्यारे भी बन सकें। औरों को सिखाना तो सरल है चलना कठिन है। Practice What you Preach. जो खुद विषय का ग़ुलाम है हमें कैसे आज़ाद करेगा। जहां त्याग की आवश्यकता है अपने को आगे रखें। ग़लत काम से क्या नतीजा मिलता है। संसार का उद्धार हो जाए। यह ब्रह्म विद्या ऊंची से ऊंची विद्या है।

पहला मूल्य शांति
दूसरा मूल्य है प्रेम
तीसरा मूल्य स्वतंत्रता
चौथा मूल्य सुख।

जो जिज्ञासा रखे वह अर्जुन। तुम सब अर्जुन बैठे हैं। कैसे अर्जित करें। This Gyan is Caught not Taught। हम अपने लिए समय दें। अपनी आत्मिक उन्नति के लिए। शरीर के लिए तो बहुत समय देते हैं। पर अपने से पूछें हम कौन हैं। ईश्वर से क्या सम्बन्ध है। पाप क्या है पुण्य क्या है। जो मैं कर रहा हूं, यह सही है या ग़लत है। आत्म बोध ही आत्म परिवर्तन कराएगा। विश्व परिवर्तन का आरम्भ अपने से करना है। अपने को कैसे जागृत करें अपने को पहचानना है। प्रभू से जुड़ना है। अपने से कोई भूल हुई अपने को केवल सुधारता हूं। अपने को कष्ट देकर दुखी नहीं करुंगी पर आंतरिक शक्ति से दोबारा भूल ना करें। अपने को कभी हीन भावना से ना देखें। ना हीनता हो ना अहंकार हो पर

स्वाभिमान हो जो शक्ति मैं चाहती हूं शांति मेरा स्वभाव है। मैं प्रकृति से परे हूं क्यूंकि वह परिवर्तनशील है मैं अविनाशी अमर अजर हूं। एक दिव्य ज्योति हूं। मेरा स्वभाव है अपने को जानकर अपने स्वरूप में सदा ही स्थिर रहें। भक्ति से ही भगवत प्राप्ति होती है। चित्त की प्रसन्नता के लिए दूसरे के ग़ुलाम ना बनो। दुखी हैं तो अपने में ही कारण खोज लो। अपने को ठीक करने से सब कुछ ठीक लगने लगता है। स्वयं को मिटाकर ही सत्य को प्राप्त कर सकते हैं। Know Thyself & You Know God.

मनुष्य बनकर असुरों का नाश करो। अपनी आसुरी प्रवृतियों को ख़त्म कर सकें। हम किसी से भी ना मरें। इसलिए भगवान भी मानव रूप में आए रावण व कंस को ख़त्म करने। कुम्भकर्ण रूपी अहंकार हमें सता रहा है। 10 मुख रावण का प्रतीक है। मेघनाथ काम का प्रतीक है यह सब विश्राम को हरने वाले हैं। चाहे जितनी सम्पत्ति हो सत्ता हो पर अगर जीवन में शांति नहीं है तो हमने कुछ नहीं किया। शांति को हरने वाले मोह अहंकार काम आदि शत्रु है। यही हमारे विश्राम को हरने वाले हैं। राम का चरित्र विश्राम देने वाला है। समर्थ जो है वो इन्हें संकल्प मात्र से समाप्त कर सकते हैं। बार बार भगवान से Prayer करते हैं कि आप हटाओ। तुम मानव ही पुरुषार्थ से मार सकते हो। जब तक मानव नहीं होंगे, तो मानवीय परिस्थितियों को कैसे जानेंगे और कैसे मारेंगे। मानवों की समस्या का मानवीय समाधान चाहिए।

भगवान ने हर समस्या का अंत मानव रूप से जाकर किया।समुद्र ने मार्ग नहीं दिया तो लक्ष्मण बोला धनुष बाण से इसे सूखा दूंगा ये ऐसे नहीं मानेगा। ईश्वरीय समाधान किया। पहले जो मार्ग लिया मानव का

समुद्र को रिझाने के लिए प्रार्थना की फिर ऐसा समाधान जो भगवान ही कर सकते हैं। ऐसे ही प्रार्थना में हाथ जोड़कर बैठे रहने से कुछ न होगा भक्त के मुख से ही राम प्रगट हुए तब समुद्र शरण में आता है। मानव रूप में मानवीय समस्याओं का अंत कर दीजिए। फिर हर मनुष्य कहेगा ये हमारे लिए सम्भव नहीं इसलिए समुद्र ने कहा प्रार्थना भी करो और मानवीय यत्न से भी बात बन सकती है। तब भगवान ने सेतु बनाने का संकल्प किया। तो उससे फिर पशु तो क्या चींटी भी रास्ता पार कर सकती है। कौशल्या को दर्शन दिया फिर कहा वापस मानव रूप में आ जाओ।

हम सागर को तार के दिखा संसार को तारने वाले तुम गिड़गिड़ाओगे तारोगे। हमारी दीनता को देखो हमारी मानवीय समस्याओं से परिचित हो जाओ और फिर हमारा मार्ग दर्शन करो।

एक छोटी सी प्रेम की चिंगारी आ जाये तो ज़बरदस्त घेरा डाल देता है। जो मैं मेरे छूटे नहीं छूटती ईश्वर की कृपा हो जाए तो सबसे छुड़ा सकता है। मेरे बग़ैर नहीं रह पाओगे बाकी तो कुछ नहीं रहेगा। आद सत् जुगाद सत् है भी सत् होसी भी सत्। एक गीत तो हम मुख से गुनगुनाते हैं। क्या तुमने चकोर की तरह गाया ये रात को जागता है चांद को देखकर गाता है। चित्त और चकोर का अनुभव हो जाएगा। कोई शहर गांव ना हो तो वो दूर से देखता है। चकोर चांद तक पहुंच तो नहीं सकता चांद तक पहुंचने की गुहार करता है। (चांद को क्या मालूम कि चाहता है उसे कोई चकोर।) पपीहा पीहू पीहू पुकारे अमृत वेले बोलता है। उसकी पुकार सुन लेना। चित्त ऐसे करे उसका सिमरन। रात सोने से पहले दौड़े दौड़े भागे भागे ज्ञान का असर ना होगा। चितेरा बनकर दिल

से गाऊं। जितना अपने दिल में गहरे उतरते हैं उतना आनंद आएगा। जो आपके अंदर अगाध आनंद है। जो काफ़ूर की तरह उड़ा दे। साक्षात ईश्वर भी उस पर खुद कृपा बरसाते हैं। परमात्मा से आस्था का रिश्ता जोड़ो। श्रद्धावान लभते ज्ञानम। समय का सदुपयोग करो समय पर पहुंचो और समय से उठो सत्संग नियम पूर्वक जायें।

ओम् जय सतगुरु देव हरे ...
अदभुत रूप तुम्हारा मन वाणी से परे ...
“ “ ॥ “ “ “ “ ॥ “ “ “ “ ...
सुंदर से दो नैना मन का प्रेम हरे ...
अज्ञान अंधेर मिटाया, मन आनंद भरे ... जय सतगुरु....
हृदय प्रभू को निवाया, अति आनंद किया ...ओम्
महिमा तेरी गाऊं जाऊं ना तुझसे परे
जन्म विरागन किया ऐसी कृपा तू करे
ओम् जय सतगुरु देव हरे

पत्र 32 - सतगु रु के पास सभी

सतगुरु के पास सभी कोई न कोई भेंट गुरु गोविंद सिंह के आगे रखते थे। एक भक्त हाथी ले आया वो उनको चंवर झुला रहा था दूसरा नहलाता है फिर उनके शरीर को पोंछता है। (मुक्तानंद के आश्रम में भी ऐसा हाथी देखा गया)।

भक्त को ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि में नहीं जलना चाहिए। गुरु गोविंद सिंह ने परीक्षा ली नंगी तलवार हाथ में लेकर कहते हें है कोई ऐसा भक्त जो अपना शीश देने को तैयार है केवल पांच प्यारे ही निकले। ये सिर और जो कुछ है सब आपका ही है मेरा तो कुछ है नहीं। खून से भरी तलवार लेकर गुरु बाहर आते हैं। तब दूसरी तीसरी बार चौथी बार पांचवी बार एक-एक भक्त को बाहर निकाला। पांच प्यारों को बाहर निकाला और खालसा पंथ बनाया। इस्लाम से मुक़ाबला करना है।

जो भक्त डरे वे मन मुख हैं

जो भक्त बैठे रहें वो सनमुख हैं

जो गर्दन कटाने को आए गुरुमुख है

जब खालसा पंथ बना तो कई उनसे जुड़कर सेना तैयार की। ये शरीर तू नहीं है। शरीर को ज़रा भी कष्ट होता है तो तुम दुखी होता है। पहले मरण क़बूल कर जीवन की छोड़ आस तो आओ हमारे पास। गुर गोविंद सिंह ने कहा तुम अकाल पुरुष हो अमर हो। कृष्ण ने भी यही ज्ञान दिया। जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाए गलावे न पानी ना मृत्यु मिटावे

महिलायें पुरुष सब तैयार हो गए। बहादुर होकर इस्लाम के विरुद्ध लड़ाई छिड़ गयी। फिर अनाज ख़त्म हो गया। 40 मुक्ते कहने लगे भूख सहन नहीं हो रही वे अपने घर लौटने लगे। गुरु ने कहा जाओ पर ये लिख दो कि हमारा गुरु से कोई सम्बंध नहीं है। पत्नियों ने विरोध किया। जाओ लौट जाओ। 40 वापिस आ गए। सभी गुरु की सेना में शामिल हो गए। मान सिंह अंत में बचा उसे भी गोली लगी। उसने अंतिम समय में कहा कि वो पत्र मेहरबानी करके फाड़ दीजिए। उन्होंने फाड़ दिया। एक मां कहती है पति और 2 पुत्र आपके युद्ध में शहीद हो गए। एक बच्चा बीमार है वह भी ठीक होकर आपकी सेना में शामिल हो जाए।

शक्ति खोलो तुम शक्ति के भंडार हो शक्ति को खोलो उसे निष्काम कार्य में खर्च करो। एक एक के अंदर वह शक्ति छिपी है तुम उसे खोलो और आनंद की प्राप्ति करो। जो करो ध्यान से करो। अर्ध मूर्छित होकर नहीं करो । तन मन एक रस होकर रहो तो हर चीज़ का आनंद लेते हो। पूरी प्रकृति तुम्हारे लिए है। उस ठंडक को महसूस करो। आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ो। नारद से कहा किसी ने हमें स्वर्ग दिखाओ। नारद ने कहा जीते जी तो नहीं जा सकते। बहुत प्रार्थना करने पर एक ग्रामीण को स्वर्ग दिखाया। उसे बहुत अच्छा लगा। अचानक चलते-चलते कल्पवृक्ष के नीचे पहुंच गया। संकल्प हुआ काश खाट होती तो कितना अच्छा होता। मन ही कल्प वृक्ष है। मेरा मन शुभ संकल्प वाला है। शिवमय कल्याणमय हो जाए। संकल्प से खाट गद्दा बिच्छोना आ जाए फिर कहा पांव दबाने वाला हो फिर हुक्के की चाह हुई। फिर डरा कि यदि पत्नी ने देख लिया तो झाड़ू से मार देगी तो वो भी आ गयी और वो

डर गए। नारद से बोला यहां भी झाड़ू से पिटे तो ये कैसा स्वर्ग है। नारद ने कहा तुम्हारे सोचने में है।

शुकदेव ने एकांत में ये ज्ञान मुझे प्रदान किया। सनत कुमारों ने नारद को आते हुए देखा तो पूछा आपको अंदर क्या चिंता है। आपका कहां से आगमन हो रहा है। 10 हज़ार के नोट लेकर चेले Shopping करने गए और देखा जेब कट गई। 10 नोट कहां गए फिर सोचा पानी पीया था। फिर आप दौड़ेंगे अपने रुपए लेने के लिए। नारद से कहा आप ऐसे दौड़ रहे हैं जैसे आपका धन खो गया है आपके लिए यह चिंता उचित नहीं, इसका कारण क्या था? तब नारद ने उत्तर दिया हे ऋषिवरों मैं इस पृथ्वी को सर्वोच लोक जानता हूं। चौदह लोक में पृथ्वी क्यूं उत्तम है बोले तेरह भोग योनि के लिए हैं। पृथ्वी कर्म भूमि पृथ्वी पर जीव सुंदर सुंदर कर्म के लिए आया है। धन मनुष्य को संतुष्ट नहीं करता। अधर्म ने पृथ्वी को ख़राब कर दिया है। बच्चों ने नारद से कहा एक बार यात्री मथुरा रुक गया जाना दिल्ली था। समय एक दो घंटे के अंदर सब मंदिरों का दर्शन करना चाहता हूं। रेल मार्ग से उल्टी तरफ़ जाना वहां गली से चले जाना वहां बांके बिहारी का दर्शन करना। फिर राधा मंदिर देख कर Main Gate से निकल दान गली पुण्य गली घूमते हुए राधा मंदिर का दर्शन करना फिर दामोदर का दर्शन करना दामोदर के दर्शन करके सीधे जाकर फिर मीरा जी का दर्शन फिर शाह जी का दर्शन करके आगे निधिवन में खूब आनंद आएगा। वहां एक पत्ता भी नहीं मिलेगा। वहां कुलीन स्त्रियां सफ़ाई का काम करती हैं राधा मंदिर का दर्शन करके फिर गोपी धाम भोले बाबा गोपेश्वर दर्शन फिर गोदा विहार फिर दिव्य यमुना विहार फिर सुदामा कुटी फिर उतर भारत का सबसे बड़ा रंग जी का मंदिर फिर गोरख धाम का दर्शन फिर Taxi या

Tempo में आकर ट्रेन पर पहुंच जाना। ये Train/Bus से उतर कर बताई गली के विपरीत गली में चले गए वहां गंदगी का ढेर मिला। वापिस उसी रेल बस में लौटे दिल्ली पहुंचे पूछा क्या था वृंदावन का दर्शन करने को लेकिन उसने कहा वहां कूड़े कर्कट के सिवाय कुछ नहीं था जो उल्टी दिशा जाएगा वहां उसे क्या आनंद मिलेगा। सनकादिकों ने कहा नारद से कहीं आपने भी वही एक दिशा तो नहीं देखी। मनुष्य जीवन के हर पहलु को समझें जानें तो कभी किसी हालत से दुखी नहीं होगा। सर्व के हित के लिए अपना जीवन समर्पित कर दें। विचार ही किसी को अच्छा या बुरा बनाता है। सद्भावना और शांति मनुष्य बनाता है। शांति और मैत्री का संदेश कृष्ण ने दिया। मन जीतने के लिए पुरुषार्थ है। प्रेम सभी के हृदय में बहने लगे तो कभी भी लड़ाई झगड़े ही न हों। सभी प्रेम में एक सूत्र में बंध जायें तो जीवन का गौरव बढ़ जाएगा। व्यक्ति महान हो सकता है। सभी के अंदर ही शक्ति का स्रोत बह रहा है, अपना प्रेम देते चलो। One Way Traffic प्रेम मांग नहीं बेशर्त दान है। केवल देना ही तुम्हारा काम है लेने की आकांक्षा नहीं रखनी है ज्ञानी अपने जीवन की क़ुर्बानी देकर सब को जीवन देता है। निष्कामी जीवन ही सबसे उत्तम जीवन है। यही साधना भी है जिससे हम अपने लक्ष्य को पा सकते हैं। सत्संग में हर रोज़ आने से मन की मैल धुलती है और निश्चय दृढ़ होता है।

सब साधन का मूल है दुर्लभ सतगुरु प्रेम
प्रेम बिना थोथे सभी जाप ताप व्रत नेम।

प्यास प्रेम की बढ़ती रहे और अपने लक्ष्य की प्रीति हो जाए।

पत्र 33 - जीवन में सं यम की महानता है

जीवन में संयम की महानता है। इंद्रियों को वश में करना। ज़्यादा नमक ज़्यादा चीनी खाना। बच्चों को चाकलेट टॉफ़ी देकर उनको ख़राब मत करो। हिटलर आसुरी प्रवृति का था। अपनी जेब में चीनी रखता था। युद्ध के समय खाकर शक्ति पाता था। तप से मन की शुद्धि तन की शुद्धि होती है तप में एक एक इंच अपने को गलाना पड़ता है। अकेले चलो पहाड़ पर जहां शरीर भी बोझ बन जाता है एक एक मिनट साधना और शुद्धि की ज़रूरत है। जो शुद्ध चेतना है उसमें अपने को मिटाना पड़ता है। तुम अपने जीवन को बनाने के लिए संकल्प लो सभी के प्रति कृतज्ञ रहो। जीवन में शुकराने गाते चलो। मुस्कराना और शुक्राना गाना सीखो।

जाग्रत होकर मन को देखते चलो मन समर्पित हो जाएगा। ये भीतर की घटना है बाहर की नहीं मैं कौन हूं उसे जानते जाओ। मैं साक्षी हूं आत्म तत्व मैं शिवतत्व हूं सभी को देखने वाला हूं। सब अंधेरों को देख रहा हूं। सब इंद्रियों को जानने वाला है। ओम् गुरुवे नमः सर्व को नमन करते चलो। भगवान (अ+तिथि) अतिथि बिना तिथि के भीतर प्रगट होता है वो कभी भी किसी भी पल जीवन में उतरता है और माला माल कर देता है। वो किस क्षण प्रगट हो जाए हर पल उसकी प्रतीक्षा सजगता में रहो। अतिथि शब्द और किसी भाषा में नहीं हैं प्रभू के लिए सूचक है। अपने वृतियों को जानते रहो।

कब रिश्ते बदल सकते हैं। बाप का विस्तार है बेटा वो रिश्ता नहीं बदलता। बेटा बाप को नहीं बदलेगा। सभी धर्मों ने पिता कहा है

परमेश्वर है। हाथी के पांव में सबका पांव आ जाता है।सभी ने परमात्मा से परम पिता का नाता जोड़ा। सभी अवतारों ने धर्मों ने पूर्व में प्रगट हुए हैं। पिता जन्म दे सकता है मौत से नहीं बचा सकता है पिता के माध्यम से प्रगट हुआ हूं इस रिश्ते को निभाते हैं। अगर पिता ने जन्म दिया तो मृत्यु से नहीं बचा सकता। बुद्ध ने कहा मौत मुझे पकड़ नहीं सकती। गुरु मौत से परे कर देता है। No Sin No Sickness No Death. आत्मभाव में रहने से जीवन धन्य हो जाता है। स्वयं को उपलब्ध हो जाता है। अपने भीतर को जाग्रत करो। इस जन्म में रहते जीवन मुक्ति को प्राप्त करे। अपने को सक्षम बनाते जाओ। निरंतर अपने स्वरूप में रहो। तुम्हारा जीवन प्रेम में लहराता रहता है। तमाम दुनिया की ताक़तें थक गयी उसको नहीं जान पाई परंतु प्रेम द्वारा ही प्रभू की प्राप्ति होती है।

अपना उद्देश्य भगवत् प्राप्ति बना लो फिर जैसे भी जाओ किसी शहर में जाने का उद्देश्य बना लो। फिर चाहे साइकिल चाहे ट्रेन से पहुंच ही जाओगे। श्री कृष्ण ने अपने ग्वाल बालों सहित वन विचरण का मन बनाया। उन्होंने देखा एक पुराने कुयें में गिरगिट पड़ा था कोई नहीं निकाल पाया। कृष्ण ने निकाला वो एक देव पुरुष बन गया। विशेष दानवीरों में सबसे बड़े दानवीर थे भृग राजा, लेकिन सत्संग न मिलने के कारण भटकता रहा। राजा महाराजा को जाना तो भी क्या। इंद्रियों का संयम है पर उद्देश्य भगवत् प्राप्ति हो जाती है। आख़िर यश भी शरीर का है शरीर तो जल जाएगा तो तुझे क्या मिलेगा भृग राजा को सत्संग नहीं मिला तो गिरगिट की योनि मिली कृष्ण के दर्शन और वचन से उसकी मुक्ति हुई।

कर्म बांधते हैं शुभ या अशुभ कर्म। अशुभ से विरक्तता नहीं है तो कर्म पीछा नहीं छोड़ते। बुद्ध ने कहा कर्मातीत हो जाओ। उत्तम योगी बनो सहज योगी सच को जान लो। शरणागत भाव में रहो। सतगुरु की शक्ति से ही हम पार हो सकते हैं। अपने को मुक्त पुरुष जानो। सब विकारों के बंधन से छूट जाओ। रस्सी किनारे से बंधी है तो आगे कैसे बढ़ेगी। पुरुषार्थ भी तभी सफल होगा जब आसक्ति की रस्सी टूटेगी।

अहंकार मृत्यु की दिशा है। शरणागति समर्पण मुक्ति की निशानी अहंकार अंधा होता है सामने वाले तुच्छ नज़र आते हैं। बल पौरुष तुच्छ नज़र आते हैं उनके पास शक्ति नहीं है। रावण अहंकार में इतना फूल गया जो राम की शक्ति नहीं जान पाया और लंका का विनाश हुआ कृष्ण की शक्ति को कंस और दुर्योधन नहीं जान पाया अहंकारी कहता है मैं ही करता हूं अहंकारी का अहंकार एक दिन चूर चूर हो जाता है।

असुर और देव में संग्राम हुआ। देवता पराजित हुए इंद्र का अधिकार छीन लिया। दानवों ने राज्य को खंडहर हो गया। फिर युद्ध हुआ तो इंद्र ने पुनः निर्माण के लिए महेश्वर ने उसकी रचना बहुत सुंदर बनाई। इंद्र ने अहंकार किया। महेश्वर जी को कहा इसे तोड़ो फिर बनाओ। कई बार ऐसा किया। वो अपनी फ़रियाद लेकर ब्रह्मा के पास पहुंचा परेशान हो गया था। ब्रह्मा ने इंद्र को बुलाया और पूछा किस तरह नगरी का निर्माण कैसा कराना चाहते हो बोला जैसी अब तक ना बनी है ना बनेगी। वहीं एक चींटियों की कतार जा रही थी इंद्र के पूछने पर ब्रह्मा ने कहा यह सब चींटियां कई बार तुम्हारे जैसे इंद्र बनी और अब चींटी है। अहंकार नीचे गिराता है तो यदि अपना कल्याण करना है तो अहंकार से बचना होगा। अहंकार तुम्हारा चक्रवर्ती से कम नहीं होता 18000 घोड़े हज़ारों

हाथियों की सम्पदा और मान करता है तो अगर मान नहीं करते तो महान हो जाता है। हमारे पास घोड़ा तो क्या एक गधा भी नहीं है फिर भी दुखी हैं परेशान हैं। मैं बड़ा हो जाऊं यह अहंकार नहीं छोड़ता और अंधकार की ओर ले जाता है। समर्पण जीवन देता है हमारा साध्य परमात्मा है उसके लिए साधना करनी है साधना सत्य तक पहुंचाती है साधना लक्ष्य तक पहुंचाती है। विशुद्ध बुद्धि होती है देवी कृपा पाई है। साधना अनिवार्य है। जिससे साध्य तक पहुंच जाते हैं। नदी पार के लिए नौका ऐसा ही साधना है। मंज़िल पर वही पहुंचता है जो अपने साधना को जारी रखता है।

कनछेदी लाल पराक्रमी राजा था सारी दुनिया लोहा मानती थी दारा सिंह से कम नहीं थे शरीर हृष्ट पुष्ट थे। रानी से चर्चा बल पराक्रम की बात चल रही थी क्यों न आज हम आपसे मुक़ाबला करना चाहता हूं बोला चींटी हाथी से हारेगी उसमें क्या पौरुष है। राम ने रावण को हराया। रावण को सब बलशाली मानते थे इंद्र को भी झाड़ू के लिए रखा था। राजा ने कहा तेरे को क्या हराना है। रानी ने कहा सामने जो बछड़े को ऊपर ले आएगा वह शक्तिशाली है। वो उसे ऊपर लाया फिर छोड़ दिया। रानी ने भी यह किया। तुममें और मुझ में क्या अंतर है। रानी ने अभ्यास जारी रखा और जब वह बछड़ा बैल बन गया फिर प्रतियोगिता की। राजा बैल को नहीं उठा पाया रानी ने उठा लिया तो साधना से ही शक्ति मिलती है।

पत्र 35 - गुरुप्रसाद का अमृत रस पान

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में मस्त रहने वाले आप सभी के सब प्रेमी यहां पहुंचते रहते हैं। गुरु प्रसाद का अमृत रस पान करके मस्त होकर जाते हैं। हर एक की गुरु के पास अमानत है सभी आनंदित होते हैं। सच्चे भक्तों को ही सच्चा सत्संग मिलता है।जो यहां पहुंच गया उसको निश्चित ही यह मोक्ष पद मिलता है तभी प्रभू उनकी मुलाक़ात करवाता है। बस जीवन में हरेक के प्रति निष्काम प्रेम सेवा भाव बना रहे किसी का भी अवगुण ना दिखे तो संसार सुंदर हो जाता है। सीमा भी मज़े में होगी उन्हें भी ये डायरी की वाणी photostat करा के दे देना।

पत्र 35 - कां टे दार पे ड़ बबू ल का पौधा

अज्ञान में ही हम आनंद दूसरे में ढूंढते हैं जैसे कांटेदार पेड़ बबूल का पौधा ऊंठ खाता है। मुख से खून निकलता है वो सोचता है कांटो से मज़ा आ रहा है ऐसे ही कुत्ता हड्डी में रस समझता है तुम भी औरों में मज़ा ढूंढते हो मैं पदार्थ इकट्ठा कर लूं तो मैं सुखी हो जाऊंगा। मानव और ऊंठ में अंतर नहीं है। दोनों ही मज़ा बाहर देखते हैं माया के आगे जीव की हार हो जाती है भगवान ने भी कहा माया को तरना दुस्तर है। ये गुण मयी है देवी है ये भी परमात्मा की प्यारी है उन्हें पसंद है माया के दो स्वरूप बताए हैं एक विक्षेप एक आवरण असत्य को सत्य दिखाती है इसमें आसक्ति हो जाती है। संतोष दया तप दान भक्ति मिलाती है। आसक्ति दूर हो जाती है। जगत की इच्छा को भोगने को आसक्ति कहते भगवान की इच्छा को भक्ति कहते हैं। संख्या को यहां से वहां ले जा सकते Calculus में बाकी स्थान बदल सकते हैं। एक मम की ओर एक सर्व के लिये। इच्छा ख़त्म हो जाये तो संसार में नहीं रह सकते कैवलय पद को प्राप्त होते हैं।

जीवात्मा ने माया से प्रीति की तो फस गये। जीवन में त्याग आ जाये ये कठिन है पर असंभव नहीं है सिद्धि तब मिलेगी जब तीव्र उत्कंठा हो। भूख हो तो खाने का स्वाद आता है। साचे नाम की लागे भूख उत्भूखे खाय चलिये दूख। निश्चय करो आज ही मुक्ति प्राप्त हो जाये इसकी लगन होनी चाहिये जब प्रेम नहीं भाव नहीं तो चाहे कितनी माला फेरते चलो कोई फ़ायदा नहीं। माला फेरत जुग गया गया न मन का फेर कर का मन का डार दे मन का मनका फेर। मन को ही बदलना है ये शक्ति

सत्संग व सत्गुरु से मिलती है। हमारे जीवन में नव संचार हो जाता है बैटरी Recharge होती है। अपने स्वरूप का भान होता है भगवान ने कहा तुम मेरे अनन्य भक्त हो तुम्हें दिव्य दृष्टि देता हूं विराट स्वरूप को देखो। अर्जुन को विश्व रूप दर्शन कराया। अर्जुन हैरान हो गया अनंत हाथ भुजा वाला तुम्हें देख रहा हूं भगवान ये सब द्रोण आदि आपके मुख में प्रवेश करते जा रहे हैं अस्त्र शस्त्र सहित। भगवान ये सब क्या है? भगवान ने कहा ये मरे हुए है इन्हें मारो तुम्हें भय शोक न होवे। भगवान से अर्जुन क्षमा मांग रहा है कभी त्रुटि की हो तो क्षमा कर दीजिये। मुझे अपना वही स्वरूप दिखाओ सांत्वना दो भगवान ने क्षमा कर दिया। अर्जुन ने हे यादव हे कृष्ण कहकर संबोधन किया था ये कोई गलती नहीं की थी ये शाश्वत सत्य है। ये वर्ण भेद से अतीत है उसने क्षमा मांगी और उन्होंने कर भी दी। कृष्ण का रंग चाहे जो रहा हो पर भगवान ने माफी दिया है। ओम साक्षात परमात्मा का नाम ले और स्मरण मेरा करो। वैदिक ऋषि ओम का जाप करते आये हैं। ओम का प्रर्यायवाची राम शब्द है चाहे जो भी चाहे जप लो पर अंदर अनुभव करो भगवान ने कहा ज्ञान के बाद तुम्हें दृष्टि मिलेगी।

ये दृष्टि संजय वेदव्यास को भी थी। क्या समझायें सारा जग अंधा एक दुइ होइ तिन्ही समझाऊं पर यहां तो सब के सब अंधे है जब दृष्टि मिली तो अर्जुन ने सब देखा कहत कबीर सुनो भई संतों बिन ज्ञान भटक गया बंदा था तो सेवक पर दिव्य दृष्टि मिलने से सब मिल गया। सत्गुरु वो है जो सत्य नित्य को जानते हैं वो सत्गुरु हैं। बहुत से संत मेरे इस भाव को जानकर मुक्त हो गये हैं। अनन्य भक्ति के द्वारा प्राप्त होता है भक्ति का अर्थ है जुड़ना देखने में सुलभ है। अपने बल पर नहीं मेरे पारायण होकर करो। संपूर्ण जगत में जो वैर भाव से रहित है उसने देखा

राग द्वेष मोह ममता इच्छा आसक्ति से अपने को खाली करो। कूड़े के ढेर पर सारी दुनिया कूड़ा डालती है। तुम्हारे मन में विकारों का कचरा है तो सब और भी डालेंगे। पर हृदय को साफ़ करके उसमे ईश्वर को बिठा दो तो सफ़ाई हो जायेगी जो तुम्हारे साथ रहेगा वो इसी रंग में रंग जायेगा। अपने को ही बदलना है दुनिया को बदलना चाहे भी तो नहीं बदलेगी

Change your Attitude

Change your Vision

अपनी दृष्टि बदलने से सृष्टि ही बदल जाती है। अपनी दृष्टि का दोष हटाना है

जब तक न थी हमें अपनी खबर

हम देखते रहे औरों के ऐबो हुनर

पर अब जब पड़ी अपनी बुराइयों पर नज़र

तो जगत में कोई बुरा न रहा।

अपनी आंख का ही ऑपरेशन कराना है जो सत्गुरु ही कर सकता है। ज्ञान अंजन गुरू दिया अज्ञान अंधेर विनाश हरि कृपा ते संत भेटिया नानक मन प्रकाश भाग्य बड़े जब हरि सतगुरु बन जीवन में आ जाये। ऐसा गुरू मिलना ही बड़े भाग्य की निशानी है। सत्गुरु ने मुर्दों में जान फूँकी है। अंदर की सफ़ाई करके अपने शुद्ध स्वरूप में खड़ा किया है। विकारों सहित यह देह तू नहीं है। ये विकार एक एक करके निकालोगे तो नहीं निकलेंगे। पेड़ को जड़ सहित उखाड़ना है फिर तो वो स्वतः ही

सूख जायेगा। मन निरहंकारी हो जाएगा। जीते जी गुरू से मृत्यु खरीदनी है। Buy Death from your Guru & Buy Poverty (गरीबी) from your Guru कुछ भी मेरा नहीं है सब सत्गुरु को सौंप दिया। लोग आरती में कहते हैं तन मन धन सब है तेरा बाकी इन पर क़ब्ज़ा मेरा तो दुनिया कहती है कब + जा। कब जाएगा जो अपना क़ब्ज़ा छोड़ेगा। निरासक्त होकर रहो आसक्ति ही बंधन में बांधती है। मोह की दलदल से बाहर निकलेंगे तभी ज्ञान का अनुभव होगा और निश्चय होगा। अपनी हस्ती को गुम करेंगे तभी सच्ची मस्ती आयेगी। जीव भाव गुम हो जाये। मैं मुआ तो ख़ुद ख़ुदा हुआ ऐसा नहीं कि गुरू के मिलने से तुम महात्मा हो जाओगे आनंद मिल जाएगा अपने को भीतर बाहर से शुद्ध रखा मन साचा मुख साचा सोय अवर न पेखे एकस बिन कोय नानक यह लक्षण ब्रह्मज्ञानी होय। ब्रह्मज्ञानी की गत ब्रह्मज्ञानी जाने। एवड़ ऊंचा होवे कोई तिस ऊंचे को जाने सोई। जब तुम इतने ऊंचे उठोगे माया से तभी गुरू को पहचान सकते हो। गुरू ने कैसे अपने को सबके आगे मिटाया है तुम भी सबके चरणों की धूल बन जाओ मिटा दे अपनी हस्ती को अगर तू मर्तबा चाहे। कि दाना ख़ाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है। जिस मरने ते जग डरे वो मो कहु आनंद क्योंकि मरने ते ही पाइये पूरन परमानन्द सत पुरुष जिन जानिया सत्गुरु तिस का नाऊं जिस मिलये मन होय आनंद सोई सत्गुरु कहिये। अंदर आनंद की शहनाई बजने लगे। आ गए वो मिट गयी तनहाइयां दिल में बजी प्यार की शहनाइयां। आनंद आनंद भया मेरी माये सत्गुरु में पाया सत्गुरु पाया सहज सेती मन वजियां वधाइयां। सच्चे आनंद की प्राप्ति गुरू ही कराता है हमारे जीवभाव के आवरण को हटाकर सच का अनुभव करता है। हमारा आचरण सुधर जाता है तो विचार भी बदल जाता है फिर तो ना कोई

वैरी मीत हमारा जित वल देखां उत वल प्यारो। गुर शब्दी मन को है टिका दिया ज्ञानी ने गुप्त ख़ज़ाना पा लिया। रमता राम रोम रोम में विराजमान है।

The whole world is filled with God. There is nothing but God. In the beginning was Word. Word transplanted into the World & Lord Himself is hidden in it. परमात्मा इसी जगत में जगदीश रूप से विराजमान है उसे वहीं अनुभव करना है पर उसके लिये सूक्ष्म बुद्धि करनी पड़ती है।

हरि भयो खांड रेत में बिखरयो हस्ती चुनयो न जाये।
कहे कबीर गुरू भली बुझाई चींटी होय चुन खाय।

अहंकार हाथी के समान है अहंकार से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी Be Nothing Do Nothing. गुम होके वेख नज़ारा आप सारा महबूब की सूरत में।

Seer बनो Doer नहीं। कर्ता सो भरता सो मरता। कर्ताभाव का काला नाग सभी को डस कर बैठा है। ना अहम कर्ता यह औषधि है। इंद्रियां सहज अपने कर्म में वर्त रही है। मैं कुछ करने वाला नहीं हूं। गुण गुणों में वर्त रहे हैं। प्रकर्ति Automatic कार्य कर रही है।

हुकमे अंदर हर को बाहर हुकुम न कोय
नानक हुकमे जे बुझे त हो मैं कहे न कोय
मैं मैं ना कर बांवरे खाली दोनों हाथ।

न मैं हूं न मेरा है मैं का सर्कल गुम करो तो मेरा भी ख़त्म हो जायेगा. यही मनुष्य का बंधन है।

Your own self Pramila

पत्र 36 - अब दे हरादू न में भी

अब देहरादून में भी प्रेम का डेरा लगा है और मंसूरी से भी कुछ प्रेमी ये आनंद रस चख रहे हैं। सभी की याद हमेशा रहती है क्योंकि याद है तो आबाद है और भूल गये तो बर्बाद है। बस यह जीवन माया में बर्बाद होने से बच जाये और अपने सही लक्ष्य पर पहुंचे। यही लक्ष्य रहे।

Your own self

Pramila

पत्र 37 - करोड़ों सूर्यों का तेज गुरु में है

करोड़ों सूर्यों का तेज गुरु में है फिर भी दीपक हो जाता है। गुरु बिन घोर अंधार। शिष्य को निरंतर आगे बढ़ाने का तरीक़ा सलीका उसके पास है।

बिन गुरु ज्ञान कहा से पाऊं।
दीजो दान हरि गुण गाऊं।

साधू तो हज़ारों लाखों पर सतगुरु का मिलना मुश्किल है।साधू कमंडल में भिक्षा लेकर वही खा लेते है फिर साधू से कहा थोड़ी देर रुक जाइए। फिर बैठे बातचीत करी फिर बोला थोड़े से चावल हमारे घर में बिखेर कर जाओ तो संत ने कहा तू दो रोटी के बदले अन्न धन की बढ़ोतरी चाहते हो। संत ने कहा कि मैं चावल तो डाल दूं पर याद रखना तुम्हें भी यही कमंडल मिलेगा। संत सेवा वही है जो सेवा करके खुश हो जायें और मांगे नहीं। सेवा के फल से कुछ लेना देना नहीं।

एक बार भगवान के सर में दर्द हुआ। 108 पटरानियां 16000 रानियां सभी खड़ी हो गई सर दर्द ठीक करने के लिए लेकिन कोई औषिधि असर नहीं कर रही थी। उन्होंने उपाय पूछा तो उन्होंने कहा अपने पैर धोकर कोई प्रेमी वो पानी पिला दें। वो कई जन्म नर्क में जाना पड़ेगा। सब रानियां इधर उधर हो गयी। रानियों ने कहा आप गोपियों को खूब याद करते हो उन्ही से पानी ले आते हैं। राधा ने कहा हज़ार क्या करोड़ जन्म भी नर्क जाना पड़े तो भी जायेंगे। भले कितने कष्ट भी हों पर मेरे कृष्ण का दर्द ठीक हो जाए मुझे और कुछ नहीं चाहिए। यही

सच्चा प्रेम है जिसने खुद कष्ट सहकर भी अपने प्रीतम को सुख दें। प्रेमी की अपनी कोई मांग नहीं होती। वह तो केवल देना ही जानता है।

Love is Like a one way traffic. अगर कुछ मांग लिया तो वह तो मज़दूरी हो गई। जिसको यदि कुछ चाहिए तो भक्ति शुरू नहीं हुई।

तीन प्रकार के भक्त

(1) अर्थार्थी - जो अर्थ के लिए चाहता है।

(2) दुःख परेशानी में याद करते हैं (आर्त)। ज़रूरत पड़ने पर शक्ल दिखायें और वैसे कभी ना आयें तो शायद तुम उन्हें नहीं चाहोगे पर भगवान फिर भी सुनता है। मतलब निकल गया तो पहचानते नहीं सबसे कम कोटी के भगत हैं। घर घर में भगवान की मूर्ति भी रखता है पूजा भी करता है पर पूर्ण समर्पित नहीं है।

(3) पर भक्त सच्चा कहता है जिसके सर ऊपर तू स्वामी सो दुःख कैसा पावे। बोल न जाने माया मदमाता मरणा चित्त न आवे। मैं क्यों डरुं किससे डरुं। सत्संग मिले तो भक्ति और भाव का पता चलता है।

सुत दारा और लक्ष्मी पापी को भी होए
संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोए।

जिसकी परेशानियां दूर होनी हैं तभी सत्संग में पहुंचता है उसका भाग्य उदय हुआ है।

हरि नाम के हीरे मोती मैं बिखरावां गली गली
ले ले कोई राम का प्यारा मैं शोर मचावां गली 2।

संसार के बाज़ार में संत भी अपनी दुकान खोल कर बैठे हैं।

“रहिमन ते नर मर चुके जो कहुं मांगन जाए
उनसे पहले वे मुए जहि मुख निकसत नाहि”

मांगने वाले को ना देना ख़राब है। बहाने मत करो झूठ मत बोलो कि हमारे पास नहीं है। कहेगा दाल रोटी भी नहीं है खाएगा छप्पन भोग। सदैव देते चलो। सतगुरु से देना सीखो। बाप से बेटा न मांगे बाप बेटे से ना मांगे। लड़के मेहनत करना नहीं चाहते और मांगते हैं। रामतीर्थ अपने को बादशाह कहते थे। जितना इस पेट को चाहिए उतना देना चाहिए। उससे अधिक रखेगा तो उसे दंड मिलेगा। अधिक का दंड रोग मिलता है। ये खुद या पत्नी पुत्र या पोता रोगी होता है। ऐसे जो संग्रह करते हैं उनका दो जगह पैसा ख़त्म होता है क़चहरी में या दवाई में। कोई रोगी है तो अपने को देखो कि कहीं गलत कर्म किया गया है। संसार के सुख हैं पत्नी अच्छी है निरोग काया है सब हैं पर यदि संसार में प्रतिष्ठा ना मिले तो परेशान हो जायेंगे। दामाद बुरा मिला तो दुखी हो जाएगा। नाती अच्छा ना हुआ तो परेशानी।

उतानपाद और प्रियवर दो बेटों ने आगे वंश चलाया। ध्रुव पोता था। डॉक्टर भले ही आवे दवा करने के लिए नहीं नमन करने आवे। जो दुःख आ रहे हैं, वह अपने जीवन के कर्म ही हैं। आपकी कहानी आपने ही लिखी हैं, इस जन्म में या पिछले जन्म यदि पाप किया है तो जीव शुद्ध होना चाहिए। दान में भी छल कपट करते हैं। मोहे कपट छल छिद्र न भावा

अपने लिए अच्छी सुपारी और भगवान के लिए सस्ती ख़रीदेंगे। हर ख़राब चीज़ प्रसाद में चला देनी चाहिए। यह सब छल छिद्र है। प्रसाद

में सड़े गले फल। अंधा लड़का खोटा पैसा मंदिर में दे आते है। पर माता मदालसा की तरह एक एक को सत्य मार्ग पर चलाया। हर एक का जीवन देने का जीवन है। मैं मेरे के लिए नहीं जीना

जिन पुरुषों के मन द्वारा इंद्रियां नहीं जीती गईं उनका जीवन किसी काम का नहीं है। संसार उल्टे पेड़ की तरह वेद उसके पत्ते हैं। पुरुष ने श्रद्धा से याद किया वेद उसके लिए उतार आती हैं। वेदों को तत्व से जानना है। पूर्ण ज्ञाता हो जाओ। वैराग्य की तलवार से इस अज्ञान के पेड़ को काटना है। काम क्रोध शत्रु अंदर हैं, वहीं झगड़े हैं। अकबर का साम्राज्य नष्ट हो गया हस्तिनापुर का क्या हुआ अशोक सिकंदर को भी क्या प्राप्त हुआ। महाभारत में हर प्रक्रिया में से स्मरण चलता रहे। ये संस्कृति ही दर्शन है शास्त्रों के अविष्कार। जयद्रथ ने अबला का अपहरण किया। अर्जुन ने शस्त्र तैयार किया और उसका रथ चूर चूर कर दिया। भगवान से कहा गया कल युद्ध समाप्त हो जाएगा भीष्म पितामह हमारे पूज्य हैं अगर सम्मान करना है तो पीठ दिखा दो। भीम से कहा पीठ दिखा दो भीम ने कहा पीठ नहीं दिखाई मुक़ाबला किया तो वध कर दिया। दुर्योधन का मेवा त्यागे साग विदुर घर खायो। खाने पीने की नीति पर ध्यान देना है। जहां से लौटकर पीछे आना जाना नहीं होता। सर्वज्ञ अनादि पुरुष। धर्म शास्त्रों के तत्व को जानो। गीता सबको पढ़नी चाहिए। लोग सम्प्रदायों में अटक गए हैं तरह तरह के वेश बनाते हैं।

मन न मूंड़ाया मूंड़ायो जोगी कपड़ा।

जहां सतगुरु मिले वहां सब संशय का समूल नाश। भजन एक नशा है जिसके पीने के बाद पक्षियों में पौधों में पशुओं में देखा गया है। मन

मतवाला हो जाता है। हस्ती का प्याला चूर चूर हो गया। महापुरुष कहीं जन्मा हो बस वो अपने निरंतर चिंतन में लगता है। पाप करने हैं तो दूसरी फ़ैक्टरी लगा लो। जहां सुरत टिकी ब्रह्म में एक रूप हो जाओगे।

कर्मों की सफ़ाई ज़रूरी है। हर धर्म में ठगी चोरी पाप है। हिंदू धर्म इस्लाम धर्म में सतगुरु और मुर्शिद कहते हैं हक़ पराया नानका उस सूअर उस गाय, उसका कोई साथ नहीं देगा। मेहनत की रोटी रोज़ी खाय किसी के मुख से निवाला ना खींचे। आज कल का धर्म पैसा रुपया Status बनाने में लगे हुए हैं।

इंसान की जात इंसानियत है। अल्लाह के नूरे जलाल से सारी सृष्टि पैदा हुई है। मानस की जात एक है कोई पहचाने। जिन प्रेम किया तिन ही प्रभ पायो। आपने कई धर्मों की बात की है पर भेद भाव नहीं गया। ऊंची जात ऊंचे धर्म वाला मर रहा है गरीब अपना खून देता है Group का Blood एक होना दिखाता है कि हम सब एक हैं। ये बात सत्संग में ही सुनाई देती है, हम सबका तत्व एक ही है। पूरा शरीर सबका एक है बाक़ी भेद है विचारों का अपना धर्म एक ही है। ओम् शब्द की पहचान करो उसी से सृष्टि बनी है। सिख धर्म भी कहता है एक ओंक़ार नाम अलग 2 हैं तत्व एक ही है। हम सब एक हैं मालिक एक है। पढ़ लिया सुन लिया पर अमल करने वाला कोई कोई है। धर्मों ने सब एक बताए। एक सोने से तरह तरह के गहने बना देता है नाम अलग अलग हो गए हैं। सब गहनों को गला दो तो पहले वाला रूप आ जाएगा। माता के गर्भ में शरीर बनते हैं एक जैसे। बाकी सब धर्मों के अनुसार नाम अलग भाषा अलग हो जाती है हमारा मालिक एक है। सत्संग में ही ईश्वर की बात सुनाई जाती है। पर लोग सौदे बाज़ी करते हैं सत्संग की क़ीमत नहीं कर

सकते हैं। जो संसार में आते हैं वह राम नाम का डंका बजाते हैं। अपने स्वरूप से जुड़कर एक हो जायें। गुरु के वचन अनमोल हैं इन्हें मोल में न बेचो ये बिना दाम बिना मोल बिकती है।

ईश्वर तेरे जीवन को मालामाल कर देता है जो अतिथि द्वार पर आया है उसे अच्छी तरह से पहचानो। अ + तिथि बनकर कभी भी आ सकता है। सदा अपनी सुर्त जोड़ कर रखना। धरती के रिश्ते बदल सकते हैं बाप का रिश्ता नहीं बदलता। कोई बाप का नाम नहीं बदल सकता। पति पत्नी के रिश्ते या अन्य रिश्ते बदले जा सकते हैं पर परम पिता परमेश्वर कहते हैं। पिता के साथ परम पिता का रिश्ता जोड़ा है। सब रिश्ते परमात्मा से जोड़ दो। जब बुद्ध बनकर सिद्धार्थ आया पिता को अच्छा नहीं लगा कि भिक्षु बनकर आया है। बुद्ध ने कहा आप जन्म दे सकते हैं मौत से नहीं बचा सकते हो। बाकी मैं तेरे माध्यम से आया हूं। आपका नाम आबाद हो तब आया हूं। शुद्धोधन का बेटा सिद्धार्थ था ये सब जानेगा। पिता ने कहा मैं स्वयं ही मर जाऊंगा। मौत मुझे पकड़ नहीं सकती मैं उसे जीत कर आया हूं ये बुद्ध ने कहा। अब मैं परम पिता के गोद में सदैव खेलता हूं। मेरा रिश्ता युवराज वाला नहीं है। मेरा एक नवीन जीवन नवीन रिश्ता जोड़ा है। अब आबाद हो गया हूं। संसार का रिश्ता आबाद नहीं कर सकता। अपने जीवन में राबिया मंज़िल पर पहुंची। स्वासों के रहते रहते इस मोक्ष को प्राप्त करना है। समर्पण का भाव निरंतर बना रहेगा। तेरा जीवन सदा 2 लहराता रहेगा। जिसे रामायण गीता ग्रंथ भी ना गा सकेंगे।

सजग होकर रहें। भाषण देने वाले बहुत हैं ईश्वर की ऐसे ऐसे प्राप्ति हुई घोषणा कई करते हैं कि हमें भी साक्षात्कार हो गया। अब भगवान

ही उनकी रक्षा करे। कई कहते हैं हमारे पास आओ साक्षात्कार करा सकते हैं। श्रद्धा पक्की होगी तो एक घंटे में करा सकता हूं। लोग आश्चर्य करते हैं कि जब ऋषि मुनियों को इतना समय लगा तो तुम एक घंटे में करा सकते हैं। पर सच्चे सेवक भक्त कभी ऐसी बातों में भ्रमित नहीं होते। अपनों के साथ ग़द्दारी नहीं करनी चाहिए। तुम्हारे घर के बच्चे नहीं सुधर नहीं सकते। यहां सुधर जाते हैं क्यूंकि निष्काम भाव से गुरु हरेक को ब्रह्म रूप होकर देखते हैं।

अपना दिल दिमाग़ शांत रहे। बाहर से चाहे कितने भी व्यक्तियों से मिलना हो जाए। सेवा किसी से नहीं लेनी चाहिए। अपनी बुद्धि का Balance नहीं खोना चाहिए अपनी बुद्धि को स्थिर रखो। जो हो रहा है सो होता है। हम गलती यही करते हैं कि दूसरों को सुधारने में लगे रहते हैं। समय नहीं गंवाना है।अपना शरीर रहे न रहे बाकी डरना नहीं क्यूंकि तू अमर आत्मा है। करोड़ काम छोड़कर सत्संग करो। परिस्तिथियां सब ठीक हो जाती है। मुझे साधू बनना है। माधवभाई ने सन्यास ले लिया। बेटियों की चिंता रहती थी। चिंता छोड़ दी तो अच्छे घरों में हो गई। योग क्षेम भगवान उठाता है। सत्संग के विचारों से सब आदतों से छूट जाते हैं। पहले लोग विश्वास नहीं करते कि छोटे मुंह बड़ी बात करते थे। सभी टीका टिप्पणी करते हैं कि बड़े चले हैं ज्ञानी बनते जा रहे हैं। उद्दालक रातों रात भाग गए। इंद्रियों से कितने सुख लिए फिर क्या मिला। भगवान अनन्त बल के धनी हैं। प्रभू ही रक्षा करता है। मन के दो तीन दिन होते हैं टिकने नहीं देता। मौन मैं बैठें, अपने साधना में बैठें। गुरु के पास आने का मक़सद होना चाहिए। मन जीते जग जीत।

पकड़ कर पैर मुर्शिद का भव सागर पार कर लें। ये गुरु से ही प्राप्ति होती है गुरु के आशीर्वाद से ही सम्भव है। जो कार्य तुमसे हुआ ये प्रभू की कृपा से हुआ तो अहंकार टूट जाता है।

सुकरात ने कहा दुनिया के जितने मूर्ख हैं वो मेरे गुरु हैं क्यूंकि उनके दोष को देखकर मैं अपने दुर्गुण दूर करने का अभ्यास करता हूं।

भगवान के नाम से जो मन बुद्धि की वासना को नष्ट करते हैं।

ध्रुव को 36000 वर्ष का राज्य सुख मिलेगा। प्रभू की कृपा हो गयी तो सभी उसके दर्शन के लिए आ गए। ब्राह्मी व ईला दो पत्नियां थी भगवान के पार्षदों ने कहा आपको अब तप करने की आवश्यकता नहीं आपने 5 वर्ष में तप कर दिया।

संत भक्त मृत्यु को भी जीत लेता है। भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान मिल गया। मृत्यु ने ध्रुव से कहा आप मुझे सीढ़ी बना लो। और आप विमान में चढ़ जायें। शरीर नीचे छूट गया। ध्रुव को विमान में बैठ कर मां की याद आई। उनका दर्शन करने के लिए जाना है। मृत्यु लोक में जन्मदात्री को मैं नीचे छोड़ आया हूं उसे भी भगवत धाम में ले जाऊंगा। पार्षदों ने दिखाया हम उसे भी अपने साथ ले चल रहे हैं। वो परिवार पवित्र हो जाता है जिसमें एक भक्त का जन्म होता है। जननी जन्में शूरवीर दाता बलवीर मां सत्य मार्ग भी दे सकती है खोटा मार्ग भी दे सकती है।

मां बेटे का पेट टटोलती है थोड़ा सा तो खा ले। पर पत्नी जेब टटोलती है। मां के आश्रय में गलत संस्कार देने से जीवन बर्बाद भी कर सकती है।

उठ फ़रीदा सुतिया उतिष्ठ जाग्रत उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है। Awake O Man Awake सब जाग जाओ। संत आते हैं तुम्हें जगाने के लिए। एक व्यक्ति ने कहा हम नीचे आप ऊपर बोले हम चौकी पर चौकीदार हैं, तुम्हें जागते हैं ग्रंथ जगाते हैं तुम तो ज़मीन पर ज़मींदार हो। जो खुद जगा है, वो ही तुम्हें जगा सकता है। मोह की नींद से जाग जाओ।

Your own self

Pramila

पत्र 38 - सभी का प्रे म उमड़ उमड़ कर

सभी का प्रेम उमड़ उमड़ कर आ रहा है। संगम के शहर में सभी के प्रेम भरे दिल मिलकर एक हो रहे हैं। और अपने जीवन के मक़सद को पा रहे हैं। आप सभी की क़ुर्बानी है इस ज्ञान व प्रेम की बगिया को हरा भरा रखने की। सभी का अथक प्रेम और विश्वास सभी के जीवन को चमका रहे हैं। बस इसी निष्काम कार्य में Busy रहें।

Your own self

Pramila

पत्र ३१ - कोई यदि कहे तु म्हें प्रे म नहीं

कोई यदि कहे तुम्हें प्रेम नहीं है तो तुम अपने निश्चय से कहो नहीं मेरे अंदर प्रेम है।

अच्छे बुरे की व्याख्या ना करो। सूर्य है इसका क्या प्रमाण है। सूर्य ही प्रमाण - शांति रूप परमानंद रूप हो। फिर कोई भी कह सकता है मेरे अंदर प्रेम जाग्रत हो गया।

आदमी बड़ा बेचैन है उठते बेचैन है। फिर कहे मैं बड़ा प्रेम में मस्त हूं। एक मस्ती एक निश्चिंतता नज़र आए। शांति ही प्रेम का स्वरूप है। भक्ति का स्वरूप शांति है।

शांति रूप परमानंद रूप हो जाओगे। प्रेम का स्फुरण होगा। प्रेम या भक्ति की खोज में ना निकलो। प्रेम कैसे करे शांत रूप हो जाओ। तुम कभी भी कहीं भी दिन दोपहर शाम शांत रहो प्रेम पैदा हो जाएगा। उसका आनंद लो तभी भक्ति अंदर प्रगट हो जाएगी। जीवन में यदि तूफ़ान आता है तो अपने को अर्पण कर दिया फिर उनका काम है परिवार समाज,शरीर को भी समर्पण कर दिया। कोई क्या कहेगा ये सोचना छोड़ दो। जब तक प्रेम की सिद्धि नहीं होती तब तक कर्म को छोड़ना नहीं नियम को छोड़ो नहीं।

जिसने अपने को जान लिया वह विश्व को समझने नहीं जाएगा। महाराज शुद्धोधन ने कई उपाय किए उन्हें संसार में लिपायमान होने के पर समय पर उनके अंदर का बुद्धत्व जाग्रत हो गया।

शिव का ना आदि है ना अंत है। शिव तो सदा से है सदा के लिए। संसार की ख़ुशियां Temporary हैं। जब जागेंगे तो सारा संसार मिथ्या भासेगा। सपने की हिंसा द्वेष बदले की भावना जाग्रत में कुछ नहीं रहेगी।

जो प्रभू बुलवाना चाहे वही बोलें। ऐसे बोलें जिस पर मैं भी चल सकूं आप भी चल सकें। Practice What You Preach.

जो हमारे आदरणीय होते हैं उनके द्वारा दी हुई मिट्टी की भी महानता है। एक नूर से ही पूरे जगत की उत्पत्ति हुई। उसके जानने के मार्ग भी कई हैं। एक ब्रह्म ही सत्य है बाकी सब मिथ्या है। एक परमात्मा के सिवाय किसी का अस्तित्व है नहीं। संसार मिथ्या है उसे देखकर आप दुखी भी हैं सुखी भी हैं, सपने से जागो तो कुछ नहीं रहेगा।

संसार रंगमंच है बाकी सब इसके पात्र हैं। अभिनय करने को मिला है उसे कुशलता से करते रहो तब सभी वाह वाह करते हैं। नाटक में यदि भिखारी है तो अभिनय बिलकुल वैसा ही होना चाहिए। लोग चवन्नी अठन्नी फैंकने को मजबूर हो जायें। तुम्हें भी मानव का अभिनय करने को मिला है दानव का नहीं तो पूरी मनुष्यता से उसे करो। जो सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है और जिससे छल है वो धर्म नहीं है।

एक ये ही अमृत ऐसा है जो कान के द्वारा पिया जाता है। शास्त्र के बिना शस्त्र की रक्षा नहीं हो सकती उसमें पारंगत द्रोणाचार्य को था।

एक पीने वाला एक पिलाने वाला जब पिलाने वाला दिलदार हो तो पीने में कंजूसी ना करना।

अपना अहंकार विसर्जित हो जाता है। तब कदम कदम चूमता सारी प्रकृति के द्वार।

भीतर नहीं देखता सारा समय बाहर ही देखता। स्वयं अपने को देखा ही नहीं। कितना दूर हो गया है अपने से। स्वयं से स्वयं को जान कर जीव यही एक मात्र तेरी पाठ पूजा है। यही तेरी एक मात्र यत्न से भरा जीवन है। महातीर्थ है। तीर्थ द्वार तेरे अंदर। छाती चीर के हनुमान ने दिखा दिया। सरलता सहजता की मूर्ति जिसने मान का हनन कर दिया। अभिमान भी छूट जाएगा पर मान बढ़ाई ईर्ष्या नहीं जाती। इन्हें ही निकालना है। स्वयं को गंवा के उसको पाना है फिर संसार के किसी वैभव की आवश्यकता नहीं रहेगी। भगवान ने हनुमान को इतना प्रेम दिया कहा ये मेरे लिए भरत जैसे भाई के समान है। मन वचन कर्म से समर्पित हो जाए।

एक मौलवी नमाज़ पढ़ कर ये बोला ख़ुदा की खुदाई ख़ुदा ही जाने। किसान ने कहा मैं जानता हूं। ऊबड़ खाबड़ स्थान पर ले गया बड़े बड़े गड्ढे खुदे थे। बोले ये ख़ुदा की खुदाई है ये करिश्मा ख़ुदा का ही है। दोबारा मौलवी बदल के बोले। आत्मा के तत्व को परमात्मा ही जाने। फिर किसान बोला मैं जानता हूं। बादशाह ने कहा बताओ इस समय मौलवी के मन में क्या है? बोले राजा को शहज़ादा हो जाए। मौलवी ना कैसे करे। बोला यही बात है। नहीं कहता तो मारा जाता है।

बड़ा वो है जो सत्संग में रमण करता है। परम सत्य एक आत्मा है। मन को समेट कर सत्संग करो।

पत्र ५० - किसी शक्ति को बचाने के लिए

किसी शक्ति को बढ़ाने के लिए संयम ज़रूरी है। Telepathy ऐसी है कि यदि तुम परमात्मा को याद करते हो गुरु को स्मरण करते हो तो उसमें भी तुम्हारा ध्यान लग जाए। भाव तरंगें पहुंच रही हैं और उस तक भी तुम्हारे भाव पहुंचेगे। तुम्हारे अंदर भय है तो अगले के अंदर भी डांटने का भाव आ जाएगा। शैतान को याद करो तो शैतान प्रगट हो जाता है। तुम अंदर से अपनी सदभावना भेजो तो वो भी अपने आप Change हो जाएगा। एकाग्रता की आवश्यकता है। अभ्यास और योग के द्वारा कहीं जाने ना दो। योग का एकाग्रता का प्रभाव आएगा तो परमेश्वर को पाने का मार्ग मिलेगा। भीतर और बाहर की शक्ति दोनों का मेल हो जाए तो आप बड़े कार्य कर सकते हैं। एक संकल्प शक्ति Will Power विचार शक्ति आत्मिक शक्ति तीनों के लिए एकाग्रता की ज़रूरत है। काम शक्ति के ही तरह तरह रूप हैं। प्राण शक्ति ही मुख्य शक्ति है। आपकी चेतना शरीर में फैली हुई है। Electricity के Circuit हैं। आत्मा विद्युत भेज रही है। विद्युत से तार जोड़ने ज़रूरी हैं। विद्युत कक्ष भी है उसमें इतने प्लग हैं किस मोहल्ले की बंद करनी है किसकी जलानी है। तुम भी जो निर्माण करना चाहो सो कर सकते हो। आदत पड़ गई है रोज़ नए-नए काम करने की लेकिन सबके लिए साधना शक्ति की ज़रूरत है। आप अपना कार्य नियमित करते रहिए। आपकी सब शक्तियां प्रगट होनी हैं और आप को अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है।

मक्कार आदमी आंख मिलाकर बात नहीं करेगा। झूठे का झूठ आंख में तैर जाएगा। आंखो से दिख जाता है। जहां ज़ुबान चुप है वहां आंखे बोलती हैं। प्रभू आंख तेरी तलवार है ख़ंजर है।

इस जोगी दे नैन कटोरे, बाज़ा वांग लैंदे डोरे

बाज़ का देखना साधारण नहीं होता। वो सीधा निशाना मारता है। कितनी ही दूर से देखने की शक्ति है। जब बाज़ को नीचे देखना हो वो सीधे पैनी दृष्टि से पकड़ लेता है। दिल को चुरा लेता है।

शब्दों में चूक हो सकती है। मन में भाव कुछ और होते हैं शब्द कुछ और होते हैं पर नेत्रों की बात अलग होती है।

निगाहों हाले दिल उनको सुना देना वो जब आयें
बांह छुड़ा के जात हो निर्बल जान के मोहि
हृदय से जब जाओगे सबल जानहु तोहि।

सप्त द्वीप सप्त सागर मन की उमंगो से जागे। 24 तीर्थंकरों से ऋषभ देव सबसे बड़े तीर्थंकर हुए। उनके प्रथम पुत्र का नाम था भरत। उनके पांच पुत्र हुए। पुत्र पिता की आत्मा है। आत्मा के संस्कार पुत्र में आते हैं। और ऐसे ही ब्रह्मा सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं। ऐसे ही परम्परा चलती है। अंगिरा गोत्रिय ऋषि के घर हुआ जिसकी दो पत्नियां हुई। दूसरी पत्नी से भरत जी का जन्म हुआ। कभी अंधे कभी बहरे की तरह Acting करते थे। तुरिया अवस्था में पहुंच गए थे। निरंतर स्मरण करते रहते थे खाने पीने की सुध भी ना रही। भाइयों ने घर से निकाल दिया। भगवान भक्त के जीवन में दुःख रखते हैं। सोने को ही आग में तपाकर कुंदन बनाते हैं।

रहुगुण पालकी में बैठे कपिल के आश्रम में जा रहे थे। पालकी में एक कहार की कमी हुई। रहुगुण ही हिरन का बच्चा है और मैं कहार बनकर चल रहा हूं। पालकी उनके चलने से हिल डुल रही थी बोले ठीक से ले चलो। पालकी के आगे चींटियों की लाइन देखी उनमें कृष्ण रूप देखकर उचके। रहुगुण ने बहुत गालियां दीं।अति किसी चीज़ की नहीं करनी चाहिए। भौतिक चीजों की भी अति करते हो। लम्बी चौड़ी List टी सैट सोफ़ा सैट हीरों का सैट तैयार हो गया खुद अपसैट हो जाते हैं । क्यूंकि सबकी अति हो गई। सौ काम छोड़कर स्नान। हज़ार काम छोड़कर भोजन करो। लाख काम छोड़कर निष्काम करो। अरब काम छोड़कर अपने स्मरण में रहना। 108 माला से भी अधिक नाम जप निष्काम भाव से हो जाए। स्वांस स्वांस पर सुमिरन हो जाए। रहुगुण को भरत ने कहा भावनाओं से संबध है। भार वाहक को ही भार का पता है। तुमने कहा जीते जी मरे के समान है वो ठीक है पर आत्मा शाश्वत है। मेरे जैसे पागल की चिकित्सा करना ऐसे होगा जैसे पीसे हुई चीज़ को फिर पीस लें। रहुगुण ज्ञान के वचन सुनकर हैरान हो गया। बोला आप नामदेव या कपिल तो नहीं हैं। जिनकी तलाश में मैं जा रहा हूं। बोले मुझे यमराज वायु अग्नि से भी डर नहीं लगता है पर मेरी देह से किसी संत का अपमान ना हो इससे डरता हूं। रहुगुण की मुक्ति हुई जड़ भरत के उपदेश से।

जैसे द्वेष राग प्रेम के लिए बाधक है वैसे ही आत्मग्लानि भी बाधक है। जब उसी की कामना हो जाती है तब और कोई कामना रह नहीं जाती, अभिमान भी उसी का करो, ऐसा अभिमान करो कि मालिक तुम्हारा है तुम उसके हो अभिमान को भी बृहद रूप दे दो।

प्रेम कभी पुराना नहीं होता। प्रीत जीवित रहती है। उससे प्रीत करोगे तो भक्ति में बढ़ोगे। औरों से करोगे तो गिरोगे अभिमान विराट से करोगे तो तुम भी विराट हो जाओगे।

मैखाने में बैठे हैं तेरी दीद को तरसते है। भक्त सदैव अपने प्रियतम के दर्शन के लिए तरसता रहता है। उसके हृदय में उसी का निवास है।

ज़िंदगी के Highway पर जीवन की गाड़ी बहुत तेज़ी से चल रही है। थोड़ी देर रुक कर आस-पास की प्रकृति देखो हर जगह उसे निहारो। भगवान ने कहा जिनकी दृष्टि तत्व की हो गई उन्हें खटमल में भी दिखाई देता है। पागल की हंसी में। गाय जब बछड़े को प्यार करती है उसमें प्यार को देखो। तेरी तड़प सही है तेरी दिशा ग़लत है।

इस रास्ते से हम गुज़र चुके हैं। जहां भाग रहे हैं वहां नहीं मिलेगा। सम्बंध जोड़ना है या हम गंगा से मिल जाए या गंगा मुझमें मिल जाए। मिल के एक होना है। तत्व दृष्टि वाले के लिए न दुश्मन है न दोस्त। दोष दृष्टि रहित ही तत्व को जान सकते हैं। अध्यात्मक अधिदैविक अधिभौतिक को जानना है।

परमात्मा के बारे में पूर्णता से कोई नहीं जानता है। बड़े बड़े महात्मा जी नारद ब्रह्मा देवता तत्ववेता गीता भागवत कहने वाले लिखने वाले भी मुझे नहीं जानते। मच्छर अपने हिसाब से आकाश को जानेगा गरुड़ अपने हिसाब से जानेगा। भेद का पर्दा हटा दो। हूं और मैं है तो देह अध्यास है। उसे परमात्मा का ज्ञान नहीं होगा। केवल परमात्मा ही परमात्मा जानता है। कृष्ण के आगे श्री लगा दिया राम के आगे श्री नहीं लगाते क्यूंकि राम नाम भी है मंत्र भी है। शमन का उपाय है यही चाबी है

परमात्मा को जानने की। प्रभू का आश्रय ले लो। और कुछ तो रहेगा नहीं। ज्ञानी योगी सभी को परमात्मा का नाम लेते हैं। हम साथ मिलकर (वाणी हिरण्य गर्भ को अलग नहीं कर सकते)।

सत्गुरु के स्वरूप को याद करते हैं ऋषि मुनि भी यत्न करके हार जाते हैं। मेरा भक्त मुझे और मैं उसे देखता हूं। वस्त्र की आवश्यकता वहां है जहां भेद भाव है। जिसके अंदर भेद नहीं उन्हें वस्त्र की क्या आवश्यकता वो अपने को देह आदिक वस्त्रों से अलग जानते हैं। सच्चिदानंद रूप शिवोहम शिवोहम मेरा स्वरूप है सब नाम रूप से परे। उसी तत्व में स्थिर हो जाओ। निश्च्यात्मक बुद्धि। संशयात्मक बुद्धि विनश्यती। कभी देह कभी आत्मा तो भेद रह जाएगा।

तोते को जो सिखाओ वो ही बोलेगा। एक ही बात बोलो, बोलता ही रहेगा। महामुनि जीवन मुक्त योगियों को वेद व्यास ने ये ज्ञान दिया। परमात्मा का नाम लेते ही रोम रोम हर्षित हो जाता है।

निमिष में मिनट का तीसरा हिस्सा नैमिश्यरण्य में शौनक ऋषि ने शुकदेव को ज्ञान दिया। शांति और एकांत स्थान में वक्ता एवं श्रोता दोनों की एकाग्रता से मौन में यह व्याख्या की गई। अंधकार को दूर करने के लिए एक सूर्य काफ़ी है पर अज्ञानता को दूर करने के लिए करोड़ों सूर्यों की आवश्यकता है। ज्ञानियों को दुःख सुख नहीं होता केवल शरीर को कष्ट होता है। मेरे अज्ञान को दूर करो जो मेरे प्राणों के लिए अमृत है। हमें वो ही दीजिए। ऐसे सतगुरु की शरण में जाओ। महात्मा चित्त वृति से पहचाने जाते हैं वस्त्रों से देह से नहीं जाने जाते। उनके लिए दृष्टि दिव्य चाहिए।

मैं वारी वारी जाऊं सतगुरु प्यारे को
गुरु जी कृपालु पर वारी वारी जाऊं।

अज्ञान को दूर करके जिसने ज्ञान रूप बनाया।

पत्र ५। - सब कु छ गं वा कर

सब कुछ गंवा कर सब कुछ पा सकते हैं। पकड़ हाथ हाथों में तूने मुझे चलाया। तुम बिन ए श्याम! ये जीवन है बेकार। इसमें भी ए प्रभू! तुम्हारी ही कृपा है। हूं अंधा क्यूं आता नहीं तुझे तरस मैं नैन हीन हूं मुझ पर दया नहीं आती। जन्मों की कर प्यास पूरी मैं निर्बल हूं तभी तुम मेरा हाथ छोड़ गए लेकिन मेरे हृदय से नहीं जा सकते। अपनी लीला तुम खेलते रहते हो। इस दिल में हे ईश्वर तुम ही समाए हो। तुम मेरे रूबरू रहो। एक तुम ही तो हो मेरे सतगुरु हो मेरा आधार हो।

तीन महान आचार्य हुए - श्री शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजचार्य। पुष्टि मार्ग है कृष्णम शरणम गच्छामि।

भगवान ने कहा है सभी कर्म-धर्म छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें सब पापों तापों से मुक्त करुंगा। शरणागति ही सुगम उपाय है। सब धर्मों से ऊपर है।

घृणा करना हत्या के बराबर है। तुम मांगते हो क्यूंकि तुम्हारे पास कुछ है नहीं। अंदर से खाली हो तभी माया में सुख की तलाश करते हो। किसी से ईर्ष्या राग द्वेष करते हैं।

सूरदास जब वल्लभाचार्य से मिलता है तो देवताओं ने पुष्प वृष्टि की। हे हरि तुम पतितों के नायक हो। जो उनकी शरण में आते हैं वह उनसे मुंह नहीं मोड़ते तुम मेरे हो मैं तेरा हूं। प्रेम में आंखें नम हो जाती हैं। उस प्रेम से भरे हुए हृदय से प्रभू के गीतों को गाते थे। तुम इस राह पर कदम बढ़ाओ फिर तुम्हारे हृदय से ऐसी वाणी निकलेगी जो सदियों तक उसे

भूल नहीं पायेंगे। सदियां गुज़र गईं, आज भी सूरदास के गीत दुनिया गाती है। सूरदास मंदिर में जाकर कृष्ण के प्रेम में भक्ति भाव से भजन गाता था। नाचत गावत सूरदास गिरधर के आगे नाचता था। गुण गान करता था। एक दिन अकबर के दरबार में तानसेन एक गीत गाता है।

“निशदिन बरसत नैन हमारे 2
सदा रहत पावस ऋतु हमारे 2
जब ते श्याम सिधारे अंजन धीर न रहे अखियन में
सूरदास अब डूबत है व्रज काहे ना लेत उबारे
निशदिन …”

यह गीत सभी के हृदय में दर्द जागृत होता है हृदय भीग जाता है। अकबर ने पूछा यह किसका गीत है उन्होंने कहा सूरदास भक्त है इनके मुख से प्रेम की वाणी बहती रहती है। सूरदास जी मथुरा में रहते हैं मंदिर में। अकबर ने कहा मैं भी यह उसके मुख से भजन सुनूँगा।

प्रेम की शीतलता अपने में महसूस होगी। स्वर्ग में भी नर्क लगता है जब विचार ख़राब हैं। अपने संकल्पों पर ध्यान दें ये सत्संग भी कल्पवृक्ष है जहां पर तुम जो चाहो वही कर सकते हो। कल्पवृक्ष के नीचे संकल्प करोगे कहीं पत्नी ना आ जाए झाड़ू लेकर मारने के लिए। स्वर्ग में बैठ कर भी दुःख ख़रीद लिया। सत्संग में स्वर्ग में बैठे हो पर जगत की झूठी कल्पनायें करके दुःख ख़रीद करते हो। तुम कहते हो सारी दुनिया ग़लत हो गयी है। एक बार अगर आपको राज्य दे दिया जाए और कुछ भी फल नहीं मिलेगा ऐसा कहा जाए तो अंदर का पशु जाग्रत हो जाएगा। क्योंकि डर ख़त्म हो गया। तुम्हारे शरीर के हार्मोन्स तुम्हारी भाव दशा

को बदलता रहता है एक दम से परिवर्तन आता है। सभी ग्रंथियों का अपना प्रभाव है परंतु जब ज्ञानमय जीवन हो जाएगा तो सभी दुष्प्रभाव से छूट जाओगे। इसलिए हमेशा विचारों को शुद्ध रखो।

प्रेम की वर्षा में भीगते रहो। प्रेम की कोई परिभाषा नहीं है प्रभू से प्रीत पुरानी है। पुराना बीज पड़ा है उन्हें जीवित जाग्रत करना सरल है। एक अंजान आदमी के प्रति आकर्षण हो जाता है। किसी व्यक्ति के पीछे विकर्षण हो जाता है। किसी से दूर होना चाहते हो सब पिछले सम्बंध हैं। अगिये जन्म में हुए इकरारी जु ऊंची मूं तोसा पारी जन्म-जन्म का साथ है हमारा तुम्हारा दिल उसके लिए तड़पता है। परंतु जब पढ़ने समझने का अभिमान आ जाता है तो भीतर का अंधकार और बढ़ जाता है। ज्ञान पुस्तकों से नहीं मिलती उनसे केवल सूचना मिलती है। सूचना से मन की प्यास नहीं बुझेगी। भीतर के अधूरेपन का पता चलता है। हम व्यर्थ के पीछे दौड़ते हैं। सुकरात से पूछा आपसे बड़ा ज्ञानी तो कोई हो ही नहीं सकता। सुकरात हंसे व्यंगात्म हंसी थी पूछा गया यह तो बड़ी ज़हरीली हंसी है। मैं मेरे बारे में क्या सोचता हूं ये तो पूछो। बोले कि ज्ञान अभी मेरे से बहुत दूर है। मेरे जैसा अज्ञानी कोई नहीं है। किसी ने परिवार से किसी ने धन से भरा है, समृद्धि से प्रतिष्ठा से भरा हुआ है। क्या संतुष्ट हुए क्या प्यास है। ये अधूरापन अंदर कचोटता है वो इसे जानते नहीं सूर्य को ग्रहण लगता है तो दिन में अंधेरा हो जाता है। भारत में जन मानस ग्रहण से प्रदूषण मानते हैं। इन किरणों से बचो बाहर नहीं झांकते अब उस सूर्य को भी नहीं देखते जिसे पूजते हैं। जल चढ़ाते हैं। जब जानते हैं तो पाते हैं वो जिसमें व्यर्थ है वो ही इकट्ठा करते हैं। करते जाते हैं। एक पंडित जी खाने के शौक़ीन थे। कोई कमी नहीं रहती पर्वों की। इतना खाता था कि फिर वो गिर ही जाता था। जो बुलाते थे वो

घर में बैलगाड़ी भी बुलाते थे। बैलगाड़ी में भेजना पड़ता था। पंडिताइन कहती एक गोली खालो। बोले यदि खा ही सकता तो लड्डू या पूरी खा लेता। हम अपने को इतना भर लेते हैं कि परमात्मा रूपी औषधि भी नहीं खा सकते।

कभी संतों के पास भी बड़े लोग आते हैं। कहते हैं हमारे साहब Busy हैं। उन्हें समय नहीं है। उनका एक एक मिनट लाखों का है। तो उसे संत ने कहा हमारे लिए करोड़ों क्यूं गवा रहे हो पर सच तो ये है कि यहां भी आर्थिक समानता का आशीर्वाद मिल जाए। आशीर्वाद बुद्ध को मिला सन्यासी हो गया। अपना सब हिसाब लेकर बांट दिया। सत्य की कमी का अहसास होना भी बड़ी बात है। ज्ञान की किरण को पाना भी बहुत बड़ी बात है। विचार से विचार की दृढ़ता बढ़ती है। विचार ना हो तो संकल्प कैसे हो। संकल्प ना हो तो सत्य कैसे मिले। पूर्व जन्मों के पुण्य उदय हो तो भी मिल सकते हो और उस ज्ञान को Continue कर सकते हो। युक्ति मिल सकती है मुक्ति मिल सकती है अतीत के कर्मों से। प्रश्न है जन्म होता ही क्यूं है क्यूंकि बहुत कुछ पाना चाहते थे भोगना चाहते थे वो पूरी न हुईं ये वासनायें ही बीज बनती हैं अगले जन्म की।

रहुगुण ने कहा अग्नि पर पतीला उसमें पानी है पानी में चावल है सम्पर्क में तो चावल हैं तो गलेंगे। उस पर जड़ भरत ने कहा यदि चावल की जगह पत्थर होगा तो क्या वो गलेगा। आत्मा ऐसे ही निर्लिप्त रहती है। उस पर किसी चीज़ का प्रभाव नहीं होता। आत्म ज्ञानी ऐसे ही निर्लिप्त भाव से संसार में रहते हैं। आत्मा शुद्ध है बोध है। जड़ भरत ने कहा भरत राजा था सारे भूखंड का राजा था। मैं जड़ होकर रहता हूं

ताकि फिर इस संसार में फिर न भ्रमित हो जाए। सौवीर (कच्छ) देश का राजा था रहुगुण। सावधानी से रहने लगे।

कर्म अनुसार ही फल मिलता है। जैसे कोई रोगी डॉक्टर के पास जाता है तो एकदम दवा नहीं देता। उसका हाल चाल पूछने के बाद ही दवा देता है। ऐसे ही गुरु भी तुम्हारे अनुरूप तुम्हें दवा देता है। पाप का समूल नाश करना हो तो यह ब्रह्म ज्ञान अग्नि सब कर्म जला देती है। अजामिल पापी का मन वैश्या से लग गया। उसने अपना ब्रह्मत्व नष्ट कर दिया उसे समाज से निकाल दिया सभी तरह के पाप उसने किए थे। किसी संत से मिला देते हैं प्रभू ये उनकी दया है। संत मंडली को अजामिल के घर रहने का पता बता दिया। संतों का आदर किया। संतों ने भोग लगाया प्रसाद अजामिल को दिया तो उसके दिव्य संस्कार और जागृत हो गए। संतों ने कहा यदि तुम कहो तो हम भजन भाव करें। ऐसा गाया जो अजामिल का जीवन पलट गया।

आदत बुरी संभाल लो बस हो गया भजन मन की तरंग मोड़ लो बस हो गया भजन

दृष्टि में तेरे खोट है दुनिया निहारता
दुनिया तुम्हें बुरा कहे पर तुम करो क्षमा
विषयों की तीव्र धार चलता ही जा रहा
विषयों की तीव्र आग में जलता ही जा रहा
मन की तरंग मोड़ लो ...
रिश्तों से मोह त्याग कर कृष्ण से प्रेम कर
इतना ही मन विचार लो बस ...

===

पहले चंद्रमुखी एक रात में दो दो चांद खिले। अब कहता है तू ज्वालामुखी है। प्राणनाथ फिर केवल नाथ कसूर कन्या का बेटे का नहीं। उनके पाशवीय अंश ने उन्हें तबाह कर दिया। उनके पाशवीय अंश को मोड़ कर मानवीय अंश में लायें। दीक्षा दी यानि देने की क्षमता है और लेने का भाव है उसे दीक्षा कहते हैं।

जिसके हृदय में गुरु मंत्र है और उसकी सीख लेता है जिसके जीवन में गुरु नहीं है वह मूर्ख है। डॉक्टर कभी मुसलमान हिंदू नहीं देखता सभी को दवा देता है। संत भी करुणावश सब को प्यार देते हैं सब की सहायता करते हैं। अपना अपकार करने वाली बुढ़िया जो रोज़ कचरा डालती थी उसको प्रेम से स्वीकार किया और बीमारी में उसकी मदद की।

पत्र ५2 - सदैव अपने सच्चे स्वरूप

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में मस्ती में मस्त रहो। अपना अभ्यास और वैराग्य ही हमें माया से बचाता है। गुरु से हमें जीने की नई दिशा मिलती है। जब सर्व से प्रेम का भाव होगा तो क्रोध आएगा ही नहीं। दूसरा देखकर उसमें कोई ना कोई इच्छा रखने से ही क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध पहले स्वयं को अंगीठी की तरह तपाता है और फिर किसी को सेक मिलता है। यह विष अपने को ही अंदर मारता रहता है अपनी ही हानि है,इसलिए क्षमा का गुण धारण करके किसी के अवगुण ना देखो।

Your own self

Pramila

पत्र ५३ - बुद्ध भगवान एक शहर में

बुद्ध भगवान एक शहर में गये उनके साथ 10000 शिष्य गये थे और एक जगह ध्यान में बैठे थे। बिना शोर के उन्हें देख कर राजा हैरान रह गया सफ़ेद कपड़े पर कोई भी रंग जल्दी चढ़ता है ऐसे ही अज्ञानी की Vibrations ज्ञानी पर जल्दी आ जाते हैं और ज्ञानी का कम चढ़ता है इसलिए उन से तुम्हें दूर रहना चाहिए। अपने लक्ष्य को नहीं भूलें अपने मन को नियंत्रित होकर चलें अपने वैर भाव को भूल कर सभी के लिये शुद्ध भाव रखो। जीवन के बनने में हमारा सात्विक भाव आत्मिक शक्ति सहायक है। ब्रह्मांड से आने वाले Vibrations Catch करो। बाहर का प्रकाश अंदर के प्रकाश से Match करें मस्तिष्क में मनन कार्य चले। मन का कार्य है हमेशा सोचता रहता है अच्छे बुरे दोनों ख़्यालों को प्रगट करता है। तुम्हारे अंदर की शक्ति है मैं कभी कभी किसी के द्वारा बोला गया एक शब्द असर करता है मैं पर। मुझे ही डांटते रहते हैं वहां तुम्हारी Ego Hurt होती है अपनी मैं को सर्व की मैं में मिला दो। अलग का भाव ख़त्म कर दो सभी से मन मिला के चलो। अपनी मैं को आगे मत करो। जीभ से स्वाद का पता चलता है कर्म इंद्री भी हैं ज्ञान इंद्री भी है। जानकारी स्वाद की देती है। जो अंदर की इंद्रियां हैं वो हैं मन चित बुद्धि अहंकार। वो ज्ञान देते हैं और इंद्रियां इन का कहना मानती हैं। प्राण शक्ति और आत्मिक शक्ति का सामंजस्य है। स्वास ले तो जाने। पलक झपकती है ऐसे ही पल पल बीता जाये। सोते समय पलक बंद जागृत में खोलते हैं। सारी शक्ति तुम्हारे अंदर है। आपकी शक्ति वाणी की शक्ति है। सोने में अलग शक्ति है। घर में मां का शासन चलता है वो आंखों से घूर के देखती है तो बच्चा समझ जाता है। संसार के लोग

छू कर बता देंगे कि 10 का या 1000 का नोट है। खाली काग़ज़ को भी जान लेते हैं। शब्द भेदी बाण भी शब्द दिशा में लगाते थे। हम तो हमारी मस्ती में झूमते चले हैं। दुख दूसरे से नहीं मिलता दुख का कारण है कि मैं सुख बाहर ढूढ़ रहा था। मैं सुख के संसार का मालिक होकर बाहर से मांगते जा रहे हैं। मैं कितना कष्ट दे रहा था अपने ऊपर कितना क़हर कर रहा था। अपने ऊपर अब गुरु ने दिव्य चक्षु देकर हमें जागृत किया। और इस भूल को समझा कर अंतर दृष्टि कर दी। सुख स्वरूप होय सुख को ढूंढे तू ख़ुद आनंद का रूप है केवल अपनी खुदी को गुम कर दो। माया का रूप मद मत्सर लोभ मोह आदि। सत्य केवल आत्मा है और सब के शरीर नाशवान है। दर्शन नहीं प्रभू का आश्रय ज़रूर मिलेगा। अस्तेय माना शब्दों की चोरी ना करो जो ह्रदय में वो है ज़ुबान पर कुछ और है वो भक्त भटकेगा। चोरी का अभाव - भजन में कटौती ना करना। निश्छल निष्कपट हो कर सामने आओ। सेठ झूठ ना बोले तो काम ना चले। झूठ लेना झूठ देना ये छोड़ो शराब मेनका आदि इन सब के पीछे लोग पड़े रहते हैं। घोड़ा हाथी रंभा मेनका संसार का मंथन करने से निकलते हैं। भगवान ने जब काक भूषिण्डी से कहा मांगो तो उसने मोक्ष मांगा। ज्ञान और दर्शन चरित्र को आचरण में डालो। सत्गुरु को ह्रदय में धारण करो। विवेक वैराग्य षट् संपति। ब्रह्मचर्य की दृढ़ स्थिति दम्भाचारी पाखंडी ना बनो। ब्रह्म के आचार से ब्रह्मचर्य। उसका आचरण करो। संयम सब इंद्रियों का हो जाये। आचरण द्वारा ब्रह्मचर्य सिद्ध हो जाएगा। वीर्य का धन बचेगा। संग्रह का अभाव हो जाये। जंगलों में लोग आश्रम में कितने प्रसन्न हैं। एक समय खाया सो गये निश्चिंत रहते हैं। कल क्या होने वाला है इसका ज्ञान भी नहीं होता। पूर्व जन्म का तो छोड़ो कल क्या होने वाला है उसका भी ज्ञान नहीं रहता। (अगेला

पिछेला राम कटोरा) एक गरीब परिवार था बहुत अधिक क़र्ज़ हो गया सेठ रोज़ मांगने आ जाता था उनसे छूटने के लिए वो अपनी पत्नी से कह रहा था कि अब यहां से चलो और अपने साथ अगेला पिछेला और राम कटोरा ले चलो। सेठ ने कहा यह सब क्या है उसने सोचा कोई क़ीमती सामान है जो यह लेकर भाग रहा है उसने कहा यह समान मुझे दे दो उन्होंने कहा कि तुम देखने के बाद नहीं लोगे बोला नहीं मैं सब क़र्ज़ भी माफ़ कर दूंगा। अंगूठा लगवा के काग़ज़ ले लिया और जब दिखाया तो घास फूस अगेला पिछेला था और राम कटोरा एक पुराना कटोरा था सेठ ने माथा पीट लिया लालच बुरी बला।

तीन बेटों को 100-100 रुपया दिया एक ने कचरा एक ने जुआ खेला एक ने सुगंध व प्रकाश से भरा हुआ था।

(1) एक घोड़ा मालिक के इशारे से चला

(2) एक चाबुक लगाने से चला

(3) मालिक के चाबुक से भी नहीं चलता

(4) घोड़ा उठता ही नहीं अड़ियल है

यहां भी चार प्रकार के भक्त आते हैं जो केवल गुरु के इशारे को समझते हैं और कहना मानकर अपना जीवन बनाते हैं। दूसरे थोड़ी डांट मार खाने से चलते हैं तीसरे डांट से भी नहीं चलते और चौथे तो अड़ियल की तरह हिलते भी नहीं हैं।

Your ownself - Pramila

पत्र ५५ - यह जीवन कैसे हर एक का सुनहरा

सभी के ह्रदय का अगाध प्रेम यहां पहुंचता रहता है यह जीवन कैसे हर एक का सुनहरा बन गया है गुरु मुख से नया जन्म मिला है तो फिर से बचपन लौट आया है जिस जीवन में कोई शोक दुख चिंता है ही नहीं। हर घड़ी का आनंद लेना गुरु ने सिखा दिया है। हर दिन नया दिन और हर रात सुनहरी रात है। रोज़ नए सुनहरे सपने देखते रहते हैं क्या से क्या गुरु ने बना दिया है सब कुदरत की कारीगरी देखते रहते हैं कि यह कैसे फिर से कृष्ण व राधा का युग आ गया है यहां हर एक गोपियों की तरह प्रेम में दौड़ रहा है ना दिन का पता है ना रात का बस एक बेहोशी ही है जो कभी खत्म होने वाली नहीं है। बस ये खुमारी बढ़ती ही जाए। अनेक रूपों में भगवान कैसे पहुंच जाता है। जिसने मुझे सुख पहुंचाया भगवान उसे कभी तुम दुख ना देना मेरा स्वभाव ही ऐसा है कर्म करें फल की चाहना न रखे। भगवान जब भी ऐसा अवसर तो चूकना नहीं। समस्त प्राणियों से मैत्री भाव रखें। पेड़ पौधों पर भी प्रयोग किए गए। पौधों को गमलों में रखकर एक माली को सौंप दिया कि इनकी सेवा करो इनसे बात भी करो भजन गाओ। फिर एक दिन उन गमलों को कमरे में रखा और तारें जोड़ दी कि इनका कैसा Graph आता है। और एक व्यक्ति को बुलाकर कहा एक गमले को तोड़ दो। उसने उसे पटक दिया। भयभीत हो गये उसी समय उनका Graph बदल गया। माली को देखकर फिर प्रसन्न हो गए। प्रतिक्रिया और संवेदना का रूप बदल गया पौधे भी संवेदनशील हैं वह भी स्वास लेते हैं। बेहोशी में जीने वाले पौधे को भी पहचान है। व्यक्ति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। आपके प्रेम को भी पहचानते हैं। कहीं भी आप प्रेम से एकांत में बैठे तो आपको

लगेगा कि हर चीज़ आपके साथ गा रही है प्रकृति झूम रही है। क्रोधी आदमी वातावरण को भी दूषित करेगा और स्वयं भी दुखी रहता है। अमर है वह प्रेम जो सब कुछ सह ले। प्रेमी प्रेम से थकता नहीं है वो आजीवन बांटता ही रहता है कभी क्रोध नहीं करता किसी को हानि नहीं पहुंचाता। गीता का ज्ञान खूब गूढ़ है पर हम सब भाग्यशाली हैं जो साकार सतगुरु से सम्मुख बैठकर ये ज्ञान लिया है। गीता हमें हर हालत में सम रहने का उपदेश देती है। किसी के जीवन में सफलता है और कभी असफलता हासिल होती है। जीत तो एक टीम ही है। हार के लिए भी तैयार रहें लाभ और हानि में समभाव में रहे। कभी कभी हमारी गलतियों से भी हार हो जाती है। कर्मों की गति को जानने वाले बनो। पुण्य जन्मों का पुण्य प्रताप है कभी पाप कर्म भी सामने आते हैं अपनी सफलता के मार्ग को Clear कर देना चाहिए। लाभ के समय जैसे प्रसन्न रहते हैं वैसे हानि में भी रहना चाहिए। हम जानते तो चलना भी नहीं और चाहें उड़ना तो गिरेंगे ही। जीत में अहंकार आ जाता है। हर कदम पर हमें ईश्वर का शुकराना करना चाहिए। मैंने यह किया मैं न होता तो ऐसा न होता। जब प्रभू की कृपा होती है तब ही सफलता हासिल होती है। प्रयास के साथ जब उसकी सूक्ष्म शक्ति है तो कार्य होता है। पाप कर्म करके दूसरे की टांग खींच कर मान प्राप्त करते हैं। यह खुशी प्रदान नहीं करेगा।

हम जब कर्म क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं तो जो सत्यता और ईमानदारी का मार्ग अपनाते हैं उनकी ग्लानि होती है रुकावटें आती हैं वो उनसे विचलित नहीं होते जहां सत्य है वहां विजय अवश्य है हम जब कहते हैं कि सत्य की कदर नहीं है तो हम सत्य को छोड़ दें। पर नहीं यदि हमें कोई बड़ा काम करना है तो निंदा तो होगी पर अगर यह साहस नहीं है

तो बड़ा कार्य छोड़ दो। तुम आगे बढ़ जाते हो तो और सत्य पथ पर चलते हैं तो एक दिन सफलता मिलती है जब मान को स्वीकार कर लेते तो अपमान सहने की शक्ति नहीं रहती। मान के समय अहंकार में ना आ जायें। हम दूसरे को सुख देने के लिए कर्म करें और मान में फूले नहीं और अपमान में दुखी ना हों। और उन्हें शत्रु भाव से ना देखें हानि होना भी संभव है फिर हानि हो जाए तो फिर आत्म विश्लेषण करके नया Plan बनाएं। मन को डांवाडोल होने से बचाएं मननशील पुरुष भगवान को प्रिय है। जो केवल सुनते और सुनाते हैं अपने चिंतन में नहीं रहते तो मनोबल नहीं बढ़ेगा। मन की स्थिति को एक रस बनायें तो हम अपने सतगुरु के परम प्रिय बच्चे बन जाएंगे। और फिर अधिक उत्साह से कार्य में लग जाएंगे जीवन सर्व के हित में लगा दें। समत्व योग समभाव ही समाधि है। भगवान ने तो जन्म दिया और आवागमन में डाल दिया। मनुष्य चलता बहुत है पर पहुंचता कहीं नहीं। चक्रव्यूह को तोड़ने वाला मेरा सतगुरु महान है। सारी वसुधा ही तुम्हारा कुटुंब है। जिसने बिंदु को सिंधु और सिंधु को बिंदु में समेटना सिखाया।

प्रभू ने रोग भोग उलझायो
गुरु ने आवागमन छुड़ायो।

जैसे प्रकाश की ओर मुख करके चलो तो छाया पीछे आएगी। हे प्रभू तुम्हारी ओर मुख करना सिखाया। दुनिया में बसना है फंसना नहीं अवसाद को फसाद में फंसा दिया और गुरु ने छुड़ा दिया। आपको देखने का दीया जिसने दिखाया रास्ता दिखा दिया चलना सिखाया है वो मेरा सतगुरु है। गुरु तो कहता है प्रभू के चरणों में समर्पित हो जाओ लेकिन सहजोबाई कहती है

चरणदास तन मन वारूं
गुरु ना तजू हरि को तज डारूं।
राम तज़ु गुरु ना बिसारूं
गुरु के सम हरि को ना निहारूं।

जो आदमी नशे में होता है वो अस्थिर रहता है। नशा भी हो उन्मत ना हो वो भक्ति से हो सकता है। वो फिर अपनी आत्मा में रमण करता है। लोग पूछते हैं आत्मा है क्या? आत्मा को देखने वाला तू कौन है जो कह रहे हो मैंने उसे ज्योति रूप देखा बिंदु को देख कर कहो वो आत्मा है ऐसा नहीं है। जिस में जानने की शक्ति है वही आत्मा है। आकाश के बाहर कुछ है क्या। शरीर के भीतर आत्मा नहीं आत्मा के भीतर शरीर है। शरीर में सूक्ष्म शरीर है। शरीर सूक्ष्म स्थूल से भी बड़ा है। भावनात्मक शरीर उससे बड़ा है। आनन्दमय कोश उससे भी बड़ा है। क्यूंकि उसमें कुछ नहीं रहता। हम अपनी ही आत्मा में रमण करते हैं।

हाथ शरीर का ही अंग है। ये सब एक ही है स्थूल में अलग अलग लगता है सूक्ष्म में एक ही लगता है। वही हवा सबके पास है। उसे बांट नहीं सकते। निरोध किसको रोक क्या रोकना चाहिए। प्रेम से बचना हो तो इतना व्यस्त कर दो जो सांस लेने की फ़ुरसत ना हो फिर तो मर गया। तुम पैसे बनाने की मशीन बन जाते हो। फिर किसी और काम के लिए फ़ुरसत नहीं रहेगी। किसी भी कार्य में व्यस्त रखो तो परम् प्रेम से वंचित रह जाये। सुख की पकड़ सुख को कम कर देती है। सुख को दुःख में बदल देती है सुख की इच्छा। जब सुख को पकड़ने की कोशिश करते हैं तो दुःख बढ़ जाता है। इच्छा को त्याग दो। ... इच्छा पूर्ण हो जाएगी। बाहर के जगत में कैसे प्रयोग करें। अहिंसा - भक्त कोई हिंसा

कर नहीं सकता। सत्य - झूठ बोलने से दुःख मिलता है। झूठ इसलिए बोलते हो कि इससे सुख मिलता है। अपने सुख की इच्छा से झूठ बोलते हैं। शौच - पवित्रता। अवधूत के लक्षण की नक़ल न करो। अंदर बाहर की शुद्धि स्वच्छता रखो। इस चरित्र को परिपालन करना चाहिए, अस्तेय, अपरिग्रह। हर भाव को उसकी तरफ़ लगाओ। दिमाग़ से दिल की ओर जाओ तो चिंता शांत हो जाती है। और यह करना चाहिए। बार बार मन को शुभ चेतना (भगवान) में लगाओ। कीर्तन करने से मैं आती है। बच्चा जब रोता है तो रोना उसके रोम रोम से निकलता है जिसमें तुम पूरी तरह से संलग्न हो जाये। सबके विचार अलग अलग होते है। कीर्तन के समय एक ही शब्द सबके मन में चलता है। हमारी चेतना जो पुरानी है वो परत है। चेतना की हर परत से भजन गूंजने लगता है। भजन से वो शीघ्र अनुभव में आ जाता है जो अनंत है प्रिय है शाश्वत है। उस चैतन्य को जान लो। जीवन सम्पूर्ण सम्पदा है। करोड़ रुपय देने से भी एक क्षण भी नहीं मिलता। इसलिए इस जीवन की कद्र करना सीखो। अपने स्वासों को सही जगह उपयोग करो। जीवन में गंदगी नहीं पर अपनी सुगंध छोड़ जाना अपने कर्मों से ही संसार में जाने जा सकते हो चेहरे पर आंख कान नाक मुख न होते तो भी जी सकते थे पर मुख ना होता तो गुणगान कैसे करते। कर्म भक्ति व ज्ञान के समन्वय से जीवन सुंदर लगता है। चेहरे पर आंख कान मुख तीनों हैं तो जीवन की शोभा है। काम करते रहो प्रभू नाम जपते रहो। ये कठिन नहीं है पर आदत नहीं है तो कर्म भक्ति साथ नहीं चलेंगे। कठिन है असम्भव नहीं। तुम प्रातः काल जब घर के कार्य शुरू होते हैं तब भक्ति करने बैठोगे तो विक्षेपता तो आएगी ही। समय से सो जाओ समय से जाग जाओ और जल्दी उठके भक्ति में मन लगाओ। अभ्यास से सब कुछ सम्भव है। किसी भी

कर्म में पहले एकाग्रता की ज़रूरत है फिर तो अंधेरे में बुनाई भी कर सकते हो। हाथ छोड़ कर गाड़ी चला लोगे। हर कार्य के लिए अभ्यास चाहिए 26 27 मटके लेकर नृत्य कर सकती है। नट रस्सी पर चल सकते हो। सभी अभ्यास से सम्भव होगा। बात भी करते चलें अंदर अपने स्वरूप की स्मृति भी रहे। संत भी निठल्ले नहीं रहते कर्म से विमुख नहीं होते। ज़्यादा ही कार्य में संलग्न रहते हैं। चाहे उसे कोई कर्म करने की आवश्यकता नहीं फिर भी लोक संग्रह के लिए कृष्ण भी कर्म में लगे रहते थे नहीं तो दुनिया उनका अनुसरण करेगी। कार्य छोड़ना ज्ञान नहीं है।

एक गांव का व्यक्ति अनाज बैलगाड़ी में भरकर ला रहा था। अनाज गीला हो गया और गाड़ी कीचड़ में फंस गई तो गाड़ी से उतरकर पेड़ के नीचे बैठ कर हनुमान चालीसा पढ़ने लगा। एक संत मिले उन्होंने कहा केवल पुकारने से कुछ ना होगा। तुम याद करो तुम्हारे हनुमान ने तो पहाड़ उठा लिया और तू हाथ पर हाथ धरकर बैठा है। उठो पुरुषार्थ से पहिए को बाहर निकलवा दिया। भक्ति के साथ कर्म की भी आवश्यकता है। ये बात लोग भूलकर केवल भक्ति करते रहते हैं।

पत्र ५5 - तु म्हारा निश्चय ही तु म्हारा साथी है

तुम्हारा निश्चय ही तुम्हारा साथी है तुम कभी अकेले नहीं हो। गुरु मेरे संग सदा है नाले सदा बसत हम साथ। इक पल को भी नहीं भूलते क्योंकि तुम हमसे ऐसे मिले हुए हो जैसे फूल में ख़ुशबू मेहंदी में रंग निम्बू में खटास आम में मिठास कोई शक्ति उसे अलग नहीं कर सकती। ये प्रेम की चाशनी जिसने चखी वो सदा के लिए मतवाला हो जाता है। दिन दूनी हो विरह वेदना पल भर चैन ना आए रे कोई ऐसी आग लगाए। आग पवित्र है। हर चीज़ को पवित्र कर देती है। सोने को कुंदन बना देती है। सोने का आभूषण बन के हरेक के गले की सुंदरता बन जाता है।

अग्नि पवित्र है उसी के सामने हिंदू धर्म में विवाह के सूत्र बंधन में बंधकर अपने वायदे पूरे करते हैं पर ये तो जन्म जन्मांतर का अटूट बंधन है जो किसी के छुड़ाने से भी नहीं छूटता प्रेम ही अमर है बाक़ी तो सब वस्तु फ़ानी है everything will decay but Love never die

Your own self Pramila

पत्र ५७ - जब अपने पराये का भेद मिट

जब अपने पराये का भेद मिट गया तो अकर्ता भाव आ जायेगा। या तो जीव या ब्रह्म रहेगा। एक ही का सब विस्तार है तो द्वैत की गंध नहीं रहेगी।

एक ही स्त्री के अनेक रिश्तों के हिसाब से अनेक नाम हो जाते हैं। परमात्मा से अलग हो गये हैं अपनी खुदी के कारण।

नाम रूप बीच में आ गया यह अहंकार है यही अलग कर दें । जान लें कि यह मिथ्या है। 900 साल ग़ुलाम रहे और उसमें चिन्ह आदि मिट गये। किसी को प्रवचन का अधिकार नहीं दिया गया। उसमें पूरा धरम अपना स्वरूप भूल गया। हमने भगवान के अनेक नाम रखे कि उन्हें रटो जैसे उस शक्ति को ना भूलें। शिष्य बनाना मंत्र देना यह वेद में नहीं है। चेला चेली बनाने से क्या उनमें भगवान छोटा है।

पारस और संत में बड़ा अंतरों जान वो लोहा कंचन करे संत करे आप समान। संत चेला चेली नहीं अपने जैसा बना सकता है। है ही परमात्मा गुरु अपने जैसा बनाए। तुम दुनिया वाले मंत्र ले कर चेला चेली बन जाते हैं।

शिष्य बना लिया और उसके शोक को दूर नहीं किया तो वो गुरु नरक में पडहिं। बनाना तो था उसे गुरु और चेला चेली बना दिया। उन से भी अपने स्वार्थ सिद्ध करता रहता है। और ऐसे गुरुओं से कभी शिष्य को ज्ञान नहीं लगता।

कुसंग से बदबू आएगी ही है। मानसिक संकल्प करके अपना मन दे देना है। मानवता भी मनुष्य में नहीं है। पशुता के लक्षण आ गये हैं। अपने अवगुणों से छूटो। ख़ाना पीना और बाल बच्चों की देखभाल करना यह तो पशु भी खूब जानते हैं। पशु में और तुम्हारे में बाक़ी क्या अंतर है। परमात्मा ने तुम्हें हू बू हू अपने जैसा बनाया है इसलिए Be You as Pure as Holy as your Father is in Heaven. अपने को योग्य बनाते जाओ। कई लोगों की शिकायत होती है कि ईश्वर ने हमें कुछ नहीं दिया क्या हाथ या टांग या आंखें किसी को लाख रु. में भी दोगे? नहीं दोगे। तो इतना अनमोल शरीर दे दिया प्रभू ने उसके शुक्रिया करने के बजाए शिकायत क्यों करते हो। प्रभू ने तो सब कुछ दिया ही दिया है तुमने उसे क्या दिया एक शीश दे हरि मिले तो गल है आसान लाख शीश दे हरि मिले तो भी सस्ता जान।

आसरा इस जहान का मिले ना मिले
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए।

(1) जहां ख़ुशियां हैं कम और ज़्यादा हैं ग़म
जहां देखो वहीं हैं भ्रम ही भ्रम
मेरी चाहत की दुनिया बसे ना बसे
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए।
आसरा ...

(2) कभी वैराग है कभी अनुराग
जहां बदले हैं माली वहीं बाग है
मेरी महफ़िल में शमा जले ना जले

मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिए।

आसरा ...

(3) मेरी धीमी है चाल और पथ है विशाल

हर कदम पर मुसीबत है अब तू सम्भाल

पैर मेरे थके हैं चलें ना चलें

मेरे दिल में इशारा तेरा चाहिए

आसरा ...

ऐसा शरणागत भाव सत्गुरु के लिये होना चाहिए जिस में मेरे मन की बात एक भी ना चले। नमरता में ही अमरता है। ह्रदय का उमड़ता हुआ प्रेम ही प्रभू तक पहुंचता है। मेरी मंज़िल भी तू है राह भी तू है। मैं गुम हो जाऊं कुछ शेष बचे ना बचे तू मुझमें मैं तुझमें खो जाऊं तू तू ना रहे मैं मैं ना रहूं ऐसे इक दूजे में खो जायें।

सीखते समय एकाग्रता चाहिए। सीखने के बाद तो गाड़ी हाथ छोड़ कर भी चला सकते हैं। हमारी पशु प्रवृतियां अचेतन मन में रहती हैं। नशे में कुत्ते को भी भाई समझ के गले से लगा के बैठा है। सूरज किस दिशा से निकलता है कहेगा मुझे पता नहीं है। आदमी नशे में अपने को भुला देना चाहता है। मन सो जाए तन सो जाये फिर भी Unconscious mind जगता रहता है। जब जागृत अवस्था में होते हैं तब चिंतायें ख़्याल सब चलता रहता है।

मन का संयम हो जाये तो शांति मिलती है गुरु चाहता है तुम अपनी शांति में रहो अपने स्वरूप को जानते हो। सत्संग से ही तुम्हारे विचारों की एकाग्रता रहती है। आनंद में आ जाओ। शक्ति सामर्थ्य प्रेम रस

सदभावना सब काम करते हैं। मन भी अदृश्य आत्मा भी अदृश्य है फिर भी हरेक मन के पीछे पड़ा रहता है आत्मा के पीछे नहीं पड़ता। वैसे मन की अपनी कोई हस्ती नहीं है। अंधेरे की जैसे कोई हस्ती नहीं है। Absence of light.

आत्मा को न जानकर जब ख़ुद को देह मानते हैं तभी मन सताता है मन को अलग करते जायें तो उसकी हस्ती नहीं रहेगी। दृष्टा साक्षी बन जायें। तरंगें तो सागर में उठती रहती हैं तुम केवल उसको देखने वाले बनो एक लहर समाप्त होती है और दूसरी पैदा होती है। सृष्टि में उत्पत्ति और विनाश साथ साथ चलता रहता है। ज्ञानी ना कुछ अधिक प्राप्त करके सुखी होता ना ही कुछ अलग होने पर रोता है। मोह का परदा फाड़ कर देखो मैं मेरे की दुनिया से परे ब्रह्म तत्व में आ जाओ। राग द्वेष सब अपनी कल्पनाएं ही हैं। विचार रहित विकार रहित हो कर जीयो मन का रूप न बन जाओ इस मन ने जन्म जन्मांतर से तुम्हें दुखी किया है। अब इस से अपने को अलग जानो Self realisation में लग जाओ और व्यर्थ की बातों में ध्यान मत लगाओ।

पत्र ५7 - किसी को दु खी करना तो पाप हैं

किसी को दुखी करना तो पाप है। अपने को दुखी समझना महापाप है।

इंसान स्वार्थ में अंधा हो गया है उसके कर्म ग़लत हैं ठगी बेईमानी कर रहा है रिश्वतख़ोरी पाप है। गुरु नानक देव को हिंदु मुसलमान दोनों मानते थे। हक़ पराया नानका उस सूअर उस गाय। गुरु पराया हक खाने की मना करता है। वो फिर कर्मों के हिसाब से निकलती है। कोई पीर हामी नहीं भरेगा। किसी को दुखी देखकर अपना उल्लू सीधा ना करें। हमारी जात चाहे कितने भी धर्म पर हम सब एक हैं। इंसानियत ही हमारी जात है। एक नूर से सब जग उपजियो आदमियत हो इंसान होकर भी इंसानियत ना हो तो क्या लाभ मानस की जात एक है इसलिए सबको एक समान समझो। हम सब एक हैं एक मालिक से पैदा हुए हैं फिर भी भेद भाव रखते हैं छोटी जात वाला खून दे देता है। जो इंसानों में भेदभाव रखते हैं अगर ग्रुप एक हो गया तो खून चढ़ा देते हैं। जहां एकता की बात है तो इंसान के अंदर की बनावट एक सी बनाई। अंतर केवल विचारों में है। सतगुरु एकता का पाठ सिखाता है। ओम् एक है ला ईला इल इलाह का अर्थ भी यही है कि ईश्वर एक है। God is One. एक ओंक़ार सिखों ने कहा हम सब एक हैं हमारा मालिक भी एक है। पढ़ लिया सुन लिया यह आम बात है पर उस पर चलना है। सुनार सोने के टुकड़े से कई आभूषण बना देता है एक तत्व के आकार अनेक हुए नाम अनेक हो गए। सब गहनों को गला दो तो पहले वाला एक रूप हो गया। अलग अलग नाम मनुष्य के हैं। जलने के

बाद 5 तत्व तत्वों में मिल जाते हैं। यह बात सत्संग में ही सुनने को मिलता है। सत्संग में कोई चढ़ावा नहीं होना चाहिए। ईश्वर का नाम अनमोल है। बिना दाम बिकाये जो आता है सत्संग में उसे ही मिलता है। जो जीव इन पर विश्वास करते हैं प्रभू से जुड़ जाते हैं। भेद भाव वाले इस सत्य तक नहीं पहुंच सकते अपने ही स्वरूप को जानो। तू मिल गया है अब मुझे कोई भय नहीं है। निर्भय होए भजो भगवाना। प्रेम में कोई इनाम नहीं चाहिए। प्रेम तो बेशर्त दान है।

(1) मुझसे मिलना फिर आपका मिलना
आप किसको नसीब होते हैं
वो बड़े खुशनसीब होते हैं
वो जो मालिक के करीब होते हैं

(2) जब तबीयत स्वयं पे आती है
जब चेतना स्वयं पे आती है
जब सुरती स्वयं पे आती है
मौत के दिन क़रीब होते हैं
माया की मौत के दिन क़रीब होते हैं
मैं मैं की मौत के दिन क़रीब होते हैं
वो बड़े खुशनसीब....

जिन्हें जीवन में गुरु का साथ मिला उससे बड़ी खुशनसीबी क्या हो सकती है। जीवन सफल उसी का है जिसको तूने जगा दिया। ना पाया हमने अमीर होके ना पाया गरीब होके। उन्हीं की पूजा हुई है सफल जिसको तूने अपना लिया।

ये अनायास प्रेम उतरा है प्यास उतरी है ये हज़ारों जन्मों की तपस्या का नसीब है बहुत कठिन है प्रेम बहुत सहज है प्रेम जब हृदय में प्रेम उतर आए फिर उसके आने में देर नहीं लगती है। राम कृष्ण कहते हैं विवेकानंद सुन कि केवल दो आंसू ही काफ़ी हैं। जब तक वो प्यास ना जग जाए। फिर कोई साधन करने की ज़रूरत है। बच्चा जब मां के लिए रोता है तो वो स्वयं उतर कर बाकी सीढ़ियां चढ़ा देती है मां को ख़याल रहता है कि कहीं मुंह में ग़लत चीज़ ना डाल दे। वो चाहे कोई भी काम करती रहती है पर उसका ध्यान बच्चे में ही रहता है। ऐसी प्रीत परमात्मा में होगी तो कोई भी कार्य करते हुए मनोवृति प्रभू में ही लगी रहेगी।

जिसने मुझे सुख पहुंचाया उस को कभी दुःख ना पहुंचाना ऐसा भाव रखें तो वो हज़ार भक्ति से अधिक है। दुनिया देखे ना देखे भगवान सबको देख रहा है। जब ऐसा अवसर मिल जाये तो चूकना नहीं सबके लिए मैत्री भाव रखना। ये पेड़ पौधे हैं। इनमें ख़ास बात होती है। एक Scientist ने प्रयोग किया। एक माली को रखा सम्भालने के लिए सेवा करना पानी डालना इन सब से बात भी करना। कमरे में उन गमलों को रखा और उन पर टेस्ट किया तारें जोड़ दी गईं Graph बनाने के लिए। एक व्यक्ति को कहा एक गमले को तोड़ो तो सभी गमलों में भय पैदा हुआ। प्रसन्नता का अलग Graph बनेगा। माली के आते ही पौधे प्रसन्न हो गए। गमला तोड़ने वाले को बुलाया और पौधे भयभीत हो गये। पौधे भी संवेदनशील हैं पर बेहोशी में जीने वाले हैं सांस भी लेते हैं जीवित हैं हरेक को संसार में प्रेम की आवश्यकता है। लेकिन वह प्रेम हमें मिलता है सतगुरु से।

राजपुरोहित सोने की दुकान पर गया एक ज़ेवर चोरी कर लिया जैसे सुनार भी देखे। रंगे हाथों पकड़ा गया न्यायधीश ने दंड दिया क्योंकि नियम तोड़ा पुरोहित ने कहा मैं आस्तिक व्यक्ति भगवान को मानने वाला पर ग़लत काम किया तो भी राजा या न्यायधीश तुम्हारी सहायता नहीं करेंगे। ऐसे ही धर्म के काम करने वाला भी यदि नियम तोड़ेगा तो दंडनीय होगा। धर्म का शुद्ध स्वरूप समझना है। हम अपने कार्य कर्मों को सुधारें।

कायिक कर्मों को संयम करना बहुत अच्छा है
वाणी को संयम करना बहुत अच्छा है
पर अधिक अच्छा है मन पर संयम करना

अंतर मन की गहराइयों को समझो। जड़ों तक संयम हो जो ये संयम करेगा वो सारे दुखों से मुक्त होगा। यही सार्वजनिक विद्या है। ये ऊपर ऊपर का चित्त उसको हज़ार समझाऐं कि वीतराग बनना चाहिए। अपने को सुधारने की कोशिश करता है। मुलम्मा लगाना यह थोड़ा तो अच्छा है पर अंदर सुषुप्ति ज्वालामुखी है जो कब फट जाये कौन सा फट पड़े इन का अनुशासन ज़रूरी है। गहराइयों से काम करो। ये इच्छा नहीं पूरी हुई वो नहीं हुई ये चाहिए वो चाहिए। फिर बदले की भावना जाग्रत हो जाती है। धर्म ज्ञान क्या है कैसे काम करता है। प्रतिक्रिया राग द्वेष होती है। पर हमें अपने पर संयम रखना है। जहां अप्रिय अनुभूति हुई वहां द्वेष पैदा होगा। अंतर मन प्रति क्षण हर बात को जानता रहता है। सर्वत्र समझने लगता है। अहिंसक को ही अहिंसक कहेगा। जो आरंगो का त्यागी है वो ही कहा जाएगा अनारंगी। अंदर शांति आ जाएगी चाहे

जिस वर्ण आश्रम का है उसका कल्याण ही कल्याण है मुक्ति ही मुक्ति है।

पिया पिया कहते मैं ही पिया हो गया अब किसको पिया कहें। एक अवधूत संत थे। इशारा करके बुलाया पूछा तुम्हें भगवान का दर्शन करना है? आसमान की ओर इशारा करके खूब हंसे आनंद से। जब हंस चुके तो हमने कहा यहां नहीं दिखाई दिया। जो तुझमें है सो मुझमें है। ऐसे मस्ताने संत ढूंढे से नहीं मिलते।

पत्र ५४ - शरीर के सुख दुःख

शरीर के सुख दुःख उतार चढ़ाव तो सभी के जीवन में आते हैं। ज्ञान द्वारा भी उनसे बच तो नहीं सकते पर उनको सहन करने की शक्ति मिल जाती है। गुरु ऐसा निष्काम प्रेम सिखाता है कि कोई भी हालत आती है उसे प्रेम से Face कर सकते हैं। Everything comes from God जो भी है ईश्वर की सौग़ात समझकर सर पर उठा लेते हैं। यह जीवन जिसका है ये ही इसकी रक्षा करता है इसके विषय में कुछ भी सोचना हमारा धर्म नहीं है। डोरी सौंप के तो देख एक बार उदासी मन काहे को करे। ये भी गुजर जाएगा वो भी गुजर जाएगा।

Your own self

Pramila

पत्र ५१ - सीताराम सीताराम कहिए

सीताराम सीताराम कहिए जाही विधि राखे राम ताही विध रहिए

(1) मन हो निर्मल तन हो पावन ऐसे काम कीजिए।
जीवन ये अनमोल मिला उसको कुछ नाम दीजिए।
देवकीनन्दन जय घनश्याम राधेश्याम कहिए।
जाही विधि राखे श्याम ताही विध रहिए।

(2) नारी शक्ति का आदर कीजै, मन दूषित ना कीजिए
इस की मजबूरी को मज़दूरी का रूप ना दीजिए
जय जगदंबे जय 2 अम्बे, जय माता दी कहिए
जाही विधि राखे श्याम ताही विध रहिए।

(3) मात पिता और गुरु की शिक्षा, हरदम धारण कीजीए।
ना कोई दुख होगा, जीवन का आनन्द लीजीए।
वाहि गुरु वाहि गुरु, वाहि गुरु कहिए
जाही विधि राखे श्याम ताही विध रहिए।

(4) ना हिन्दू ना मुसलमान ना सिख ईसाई बनिए।
एक बिरादर इंसा सारे, चाहे जो भी कहिए।
साई राम साईं श्याम, चाहे जो भी कहिए
जाही विधि राखे बाबा ताही विध रहिए।

भगवान शंकर ने विष कंठ में रखा और नीलकंठ कहलाये। जे गुरु झिणके तो मीठा लागे, जे बख़्शे ता गुरु वढ़याई।

किसी अनजान से तो तुम झगड़ोगे नही। डांटेगा भी तो अपने वालों को ही । गुरु नानक ने अपना उत्तराधिकारी चुना। उनकी परीक्षाएं ली तो एक लहना ही उनमें खरे उतरा उनके बेटे भी नहीं खरे उतरे। गुरु नानक को प्रणाम किया गीली घास का गट्ठर लहना उठाकर लाया पत्नी की नज़र पड़ी उसने कहा उसके नए कपड़े कीचड़ ने ख़राब कर दिये गुरु नानक बोले ये तो केसर का रंग है। उसे अपनी गद्दी पर बिठाकर गले लगाया और कहा —

ज्योत से एक ज्योत को सत्गुरु ने पैदा कर दिया
अंग से अंग लगाकर लहने को अंगद कर दिया

गुरु पूरा हो तो शंका का सवाल नहीं अधूरे लोग जब गुरु बन गए हैं तो इस पदवी का दुरुपयोग भी करते हैं। जब शिष्य तैयार हो जाता है तो गुरु उसे मिल ही जाता है। क्या आप में ये योग्यता है बाहरी शिष्टाचार मंत्र लेना देना तो कोई परंपरा नहीं है ऐसा नहीं जो मास का गुरु है तो उसे तुम भी गुरु मानो बिना श्रद्धा के कैसा गुरु। गुरु है ज्ञान। पानी ज़मीन के अंदर एक ही है चाहे कहीं से भी निकले। गुरु अगर शरीर में नहीं है तो जहां भी तुम्हारी श्रद्धा है वहां लगेगा मेरा गुरु ही बोल रहा है

यहां Counting नहीं कि कितने चेले हो गये। कहीं गुरुओं के पास रजिस्टर बने हुए हैं कि कितने चेले हैं। हमें चेलों से मतलब नहीं मेला लगा चेला आया मेला गया चेला गया जो अपने भीतर माया का पर्दा उठा ले वो शिष्य हुआ। मेला देखने आते हैं कहीं और चले जाते हैं। “साधना के लिए मेरे पास टाइम नहीं है लोग कहते हैं” तो फिर हमारे

पास क्या ज़्यादा टाइम है। चाहते हो कोहेनूर हीरा मिल जाये और दाम पत्थर जितना भी नहीं है।

मन वस होय नानक जे मन वस होए।

गुरु से कहेंगे तुम हमारे लिये समय निकालो पर तुम कहते हो देना कुछ ना पड़े मिल सब कुछ जाये।

कहीं ना कहीं श्रद्धा प्रेम की कमी है। प्रेम हो तो मन यूं वश हो जाता है। बुलाशाह कहता है मैं बस मेरे गुरु का दीदार करता हूं। ये तन मेरा चश्मा होवे ते मैं मुरशिद वेख ना रजा हूं इक नू वेख के तृप्ती ना होवे तो दूसरा दर कैसे देखू तन मुरशिद का काबा है तो आशिक सज़दे करदे हूं।

कर कर सजदे मैं रजदा नहीं हुन केड़े दर जावा मैं एक एक रोम में लाख आंख हो एक थके तो दूसरी खोलूं। जिसका दर्शन कर के भी मन नहीं टिकता। अपने दिल के घर को ठीक करें। जहां प्रभू को बुलाना था दिल के आसन को भी साफ़ रखो क्या गंदे में उसे बिठाओगे

निर्मल मन सोई मोहे भावा
मोहे कपट छल छिद्र नही भावा

परमात्मा का स्वरूप देखने में नहीं आता ज्ञान के पंथ पर चलने वाले के लिए गुरु ही सभी कुछ है सब रूप अवतार इसी विष्णु के ही अवतार हैं। मन विष्णु की कल्पना में चार भुजा वाला विष्णु देखते हैं। ये शंख चक्र गदा पद्म सब चिह्न हैं। चक्र जो चारों दिशाओं में घूम रहा है Round की कोई दिशा नहीं है वो व्यापक है व्यापक परमात्मा को समझाने के लिए चिन्ह है परमात्मा चेतन्य रूप है

कमल का रूप है खिलना मुरझाए पड़े हो खिले हो या नहीं कमल की तरह तुम क्या चहकने में चू चू कर रहे हैं झूठ ठोस नहीं

शंख चिन्ह हैं ज्ञान का सत्य का चिन्ह है गदा क्षीर सागर भी संकेत है क्षीर माना दूध दूध चिन्ह है पवित्रता का शेष माना आधार वही तो सबका आधार है। तुम्हारा मन ही माया का हिस्सा है तुम्हारे मन में भी लहरें हैं विष्णु के सब अवतार है। तुम उसे किसी Form में ढूंढ़ोगी तो नहीं मिलेगा। जहां चंद्र नहीं सूर्य नहीं पर पांच तत्व पूरे विश्व को धारण किये हैं। वो आदि शक्ति ब्रह्म है

आप किसको मानते हैं कोई राम कोई कृष्ण आपका इष्ट जो है उसमें समा जाओ।

पत्र 50 - जीवन में साहस और धीरज

जीवन में साहस और धीरज की ज़रूरत है तुम अपने शक्ति स्वरूप को याद करो।

मैं कौन हूं? साक्षी देखने वाला तुम्हीं देख रहे हो। देखना हमारा स्वभाव है। केवल देखना और देखने वाले को जानना। ओम् यह मेरा आदि स्वरूप है। ज्ञान तुम्हारे तन मन को शक्तिशाली बनाता है। अपने को उस विराट से मिला दो। जिसके लिए आए हो अपने अस्तित्व में। मन बुद्धि से परे। केवल बोलना नहीं अपने जीवन में उतारना है औरों को प्रभावित करने के लिए नहीं बोलना नहीं। गुरु इशारा देता है अपने भीतर उतार दो और अगर उस प्यास को नहीं जगाया तो सब व्यर्थ हो जाता है। अपने भीतर से बदल जायें।

अब उनका था उनको सौंप दिया। दिल दे के तक़ाज़ा कौन करे। तेरा और मेरा दिल एक हो गया। अब ना तू मुझसे जुदा ना मैं तुझसे जुदा। तू और नहीं मैं और नहीं। प्रेम दो को मिला के एक कर देता है। दुनिया तोड़ के दो टुकड़े कर देती है। तुम्हारे प्यार की कद्र दुनिया वाले नहीं पर केवल एक सतगुरु ही करता है।

अनुभवी पुरुष का एक एक शब्द हर एक को डूबाता चला जाता है। तुम्हारा प्रेम प्यास अंदर बहने लगता है। भागवत गीता एक अर्जुन को सुनाया। जो अर्जित करने में पारंगत था उसकी ज्योत जलाई। सतगुरु ने स्वयं स्वरूप की ओर इशारा किया त्रिलोकी का अद्भुत दर्शन कराया और बोला मेरा मोह अहंकार नष्ट हुआ मैं प्रकाशित हुआ। मुझे अपने

स्वरूप की स्मृति हुई और अपने सर्वस्व को धन्यवाद किया। एक मात्र सार है गीता का ज्ञान। तमाम शास्त्र अपने ही स्वभाव को बदलने को कहते केवल सुनने सुनाने से नहीं पर देखना अपने भीतर ये अन्तस ज्ञान तुझे मालामाल कर देता है।

(जीवन) सर्व के हित के लिए हो जाये - ज़िंदगी का सफ़र करने वाले अपने मन का दीया तो जला ले अंदर का दीया तो जला ले भीतर का दीया तो जला ले तूने लाखों दीये तो जलाये पर बाहर बाहर ही जलाये बाहर लाखों दीये तो जलाये भीतर का दीया तो बुझा है अन्तस का दीया तो जला ले ये है मेहर भीतर की कमा ले। अपने परमेश्वर को जानो। भीतर की जागृति हो जाए। आज तक उस ओर देखा ही नहीं था जिसके लिए जन्म मिला था। ये दुर्घटना हो गई। क्या ये अपना सौभाग्य कम है जो हमने भीतर को देखा तो सही। जो दिखाई दे रहा है ये Changeable है। एक मात्र तू Unchangeable है। ये है ध्यान भीतर का दिया जो सदियों से जल रहा है उसे उघाड़ दे।

जाग जा ओ मनुवा जाग रे, ये समय जागन का आया ये अवसर जागन का आया, मानव जीवन को पाकर के तूने विषयों में व्यर्थ ही गंवाया।

मंदिर के बाहर तू खड़ा है तू भीतर क्यों नहीं आये। शरणागति वो कुल्हाड़ी है जिससे बड़े से बड़े अज्ञान के पेड़ को काट सकते हैं।

अर्जुन को ज्ञान तब दिया जब वो शरणागत हो गए। आप मेरे गुरु हैं और मैं आपका शिष्य हूं। तब कुरुक्षेत्र के रण भूमि में दिया। ब्रह्म भाव रखा। गीता में भगवान ने सभी को खुला निमंत्रण दिया है कि सभी कर्म

धर्म छोड़कर मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे सब पापों व तापों से बचाऊंगा।

माया से U turn ले लो। अपने स्वरूप में वापस आ जायें। जितनी दूर जायेंगें उतनी मेहनत लगेगी लौटने में। अपने निज रूप के आनंद में रहें तो संसार का कोई दुःख कलेश राग द्वेष लोभ मोह हमें नहीं सताएगा। बस केवल निराकार शून्य में आ जायें। व्यर्थ अपना समय ना बर्बाद करें सोचने में। ये जन्म तुम्हारे लेखे। एक बार ये बहादुरी करनी पड़ती है हर एक को। अपने तन मन धन की आहुति देकर अपने प्रीतम को रिझाना है।

Your own self Pramila

पत्र 51 - आप सभी का परम पुरुषार्थ

आप सभी का परम पुरुषार्थ इस निष्काम ज्ञान के लिए हो रहा है। सभी प्रेम पूर्वक एकता से इस राह पर आगे बढ़ रहे हैं। निष्काम भाव से ही यह जीवन ज्ञान यज्ञ में स्वाहा करके जीवन मुक्ति का आनंद ले रहे हो। बस यह प्यार सभी पर बरसाते रहो। सभी का जीवन (जीने का ढंग) सुधर सकता है। सभी के लिए बेहद प्यार।

Your own self Pramila

पत्र 52 - अपने प्रे म को घर परिवार

अपने प्रेम को घर परिवार में क़ैद न रख कर सारे संसार से प्रेम करें उस पर परमात्मा की कृपा बरसती है ऐसा इंसान अपने को कभी छोटा नहीं समझेगा। सभी मेरे सगे हैं सभी के लिए कुछ ना कुछ इस शरीर से हो जाये घर से निकलो सभी के प्रति अच्छा भाव रखो। अंदर संकल्प रखो आज का दिन गुरु की आज्ञा में बीते। माथे पर शांति हो। तू सारे ब्रह्मांड का राजा है मैं तेरा बेटा हूं मेरी चाल में मस्ती रहे कभी लड़खड़ाऊं नहीं यही गुरु का आशीर्वाद रहे गर्म हवायें आयेंगी पर मेरी अंदर की मस्ती कम न हो। ईश्वर चंद्र विद्या सागर को सम्मानित करना था। कपड़े अच्छे पहन कर जाना लोगों ने कहा अपनी दुर्दशा ना दिखाना। वे सोचने लगे दिखावा करूं या जैसा हूं वैसा चला जाऊं। सवेरे सैर पर निकला चाबी हाथ में ले कर एक मुसलमान को आते हुए देखा बड़ी मस्त चाल से चलता हुआ जा रहा था। नौकर पीछे से आया घर में आग लग गई है। नौकर ने देखा वह धीरे धीरे मस्त चाल से आ रहा था नौकर से मीर साहिब ने कहा मैं अपनी मस्ती की चाल चल रहा हूं वो क्यों भूलूं चल तो रहा हूं। बाहर ग़रीबी आ जाये तो आ जाये पर मेरी मस्ती में परिवर्तन ना आ जाये। ऐसी ही चाल में चलता रहा ईश्वर चन्द्र ने देखा वो कोई ड्रामा तो कर नहीं रहा है कोई नाटक तो कर नहीं रहा उसे देख कर ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने कहा हम चाहे फटे हाल रहेगा पर हम अपनी मस्ती में रहें। हर हाल में हर चाल में अपने आनंद में रहें जिसे अपनी दीवानगी है वो सदा मस्ती में रहेगा। भगवान उस से प्यार करते हैं जिसने कभी किसी से वैर नहीं रखा। निर्मोह मैं मेरे का भाव नहीं है। गीता में भगवान ने कहा सब मेरे हवाले कर दे। ज्ञानी जहां रहेगा वहीं

मंदिर हो जाता है। ज्ञानी हर जगह अपना प्रेम बिखेरता रहता है। गुरु की वाणी हमें पवित्र करती है। हमेशा अपने से चढ़े हुओं का संग करना चाहिए। Bad thinking bad food bad company से बचना चाहिए। सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा

अहमता ममता सत्गुरु तोड़ी
प्रेम की डोर उन संग जोड़ी
टूट गया जन्मों का घेरा
सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा
तेरा ही प्रभू तुझे चढ़ाया
मन मेरा प्रभू है मुस्काया
नाचूंगी अब सांझ सवेरा
सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा
मैं मेरी सब छूट गयी है
प्रेम तेरे की लगन चढ़ी है
प्रेम तेरा अब पाया फेरा
सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा
तन मन सारे प्रेम पुकारे
अब तो मैं प्रभू तेरे सहारे
चित चाहे बन कर चितेरा
सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा

सब तेरा है यही सच है तुम्हारे पास अपना कहने को कुछ नहीं है। उसका अस्तित्व है इसलिए मेरा है उसका होना पहले है मेरा कहना बाद में है उसका अस्तित्व पहले है मेरा बाद में है। गुरु नानक साहिब ने क़हा आद सत जुगाद सत, है भी सत नानक होसी भी सच है भी सच TV में तुम्हारी मर्ज़ी है तुम Off करो तुम On करो। पर इस वक़्त जब हम तुम्हारे पास हैं तो तुम Off/On नहीं कर सकते हो तो अभी तुम्हारे सामने है यह सच है लोग संत माना बूढ़ा या सर गंजा वाला हो दाढ़ी वाला हो। साधारण वेश में Young age में गुरु हो सकता है यह नहीं जानते इस लिए हम से ही पूछते हैं गुरु जी कब आ रहे हैं हम कहते हैं अभी पीछे पीछे आ रहे हैं। क्या कहें कि मैं ही तो हूं। आम आदमी आदि सत जुगाद सत और होसी भी सच नहीं हो सकता। अनुभव और विश्वास अलग 2 चीज़ है परमात्मा शब्द नाम तस्वीर देखते हैं जब जब जीवन में परेशानी आती है हम भगवान को नहीं मान पाते Unfortunate Stages आती हैं तब नहीं मानते अगर परमात्मा होता तो मुझे इतने कष्ट नहीं आते। अगर मेरा दुकान ना चला या दुख आये तो क्यों दुख दिया। लोगों की श्रद्धा एक घटना से अविश्वास में बदल जाती है। जीवन में झेलने की क्षमता नहीं रहती। परिस्थितियां मेरे अनुकूल रहें प्रतिकूल ना हों। जितने निश्चय से गुरु नानक कह रहे हैं ऐसे तुम कह सकते हो क्या कि आदि सत जुगाद सत है भी सत होसी भी सत।

कर्ण धर्माता हुआ कि मैं मर जाऊं और मेरा भाई राज्य करे। क्षत्रिय प्रतिज्ञा नहीं त्यागते कर्ण ने सब छोड़ दिया नकुल सहदेव से कहा हट जाओ अपने बराबर वाले पर वार करो हम छोटों पर वार नहीं करेंगे युधिष्ठिर को हटा दिया अर्जुन को भी नहीं मारा चक्रव्यू में द्रोणाचार्य सेनापति थे तभी पहला बाण कर्ण ने चलाया था। कर्ण ने कहा मैं युद्ध

के नियम नहीं तोड़ूंगा। यदि गीता सिखाने वाला सत्गुरु है तो वो तुम्हें भी भेदभाव से छुड़ा दिया भागवत रामायण में कूटनीत वग़ैरह सब कुछ है। पर गीता में पूरा तत्व ज्ञान है। सब को मैं देता हूं पर फिर वो स्वर्ग आदि के फल भोगेगा फिर मृत्यु लोक में आएगा। देव दुर्लभ मनुष्य तन है। योगभ्रष्ट अनायास योग युक्त हो जाता है। भरतरी पिंगला के सौंदर्य में फंस गया राज्य व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई। भरतरी को भगवान ने बुला लिया। एक फल संत ने दिया अमर फल था राजन आप सेवन करें अमर हो जायेंगे। बहुत विद्वान भी था पिंगला को दे दिया कि इसका सौदर्य दमकता रहे। लेकिन पिंगला का प्यार राजा से ना होकर एक सईस से था और उसने वह फल सईस को दे दिया और फिर सईस का प्यार नर्तकी से था उसने उसे दे दिया। नर्तकी ने सोचा मैं अधिक समय जीकर क्या करुंगी। राजा बहुत धार्मिक प्रवृति के हैं और उसने वह फल राजा भरतरी को दिया। भरतरी ने फल दोबारा देखा तो उसका दिमाग़ घूम गया। गौरख नाथ की कुटिया के बाहर हिरण डाल दिया कि इसकी खाल पर बैठ कर तपस्या करना। राजा वैराग्यवान हो गया। कई वर्ष गोरख नाथ के आश्रम में रहा अनेक ऋद्धियां सिद्धियां हासिल की कई साधनायें की गुरु ने कहा अपनी पत्नी को मां कहकर उनसे भिक्षा ले आओ। राज महल की दासी ने राजा को आते हुए देखा तो उन पर कचरा डाल दिया। राजा ने क्रोध से उसे देखा तो दासी ने कहा जाओ अभी तेरा योग अधूरा है उसके बाद फिर तप किया और अंत में गुरु नानक जी से भिक्षा लेकर मुक्त हुआ। उन्होंने उसे संन्यास का अर्थ बताया (साधो ऐसो कर सन्यासा भजन)

राम कृष्ण परमहंस को बचपन से काली मां में स्नेह था। बचपन में ही गीत गाता था जय 2 मां जय 2 मां दे दे निज चरणों का दान। तुझको

चाहूं तुझको मानूं तुझ पर ही निज जीवन वारु ध्यान रहे तेरा ही निश दिन दे भक्ति का उपहार। दे मां निज चरणों का ध्यान - जै जै मां जय मां।

पिता ने देखा अंदर में सोचा हम तो कृष्ण भक्त हैं। पर यह काली मां के भजन कैसे गा रहा है कैसे और कहां से सीखा। 18 वर्ष की आयु में कालरा हो गई डॉक्टर ने जवाब दिया पर उसकी मां को विश्वास था ये संतों कि कृपा से मिला है यह ऐसे नहीं जाएगा। मां के अंतर्मन से गीत निकला

क्या नाहीं घर तेरे मेरे साईं
घर तो तेरे तो सब कुछ है जित देवे सो पावे।
क्या नाहीं घर तेरे जित देवे सो पावे।

बच्चे के मन में प्रभू का सिमरन होता रहा और कुछ दिनों में ठीक हो गया। कुछ समय बाद उसका बाप कहीं बाहर ले गए और पीछे से मां का देहांत हो गया। मां ने कहा मैंने तुम्हें जगत जननी को दिया और वो उस मां का पुजारी हो गया। उसे रवीन्द्र नाथ के गीत अच्छे लगते थे संसार के सुख वक़्त के साथ ख़त्म हो जायेंगे बाकी यह आनंद तो आपको भी नहीं है। संगीत के अभ्यास से उसकी आवाज़ और अच्छी होती गई। गायन विद्या आ गई और वो उस संगीत में इतना खो जाता था कि उसे शरीर की सुध भी नहीं रही। उस्ताद का बेटा उसके घर जाकर उसका वाद्य यंत्र बहाने से उस से ले लिया और वो नशई था उसने वह गिरवी रख कर शराब पिया। मुकुंद को बहुत दुख हुआ लेकिन फिर ईश्वर की कृपा से उसे वो साज वापस मिला और अपने ज्ञान के प्रेम की मस्ती में डूब गया। महापुरुष अपने अनुभव का ज्ञान ही सबको देते हैं।

लोग ईश्वर को आकाश में ही ढूंढते हैं। लगन पैदा हो जाती है तो परमात्मा तो स्वयं में ही मिलता है। “गुज़र ना जाये यह अवसर कहीं खिज़ा की तरह, आज तो खुल के बरस मेरे मन के आंगन में बहुत बड़े पहाड़ों से उतर के तेरे चरणों पे गिरा हूं बस मिल गया तेरा द्वार जहां तेरा प्यार मिल गया अब तेरे चरणों में गिर कर मैं अपने को धन्य मानता हूं। मेरी हस्ती को मिटा दे। यह कृपा करुणा गीता जाकर जीवन का दर्शन करा देती है यह प्राप्ति ये उपलब्धि को प्रतिष्ठत करता है। अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं। राम कृष्ण के पास विवेकानंद मिला।

आज तो खुल के बरसे मेरे मेहरबां की तरह अपनी प्यास लेकर विवेकानंद अपने गुरु के पास पहुंच जाता है और गाता है

तुझे मैं दिल में बसाना चाहता हूं
तुझे मैं अपना बनाना चाहता हूं

नींद प्राकृतिक समाधि है जब तक जग रहे दुख है ना विकार है क्रोधी भी क्रोध मुक्त होता है लोभी लोभ से मुक्त होता है। ऐसा शांत चेहरा होता है। इतनी ठंडक ठहराव मिलता है नींद में ना मान ना अपमान ना दुख ना सुख

जैसे स्थित प्रज्ञ के लक्षण दिखते हैं पर वो जाग कर बुद्धि जाग जाती है तो फिर वही विकार आ जाता है। मैं तो तब भी था बुद्धि को ही स्मरण दिलाया गया है। नींद का सुख तुमने देखा। बुद्धि को काम करने के लिए मेरी Power की ज़रूरत है पर आनंद के लिए बुद्धि गुम ही करनी है। मैं बुद्धि नहीं हूं यह भी ख़्याल ही है पर आत्म आनंद में मैं भी नहीं रहती। या अच्छा हुआ या बुरा सपना आ गया। ट्रेन में जाना है तो

स्वप्न में देखा ट्रेन तक पहुंचा और उसमे सो गया पर सोता रहा घर में ही। फिर सच में आंख खुली तो देखा अपने घर में ही सोया पड़ा था। बाक़ी विचार से घूम आया। जैसे संस्कार वैसी ही बुद्धि होती है। तीन प्रकार के श्रोता

(1) सोता - नींद आती है

(2) सरोता - तर्क वितर्क करते हैं

(3) श्रोता - ध्यानपूर्वक सुनने वाले

(4) तोता - केवल रटने वाले

अपने विकारों पर नियंत्रण कर। जो सारी चाह मिटा रहे हैं उन्हें ईश्वरीय पद मिलता है। बड़ा आदमी वही है जो विश्व में अपने समस्त विकारों को जीत लिया नित्य ही देते जाओ। कोई सुख मांगने आया है तो दे दो। वही है दाता जो मांगने वाले को देता जा रहे अपने में अपने प्रीतम को पा रहे हैं। आप अपने प्रीतम के अंश को पा लें। प्रेमी प्रीतम में भेद नहीं रहता हम ना तुम दफ़्तर ही गुम। जहां एक हुए वहां ज्ञानी। भक्ति और वेदांत का एकाकार। रस की चाह सब को है। रस की मांग है पर उदगम का पता नहीं है कुछ पता नहीं रति रितंबरा हो जाएगी। कोई रस का दाता है कोई भोगता है ईश्वर रस छलके आपकी वासना नियंत्रित हो जाये। आप तो करने वाले कुछ नहीं हो। आप तो जन्म जन्मांतर से यहीं हो। हित की भावना से भरे रहो। अपना उद्देश्य अपने को जानना है। भिड़ना है मन से तो युक्ति से चलो। विकारों को उचित रास्ता दो काम को राम रस से भरो। संयम से रहो।

पत्र 53 - सभी प्रे मी अपनी लगन

सभी प्रेमी अपनी लगन व प्रेम से सभी मुर्दे आबाद करने में लगे हुए हो। सभी का प्रेम भावनाओं से मिलता रहता है। प्रेम और एकता से ही जीवन में उन्नति होती है। बिन गुरु वक्त मुक्ति नहीं पावे। गुरु की महिमा भगवान से भी अधिक बताई है। गुरु कृपा जिह नर ते कीनी, तिह ये जुगत पछानी, नानक लीन भयो गोविंद स्यों ज्यों पानी संग पानी। गुरु के प्रेम की वर्षा भी भीतर बाहर हो रही है। मीह बसिया तेरी रहमत दा, सब जग हरिया होया।

Your own self Pramila

पत्र 54 - पति ध्यान में बै ठा था

पति ध्यान में बैठा था पत्नी ने उसके दोस्त से कहा पति जूता ख़रीदने गया है वो क्रोधित हुए। ध्यान तुमने साधन बनाया है और भीतर देख कि तू ध्यान में था या मार्के में था। प्रभू प्रेम का रस लेना है सब तरफ़ से ध्यान हटाकर अपने स्वरूप में आ जाओ। जन कल्याण होना है तुमसे।

(भरतरी महाराज की कथा) संत की कुटिया के आगे हिरन फेंका और कहा अगर शक्ति है तो हिरन को जिला दो संत ने जिला दिया संत ने पूछा कौन हो? भरतरी ने अपनी पहचान बतायी। गोरखनाथ ने खप्पर दिया कि पिंगला से भिक्षा मांग आओ (भिक्षा दे दे मैया पिंगला)। पिंगला ने अपने को अग्नि में अपने को जला दिया राजा पिंगले पिंगले करता हुआ लौटा भरतरी से संत ने कहा राख ले आओ पहले उसकी मुक्ति होगी फिर तुम्हारी होगी। भगवान जब दया करते हैं तो ऐसा ही वैरागय देते हैं जो तीर लग जाता है और सीधे गुरु की शरण लेगा। अभागा वो है जो अभी ज्ञान में आया नहीं। गीता धर्मशास्त्र है। जो मेरा ज्ञान मेरे भक्तों में देगा वो मेरा प्यारा मेरा स्वरूप हो जाएगा। मुझसे भिन्न कहीं श्रद्धा रखता है भक्त उनकी भी श्रद्धा मैं ही पक्की करता हूं।

(कंजूस चौधरी की कथा) चौधरी के घर दामाद आया उसकी पत्नी ने एक महीने से देसी घी इकट्ठा करके एक मटकी में छीके पर चढ़ा के रख दिया और खाने के समय दामाद को ऐसे ही भोजन परोस कर दिया जब चौधरी और उसकी पत्नी किसी काम से बाहर गए तो दामाद ने मटकी उतार के घी गरम करके वहीं छींके में रख दिया जब रात को भोजन करने लगे दामाद की निगाह मटकी पर थी फिर चौधरी जी ने झूठ बोला

कि सचमुच उसमे घी नहीं है विश्वास ना हो तो दिखा दें। चौधरी ने सोचा सर्दी के दिन हैं घी जमा होगा उलटने से गिरेगा नहीं जैसे ही उसने मटकी टेढ़ी की सारा घी नीचे भोजन की थाली में गिर गया झूठ की पोल खुल गयी।

पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम
दोउ हाथ उलीचिये यही सयानो काम

उदारचित होकर धन खर्च करना चाहिये। मन वचन कर्म से हर कार्य की एकरूपता हो जाए तो कार्य सहज होता है। मन वचन कर्म भिन्न भिन्न हो जाये तो कार्य सही नहीं होता। सुई में धागा डालने के लिये भी एकाग्रता की ज़रूरी है एकाग्रता का नाम आर्जव। एकाग्रता भंग का नाम माया है। ये माया अधोगति में ले जाती है। मेरी प्रतिष्ठा धूमिल ना हो जाए। एकाग्रता मन की नहीं हुई। उन्हें गुनों का लाभ ना मिलकर निंदा मिली।

माया में गिरने से 84 लाख योनियां मिलती है मायाचारी ऐसा आचरण है जो पतित मार्ग पर ले जाती है। कपट करने से कोई सुख नहीं मिलेगा। कपट न कीजे कोय कपट करने वाले चोर आदि शहरों में नहीं रह सकते उन्हें डर लगता है कि हमारी पोल न खुल जाए। माया का त्याग करना चाहिये मायाचारी ने अपने को तो ठगा और उससे वो निम्न योनियों को प्राप्त होता है। पुत्र ने मां से कहा ठगना बुरा है मैं सोचूं हरि से मिलूं पर माया पिशाचीन चूस लेती है दूसरों को वेदना देते हैं अनाचार का व्यावहार होता है ये पाप के कारण है सरलता कोमलता का व्यवहार अपनाना चाहिये अपने जीवन को उच्च शिखर पर ले जाये। मोह माया मद मत्सर को हटाये।

छाया माया एक सी विरला जाने कोय
भक्तों के पीछे फिरे सन्मुख आगे सोय

जितना उसके पीछे जाते उतना अधिक परेशान करती है। हम पानी में रहें पर पानी नाव में न आ जाये। माया आएगी तो बुद्धि कुबुद्धि आ जायेगी तो विनाश हो जायेगा विनाशकाले विपरीत बुद्धि। बुद्धि की समचित्तता होती है तभी आनंद आता है। हमे अपने जीवन में कुबुद्धि रूपी माया को छोड़कर सुबुद्धि को अपनाना पड़ेगा। कुबुद्धि और अज्ञान को दूर करें। ये सत्गुरु की कृपा से होता है सत्गुरु में चुंबकीय शक्ति होती है। तुम इनकार मत करना ऐसे सत्गुरु के सामने बैठते ही तुम्हें आनंद मिलेगा हल्के हो जायेंगे। गुरु का वरद हस्त सदैव तुम्हारे ऊपर है। उनके आगे नम्रता भाव से श्रद्धा से बैठें तो गुरु भी तुरंत स्वीकार करते हैं। गुरु सही ग़लत की पहचान देगा। गुरु की कृपा को ग्रहण करो गुरु के जीवन को व्यवहार को देखकर तू भी ऐसा बन जा। जो मैं करता हूं वो सही है जो नहीं करता वो सही नहीं है ये कोई परमहंस ही कह सकता है। परंतु आजकल हर गुरु यही बात कर रहा है ये किसी ज्ञानी या गुणवान की भाषा है। जो भाषा कबीर की है वो सर्व साधारण के लिए नहीं है उसने अपने अनुभव से कहा।

पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़
ताते ये चक्की भली जो पीस खाये संसार

साधारण व्यक्ति के पास कोई गुण नहीं शक्ति नहीं और भाषा कबीर की बोलेगा भक्त पूछते हैं सत्गुरु से आपसे कभी कोई भूल नहीं होती उन्होंने उत्तर दिया मैं कुछ करता ही नहीं तो भूल का प्रश्न ही कहां होता है।

संत मत है अपना अभ्यास वैराग्य पक्का रहे गुरु अंदर अपने को जानने का रास्ता बताता है। हमे जीवन मुक्ति को पाना है। इस राह के लिए घर गृहस्थ छोड़ने की ज़रूरत नहीं। पहाड़ों पर जाने की भी ज़रूरत नहीं हमारा शारीरिक मानसिक और अध्यात्मिक रास्ता है। संत मत कहता है पहले अच्छे इंसान बनो प्रेम और सच का रास्ता बताता है। अच्छे इंसान बनने के लिए अपने भीतर की बुराइयों को छोड़ना है। सच्चाई हमारे भीतर ही है। आद सत जुगात सत है भी सत होसी भी सत सच का रास्ता सच्चाई का अनुभव कराता है। कदम बढ़ाते रहो। हम अपनी मंज़िल पर पहुंचे उसके लिए प्यास अंदर में हो कि हमे जागृति पानी है। Gyan is Caught not Taught ये गुरु मुख से Catch करना है। गुरु के दीये से अपना दीया जला लें अपने स्वरूप पर जो पर्दे पड़े हैं उन्हें हटाना है। गुरु की नज़रे कर्म हो जाये तो हम अंदरूनी अपने को शुद्ध कर लें। अपने सच की राह पर तेज़ी से बढ़ना काम अधिक है समय कम है समय गवाना नहीं है। अपने अंदर प्रभू का अनुभव करें। सत्गुरु के अंदर प्यार का भंडार है हरेक को प्यार से अपना प्रेम देते रहें। सबको अपने स्वरूप की पहचान दो गुरु की शक्ति से एक छलांग में संसार सागर से पार हो जाओगे। कौन जगाये कैसे जागे ख़ुद को ख़ुद जगाओ। किसी का इंतज़ार ना करना कि कोई आके तुम्हारे अंधेरे को दूर करेगा या आंसू पोछेगा अपना अंधेरा ख़ुद दूर करो अपना कर्म जारी रखो। भाग्य भरोसे न रहना। पुरुषार्थ से भाग्य की रेखा बदल सकती। कर्म दुआ नहीं दवा है कर्म और पुरुषार्थ एक ही चीज़ है दोनों चीज़ साथ साथ हों। इसलिए जिन लोगों के साथ बैठने से निराशा आती हो और कायर लोग हों या आलसी भाग्य भरोसे बैठने वालों के साथ नहीं बैठना जो निराशा और भय पैदा करें ऐसे लोगों के साथ से तुम्हारी सब

शक्तियां समाप्त हो जायेंगी। निराशा आए तो उसे ज्ञान शक्ति से हटा दो। अपन अंदर के आनंद को पाने के लिए स्वयं पुरुषार्थ करो। जीवन को व्यर्थ गवाना नहीं है हर पल क़ीमती है हर एक पल ख़ुद को सावधान रहना है। इसी जीवन में अपना अपना काम उतार के बैठो जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है।

Your own self Pramila

पत्र 55 - तुम सबके तरफ़ के प्रेमी

सतचित आनंद स्वरूप प्रिय अजमेर वासी सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहो। तुम सब के तरफ़ के प्रेमी खूब ख़ज़ाना ले कर आ रहे हैं। उन्हें अच्छी तरह लूटना। बड़े भाग्य से गुरु दर पर आने का मौका मिलता है और उनके वचनों को मानते ही जीवन बदल जाती है। सभी इस प्रेम रस के आनंद को लेते रहना।

तुम्हारा अपना आप

Pramila

पत्र 56 - प्रारब्ध सभी की Fix है

प्रारब्ध सभी की Fix है जिसको परमात्मा देना चाहता है उसी को मिलता है। शिवाजी के अंदर अहंकार आया कि इतनी सेना को मैं पाल रहा हूं। समर्थ गुरु राम दास उसे लेकर पहाड़ी की ओर निकल गए। गुरु ने वहां उसे कहा पत्थर हटाओ तो नीचे से मेंढक मेंढकी के बच्चे एक गड्ढे में पल रहे थे। साथ में वहां मच्छर भी थे। शिवाजी का अहंकार टूटा। बोला देने वाला ईश्वर है मैं तो निमित मात्र हूं। अपने को ईश्वर के हाथ सौंप दो वो जो चाहे वही कर सकते है। अपने को प्रभू के हाथ सौंप दो। इस मैं से मुक्ति पाओ तो प्रभू की कृपा हो जाएगी।

सम भाव समबुद्धि सम दृष्टि हो जाये। गुरु के शब्द का अभ्यास करना है ऐसा व्यक्ति जिसने अपने खोये मार्ग को ढूंढ़ लिया वो सभी को सिखाएगा कि भीतर बाहर समता में स्थित रहो। चाहे पुरुष या नारी हो सभी के लिए यही ज्ञान है। गृहस्थ को भी मुक्त अवस्था तक पहुंचना है। इतनी संख्या में लोग अपने मुक्त अवस्था में पहुंचना है। अपनी सब सारी ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हुए भीतर ज्ञान का अभ्यास चलता रहे तो उनके जीवन में मंगल ही मंगल है। जब अंतिम अवस्था में पहुंचते हैं तब कहते हैं मोक्ष प्राप्त हुआ। सुख दुःख यश अपयश हार जीत, मनचाही अनचाही इन द्वंदो से जीवन गुजरता ही है। उसमें जिस का चित्त असंतुलित नहीं होता है वह व्यक्ति सारे शोक से दूर हो जाता है। धी+रज जिसमें ज़रा भी धूल मैल नहीं है वहां पहुंच जाता है। बाधाए तो आती रहेंगी तुम समत्व भाव में आगे बढ़ते रहो। अंदर भ्रमों की गांठे खोलते जाओ। जो बोलो वही करो। वैसे तो कई उपदेशक हुए जो न

जीवन में उतार सके। वो कोरी वाणी विलास है। अंदर से निर्मोही हो जाओ। विकार अंदर उत्पन्न होते है। बुद्धि के स्तर पर समझ गए कि राग द्वेष नहीं करना चाहिए। हर विकार को जगा के हम अपना नुक़सान कर रहे हैं। पहला शिकार मैं हुआ। हर विकार ने मेरी हानि की। दूसरे की बाद में हुई। सब शास्त्रों की बातें कहते है कि मन मैला नहीं करना चाहिए पर ये सब बुद्धि के स्तर पर कहते हैं। जड़ें अगर रोगी हैं तो मुक्ति दूर है और इसके लिए सतगुरु ही मार्ग दिखाता है। मन की गहराई तक जाकर अंदर रोकते जाओ। मन सुधरा तो प्रभाव ऊपर तक आएगा तो सारा मानस पवित्र हो गया। जो काम करे पुरुषार्थ करे उसका कल्याण ही कल्याण है। मुक्ति ही मुक्ति हुई। धीरज के जहाज़ पर चढ़ जाओ निर्विचार निर्विकार हो जायें। भीतर बाहर की शुद्धि हो जाए न तन रहा न मन ही रहा सतगुरु मिलने से झगड़ा ख़त्म हो गया। Accident हुआ तो भी कहते हैं शरीर का हुआ मैं देखने वाला हूं। दुःख सुख को समभाव से देखो। मोह माना उल्टी समझ। दुःख रूप संसार को सुख रूप है। मोह अंधकार है। मेरेपन में ही दुःख है। कई मर गए कोई व्यथा नहीं है। कल जो जलने वाले हैं वो भी आज घूम रहे हैं। पूरा प्रभू आराधिया पूरा जाका नाऊ पूरे से ही पाइये होंगे पूरन काम। लोग कहते हैं भगवत प्राप्ति कैसे हो? आपको क्या पसंद है क्या भगवान पसंद है जितना अधिक पसंद है उतना आसानी से मिलेंगे। संसार और वाह वाह पसंद करते हो, इज़्ज़त पसंद करते हो थोड़ा भगवान पसंद है।

एक सरदार जी ने कहा हमें केवल रब्ब दिखा दो। रब्ब कोई दिखाने की चीज़ नहीं है। बोला कहना सरल है करना कठिन बोले आज़मा के देख लो। संत ने कहा अपने वस्त्र उतार के Office जाओ। बोला ऐसे कैसे होगा। संत ने कहा देह अध्यास प्यारा है वो छोड़ नहीं सकते हो।

नंगे का अर्थ सचमुच नग्न नहीं।नंगे तो कई फ़कीर घूमते हैं पर देह अध्यास के वस्त्र हटाकर देखो। वैसे तो संत नग्न होने के लिए नहीं कहते। भगवत् प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ यही है।

मनचाही नहीं मिलती इसलिए अशांत है। अपने दोष ऐसे देखो जैसे दुश्मन के देखते हो। अपने गुण जैसे देखते हो वैसे दूसरों के देखो। निर्दोष नारायण का दर्शन कर लोगे। वासना को रोको तो सत्य का दर्शन होगा। लोग पूछते हैं कितने वर्षों का Course है। जितना सरल है उतना जल्दी तुम उसे प्यारा नहीं समझते हो इसलिए देर लगती है। हम और वो एक हैं। अच्छे बुरे को जानता है ऐसा विश्वास नहीं। 100 डिग्री गरम नहीं हो तो पानी उबलता नहीं। 100% श्रद्धा होगी तो वह प्रगट हो जाएगा। जो साहब सद सदा हज़ूरे ताको अंधा जानत दूरे हमारी ज्ञान इंद्रियां और कर्म इंद्रियां पवित्र हो जायें तो परमात्मा खुद ही मिल जाता है। खुदी गई तो ख़ुदा हुआ मैं मुआ तो खुद ख़ुदा हुआ। मैं ही सब फ़सादों की जड़ है।

लक्ष्मी नारायण की वंदना होती है। जब पहले नारायण को अपना बनाते हैं तो लक्ष्मी अपने आप आ जाती है। श्रद्धा विश्वास और धैर्य तुम्हारे अंग रक्षक हैं दोनों ही बॉडी गार्ड हैं। आपकी रक्षा होती है। धैर्य आत्म विश्वास के बिना टिक नहीं सकता। आंख बंद करके विश्वास करो। एक नौकर माई में भी विश्वास करते है। पति पत्नी में भी विश्वास है कोई Agreement नहीं होता। विश्वास ना हो तो रिश्ता भी क़ायम ना हो। भौतिकवाद में भी बिना विश्वास काम नहीं चलता तो आध्यात्मिक जीवन में भी भगवान में आस्था और विश्वास ज़रूरी है। आस्था के बिना जीवन नहीं बनता। विश्वास लाना पड़ेगा। मानवता के

श्रृंगार हैं। विद्या एक है काम अनेक हैं। जो दे भगवान वो अपनी मेहनत का खाए। खाये घर का बुराई औरों की करते हैं। एक दूसरे की निंदा करना पाप है। एक राजा थे महान तपस्वी ब्रह्म वेता सभी की व्यथा दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इस राह के लिए तत्परता ज़रूरी है। आलस्य को विदा कर देना है। पुरुषार्थ तुम्हारा देव है। पुरुषार्थ का अर्थ ही पुरुष अर्थ अर्थात् भगवान के लिए। सत्संग के लिए भाव होगा तो राह भी मिल जाएगी। आस्था है तो रास्ता है। आस्था नहीं है तो रास्ता भी नहीं है। प्रेम ही परमात्मा का स्वरूप है। सर्व से प्रेम करते चलो।

Your own self

Pramila

पत्र 57 - एक दीपक से अनेक दीपक

एक दीपक से अनेक दीपक जल जाते हैं। हर एक के हृदय में प्रेम का दीपक जलाते चलो और प्रेम की गंगा बहाते चलो। आज के युग में इसी ज्ञान की हरेक को ज़रूरत है। सारी दुनिया परमात्मा को बाहर ढूंढ रही है। सुख भी बाहर खोज रहे हैं पर सुख सरूप तू खुद है। उसे ही जानना है और प्रसन्न रहना है।

Pramila

पत्र 58 - जिस प्रकार का बीज है

जिस प्रकार का बीज है वैसी ही खेती होगी व्यवस्था पूरी नहीं होगी तो रुग्ण पौधे होंगें। बच्चों को भी स्वावलंबी बनाना है। जवानी के बीज बचपन से रखे हुए हैं। बुढ़ापे के बीज भी बचपन में रखे हुए हैं। जिस प्रकार का बचपन होता है वैसी ही जवानी और बुढ़ापा होगा। बचपन से अगर अपना रहन सहन सही रखेंगे साधना में रखा जाए तो जवानी और बुढ़ापा अच्छा होगा। बचपन से ही अध्यात्म जीवन का अभ्यास करना चाहिए। होनहार बिरवान के होत चिकने पात। सुंदर पौधे निकलते हैं, बीज के आधार पर अंकुरण पैदा होता है। बीज का विस्तार सही दिशा में होगा यदि उचित वातावरण में डाला गया तो। बच्चे की परवरिश से पहले गर्भ धारण करने पर ध्यान रखना चाहिए। अनेक जीवों का जन्म होना है। असुरों के घर भी श्रेष्ठ बच्चे का जन्म हुआ है और श्रेष्ठ घर में भी असुरी प्रवृति के बच्चे पैदा हुए हैं। हर कार्य योजना बद्ध होना चाहिए। अच्छे विचार रखने से भी अच्छे बच्चे पैदा हो सकते हैं। दीवारों पर भी अच्छे चित्र आध्यात्मिक कहानियां बच्चों को सुनानी चाहिए। इससे भी उनका भविष्य अच्छा बन जाएगा।

शबरी के छूने से पम्पा सरोवर का जल पवित्र हुआ। दुनिया राम का प्रसाद खाती है पर राम ने शबरी के जूठे बेर खाए। प्रेम की ही महानता है। चुम्बक के सम्पर्क में आने से आलपीन साथ चिपक जाती है। इसलिए आलपीन रखने वाली शीशी में चुम्बक लगा देते है।

झुकते रहना तो जिनमें जान होती है।
अकड़े रहना मुर्दे की पहचान होती है।

चुम्बकीय शक्ति संतों के पास लोगों को इकट्ठा कर देता है। चुम्बक के सम्पर्क में लोहा भी चुम्बक हो जाता है। यह विज्ञान ऋषियों को भी मालूम था।

पुष्पक विमान राम चंद्र के समय पहले से ही था। आजकल विमान बने हैं। जो चीज़ें आज के जमाने में देख रहे हैं वो पहले से ऋषियों मुनियों से चला आ रहा है। कुरुक्षेत्र में भगवान ने भी आत्म ज्ञान की चर्चा की। अर्जुन के अंदर जिस शत्रु ने डेरा डाला था वो कायरता थी। आत्म शक्ति कम हो गयी। अर्जुन से इसलिए यह ज्ञान कहा कि हे अर्जुन! तू दोष दृष्टि से रहित है। संसार में लोगों की दृष्टि ही सही नहीं है। हर बात में नुक़्ता-चीनी करते हैं। शिव पार्वती को भी नहीं छोड़ा किसी हालत में खुश नहीं ।

कहा सुनी की है नहीं देखा देखी बात।
दूल्हा दुल्हन मिल गए फीकी पड़ी बारात।

मानव के मन में ही शांति का जन्म होना चाहिए मन बदलने से ही हृदय बदलेगा तभी दुनिया बदलति है।

शिवाजी ने अपना राज्य गुरु को समर्पित कर दिया और गुरु ने कहा इसे मेरा समझ कर चलाओ।

बड़े भाग्य मानुष तन पावा

यह जन्म बड़े भाग्य से मिला है इसे व्यर्थ बातों में नहीं गंवाओ। बहुत जन्म बिछड़े थे माधव ये जन्म तुम्हारे लेखे।

सत्य की ही जीत है और सत्य वो है जो आद सत्त जुगाद सत्त है भी सत्त होसी भी सत्त।

रोम रोम में राम है। मानसिक तन्मयता निश्चय आ जाए। माया का ध्यान हटाकर अपने स्वरूप को जानो। स्वासों में अजपा जाप चल रहा है। इस राह पर बढ़ते चलो अथक होकर तब अनायास ही आनंद अंदर में आ जायेंगे। केवल सत्संग में सतगुरु के समक्ष आकर बैठो। मिट्टी के ढेले की तरह ही अपने आप अहंकार गल जाएगा। मन जगत को ही सच मानकर बैठे है फिर ऐसी ही चित्त वृत्ति बनती है। ज्ञान से तुम्हारे स्वप्न भी निर्मल आने लगेगी। भगवान में ही वृत्ति पैदा होगी। भीतर का मल विक्षेप आवरण सब दूर हो जाएगें। संसार का प्रलोभन दूर हो जाएगा। संग्रह की प्रवृति कम होगी। जो छूटना है उसी को इकट्ठा कर रहे हैं। जो रहना है उसे छोड़ कर बैठे हैं। अपने अंदर सत्य को प्रगट किया उसी का कल्याण हो जाता है। आज का सतगुरु ही आज के अज्ञान को दूर करता है।

बिन गुरु वक्त मुक्ति नहीं पावे
बिन गुरु वक्त सत्तलोक ना जाए।

आज की धूप आज के कपड़े सुखा सकती है। सतगुरु का मिलना ही बड़ा भाग्य है।

आनंद आनंद भया मेरी माये सतगुरु मैं पाया
सतगुरु पाया सहज सेती मन वजी वधाई।

पत्र 51 - ज्ञान व प्रे म की मस्ती

ज्ञान व प्रेम की मस्ती में मगन रहो। श्रद्धा विश्वास प्रेम जब तीनों का समन्वय होता है तभी जीवन की उन्नति हो सकती है जिसके आनंद में तुम सभी झूम जाओगे। माया रूपी विष+वास है तो गुरु में विश्वास नहीं होगा। भगवान ने कहा श्रद्धावान लभते ज्ञानम अश्रद्धालु नाश हो जाते हैं जिससे प्यार है उसका हर कर्म अच्छा लगता है वरना मन तो हर जगह दोष दृष्टि रखा के दूर कर देता है।

सभी को प्यार Pramila

पत्र ७० - मन में प्रभू के लिए

मन में प्रभू के लिए तड़पन होनी चाहिए। ये एक मौका है जिसे चूकने न देना स्वयं में स्वयं की तलाश करनी है। निर्विचार अवस्था ही मुक्ति है। अपने मन को देखता चल। अपने ही अंदर देखते रहो। ऐसी अदभुत शोभा देखोगे जो बाहर से कोई सुख पाने की इच्छा नहीं होगी। अपने अंदर प्रेम का प्रवाह बह जाने दो तुम ज्ञानवान नहीं प्रेमी बनो आशिक़ बनो। तुम्हें तुम्हारी याद कराने आया हूं जिज्ञासा पैदा हो जाए। उपजे चाह साध के संग उत्सुकता पैदा हो जाए। प्यास बहुत है अपने जीवन की शाम होने से पहले प्राप्ति की प्राप्ति कर लो सच्चे प्रेम की आग लग जाए।

ढल गया आफताब ऐसा कि साकी फिर पीला दे शराब ए साकी प्रेम का प्याला प्रभू और पिला दो क्योंकि यह प्यास बुझने वाली नहीं। दिनों दिन अपने अंदर झांक के देखें अपने भीतर की शांति की खोज करें। मनुष्य के दुख का कारण है सुख की इच्छाएं यदि सुख की इच्छा खत्म हो जाए तो दुख रहेगा नहीं। मनुष्य को लूटा है तो अपनों ने। अपनी मैं अपना अहंकार अपने विकार अपनी आसक्तियों ने उनसे ही गुरु छुड़ा कर जीवन मुक्ति का आनंद लेना सिखाया है। मन जीते जग जीत इस मन में ही मल विक्षेप आवरण 5 विषय पांच विकार भरे हुए हैं उनसे छुटकारा पाना है उसके लिए अंदर जिज्ञासा उत्पन्न हो जाए। फिर तो जहां चाह है वहां राह भी मिल जाती है। सतगुरु के पास सन्मुख बैठ कर मनमुख गुरमुख बनता है। और फिर उस पर गुरु की कृपा बरसती है अंदर की जिज्ञासा तब तक शांत ना हो जब तो वो मिल ना जाए।

एकाग्रता मन की ही आनंद प्रदान करती है। एकाग्रता तभी आयेगी जब तक इच्छाओ की समाप्त हो जाए।

काक चेष्टा बक ध्यानम स्वान निंद्रा तथैव अल्पहारी गृहत्यागी। विद्यार्थी पंच लक्ष्णम। कौए जैसी जानने की चेष्टा और बगुले जैसा ध्यान और नींद कुते जैसी याने वो जरा सी आवाज से जागृत रहता है। इसलिए पहरेदारी का काम करता है। अल्पहारी का अर्थ है कम भोजन खाना अधिक खाओगे तो सत्संग में भी नींद आयेगी।

गृहत्यागी जो अंत:करण में मेरे मेरे बना के जो अपनी जीव सृष्टि बना कर बैठे हो उसका त्याग करना है।

घर के वीचारों से परिस्थितियों से छूटना है। निर्विकल्प समाधि हो जाए।

तू अकेला था अकेला है। जहां प्रीति लगाओगे वहां रोना पड़ेगा। मन में विषय वस्तु और आसक्ति आयेगी। आपका आनंद समाप्त हो जायेगा। अन्य लोगों के दोष मत देखो। सत्य के उपासक है जो उन की सेवा करो नहीं तो वासना का विनाश नहीं होगा। तृष्णा मर जायेगी। सेवा धर्म कठिन मैं जाना। अपनी भक्ति पे नेष्ठा रखो ये परमात्मा का नाम अमृत समान है उसे पियो। संसार का नशा तो पिया और उतर गया। चैतन्य महाप्रभू मीरा आदि को जो नशा था वो उतरने वाला नहीं था।

तीर्थ उसे कहते हैं जहां नदी हो। धाम कहते हैं वन परदेश हो जहां महापुरुषों ने कोई तप किया हो। तीर्थो में स्त्री का सहयोग व अधिक भोजन न करना। तपस्या में रहो। दर्शन करने और देखने में अंतर है। तुम

गुरु को केवल देखने आते हो। दर्शन ऐसा करो जो तुम स्वयं गुम हो जाओ। कहीं भी रुकना नहीं है। गुरु के पास से जब वापिस जाते हो तो सीधा अपने ही घर जाए इधर उधर बैठने से वृतियां खंडित होती हैं। दर्शन कर के तुम गुम हो जाओ । सात्विक आहार जो शरीर को बल व बुद्धि प्रदान करे।

अपना दृष्टि कोण बदल लो तो वृत्ति शांत हो जायेगी। 5 विषय 5 विकारों की प्राप्ति में ही तुम्हारा समय जा रहा है। विषयों का अंत नहीं होता मानव का अंत हो जाता है। तुम बेटा इसलिए चाहते हो कि वो मुक्ति देगा लेकिन वो सदगति दे सकता है पर मुक्ति नहीं मिलेगी।

अपना कल्याण कर लो। वो स्वयं को ही अपना कल्याण करना। गुरु ही तुम्हें मोक्ष दिला सकता है। मोह क्षय हो जाए यही मोक्ष है। गलत व्यसनों में फसे तो प्रेत योनि मिलती है। नरक भी नहीं मिलेगा। प्रेत को भूख प्यास लगे तो भी पूरी नहीं कर सकता।

अपना उद्धार तुम्हें ख़ुद करना है अपने को पहचानो अपनी बाल्यावस्था से ही इस का प्रयास होना चाहिए। तभी जवानी में साक्षात परमात्मा का स्वरूप इनमें देखना है सूर्य नारायण गंगा अग्नि देव, गुरु साक्षात नर हरि बताया है। पांचवें माता पिता हैं यज्ञ ज्ञान का हो जाये। जो स्वयं मुक्त नहीं होना चाहे उसे कोई और मुक्त नहीं कर सकता है। अन्त:करन की बुद्धि को प्राप्त करो। मन की गांठ 5 विकार। देह अध्यास कहा वासना। उनकी माता सरूपनखा। इसका नाक लक्ष्मण ने काट दिया। निर्वासना पुरुष कोई विरला ही होता है।

उतरायण दक्षिणायन दो गतियां बताई हैं गीता में। भीष्म पितामह भी उतरायण के आने तक जीवित रहे। उतरायण का अर्थ है आत्मा में स्थिति जिसकी हो जाएगी उसका जन्म मरण नहीं है। दक्षिणायन अर्थात् देह में आसक्ति होने पर जिस की देह शांत होती है वो अधो गति होती है। हमारी श्रद्धा होनी चाहिए। मन बुद्धि से जगत का नाश हो जाये।

क्राइस्ट के प्रगट होने के समय भी बताया यह महान पुरुष है जगत के उद्धार के लिए ही आते है।

बुद्ध के लिये कहा ये या तो राजा होगा या योगी हुआ। उनका योगी का जीवन हुआ।

ईसा भी अवतारी पुरुष हुए। 29 वर्ष की आयु में जेरूसलम गये उनके उद्धार के लिए। उन्होंने एक अंधे को आंखें दी और जब वैश्या की ओर आंख मिलने पर दौड़ा तो उन्हें कष्ट हुआ उन्हें अंत में सूली पर चढ़ाया गया मृत्यु दंड दिया गया। 40 दिन बाद फिर जी उठे। स्थूल शरीर से लोक कल्याण के लिए जीते हैं। 40 दिन अपने अंतरंग भक्तों को दर्शन दिया यह अनुभव की बात थी। वो ही देख पाता है जिसके साथ घटना घटती है। ईसा ने एक बार उपदेश दिया मृत्यु से परे का जीवन क्या है जीवन मुक्ति का आनंद लेता है। इस माया से वो ही बच पाता है जिनके अंदर सत्गुरु का वास है अपने जीवन में आगे बड़ने की उमंग रखो। केवल ख़ाना पीना और जीना यह कोई जीवन नहीं है। हरेक अपनी यात्रा ही पूरी करने आया है पर जीवन में सावधानी से जियो जिन्हें सत्य को जानना है वो माया में फंस नहीं सकता। अपने स्वरूप में स्थित होकर अपनी मस्ती हासिल करो कहीं जीवन व्यर्थ ना चला जाये।

ख़ाना पीना भोगना उनका पशु समान, मनुष्य जन्म में आकर जिन्ही ना जानयो ज्ञान। ओम श्री राम जय राम जय जय राम।

पत्र ७। - आपके यहां यह ब्रह्मज्ञान पहुंचा है

सतचित आनंद स्वरूप मम प्रिय प्रेमी आप सभी भाग्यशाली हैं जो आपके यहां यह ब्रह्मज्ञान पहुंचा है। सभी ज्ञान गंगा में गोते लगा रहे हैं सभी का जीवन धन्य हो रहा है। सभी मुलतान नगर के प्रेमियों का धयान आ रहा है सभी ने मिल जुलकर खूब सेवा की आप सभी की सेवा व प्रेम सराहनीय है। अपना जीवन जो सब के लिये लुटाता है सर्व मम रूप करके सभी को समान प्यार दे रहे इसी समता योग में रहो ये अहमता ममता कर्ता का रोग असर नहीं करेगा।

Pramila

पत्र ७२ - एक प्रोफ़ेसर खुद ही

एक प्रोफ़ेसर खुद ही बनाता है खुद ही खाता है और कहता क्या यही आलू और रोटी पत्नी नहीं थी खुद ही अपने को बोल रहा है। तुम्हीं दुःख बनाते हो खाने वाला भी वही बोलने वाला भी वही। प्रकृति से ही सपना आता है। कल्पवृक्ष तुम्हारा सूख रहा है तुम अपने संकल्प से मुक्ति प्राप्त कर लो। समत्व योग अंतःकरण की शुद्धि हो जाए। अंदर का तप है। अपनी सूक्ष्म वृत्तियों को देखो तो पता चलेगा मेरा मन कहां कहां जा रहा है। पानी ऊपर आ जाए गंदगी नीचे बैठ जाएगी जब पानी बाल्टी में भर कर रख दो। चित्त का स्वभाव है सोचना। पर ये ध्यान रहे कि कुछ न करो। समाधि लग जाएगी तो मस्ती आएगी। ऐसी मैत्री में डूबो। यदि तुम कुछ भी कर रहे हो वही फल मिलेगा। जैसा बीज कर्म का तो वैसा ही फल है। यदि दुःख मिल रहा है तो ये तुम्हारा अपना ही चुनाव है। तुम दूसरों पर दोष लगाकर प्रसन्न होते हो। धर्म को मानते हो तो यह सोचो कि तुम्हारे कर्म तुम्हारे बीज ही ज़िम्मेदार हैं। कड़वे फल नहीं बोओ अब से मीठे आम के पेड़ लगाओ ये तुम्हारे हाथ की ही बात है। तेरे हाथ में है जीवन बनाना हीरा कौड़ी के लिए ना गंवाना। भले बुरे बीज अपने अंदर ही भरे हुए हैं। सावधानी से चलो तो गिरोगे नहीं।

प्रसाद में आदर छिपा है। शरीर भी दे दिया तो प्रसाद हो गया उससे भी ग़लत कार्य ना होगा।

जलाराम संत के भंडारे हमेशा भरा रहता है। शरीर का हर अंग प्रसाद। बुद्धि से कार्य में लें। प्रसाद अकेले नहीं बांट कर खाते हैं। पहले औरों को। अंत में जो शेष बच जाए उसे गीता में यज्ञाशिष्ट कहा गया

है। अपने को समर्पित कर दो। वहीं तेरे जीवन की बगिया संवरती है। अपने नए जीवन को Regain करो। तुम समर्पण का रूप बन जायें। अपनी पावन पावक जीवन संभालो। अपने लक्ष्य को प्राप्त करके सदा के लिए कृतकृत्य हो जाओ।

बाहरी गुरु का क्या ठिकाना। आप अच्छे तो हो पर आपको गुरु नहीं बना सकते क्यूंकि आप 25 साल के और मैं 70 की। तो आप बाद में मरोगे तो मैं पहले मर गई तो स्वर्ग में मेरे को कैसे Receive करोगे। लोगों की यह ग़लत धारणा है कि गुरु ही हमें स्वर्ग में पहुंचाता है ले जाता है। चंदन के पेड़ के नज़दीक रहकर भी उस का ज़हर नहीं ख़त्म होता है। गुरु के शरीर के पास तो रहते हैं पर हिंसा अंदर से नहीं छोड़ता है। पेड़ जड़ है पर गुरु चेतन है तो वो ऐसे शिष्य को हरा भी सकते हैं। हमें साधु नहीं बनाने हैं। अपने अंदर की योग्यता शिक्षा हुनर होने चाहिए।

अगर गुरु Reverse Gear लगाए तो तुम्हें माया में रहने में दिक्कत न हो। गुरु तुम्हें अपने घर में रहा के ग़ुलाम नहीं बनाता। तुम स्वावलंबी बनो। भारत का सत्यानास करने के लिए कई साधु हैं जो घर छोड़ के भागे हुए हैं। रोटी कपड़ा मकान के चक्कर में साधु ना बनना। बुद्ध के समय भिक्षा मांग कर समय पार कर लेते थे। पर अब का ऐसा युग नहीं है कि भिक्षा मांग कर खा सको। भिक्षा देना भी वर्जित है। सबका जीवन अपना अपना है कोई किसी की Copy नहीं कर सकते हैं। गुरु से दूर रहकर भी ज्ञानी हो सकते हो और पास रहकर भी अज्ञानी रह जाओ ऐसा भी हो सकता है। क्यूंकि गुरु ज्ञान और ज्ञान गुरु है। अकेला रहना सीख जायें वहीं आत्म बोध कर सको।

गुरु साध्य नहीं है साधना में मदद कर सकता है। अपने शरीर का आधार गुरु नहीं देता। अपनी मृत्यु को सामने रखो जीते जी मर कर देखो। यहां यही दुविधा है। तुम खीर तो अच्छी बनाते हो ऊपर से राख डाल देते हो। अच्छा करते करते अहंकार आ जाता है। गुरु तुम्हारे अहंकार को नहीं सहेगा। बीज को वृक्ष बनाना है। तुम गुरु से उष्णता मांगते हो। तुम्हारी अपनी चाहिए। गुरु यदि कर सकता तो सभी को दे देता कि बीज सभी के वृक्ष हो जायेंगे। तुम अपना ज्ञान खुद अर्जित कर लो। बालयोगी एक हुए हैं। बाहरवालों और भारतीयों ने मिलकर सर्टिफिकेट दिया कि ये आज के युग का पूर्ण गुरु है। वह ब्रह्मचर्य में नहीं रह सके और रास लीलायें शुरू की पर आजकल की गोपियां पहले जैसी नहीं हैं। उन्होंने उनके फोटो वग़ैरह छपा के उनकी पोल खोल दी और सर्टीफिकेट फट गया। गुरु का अनुभव भी नहीं पर अपना अनुभव ही जरूरी है। भुत्रका गुरु हुए जो गुरु का चेला होगा वह नकटा नाक काट। कई नकटे चेले बन गए लेकिन ज्ञान प्राप्त ना हुआ। लेकिन सच्चा गुरु सर्टिफिकेट नहीं देगा कि तू पूर्ण गुरु बन गया है। वो नहीं चाहता मेरे कोई कच्चे गुरु बन जायें। साधु बने और अंदर से निर्वासना नहीं हुए तो ऐसे साधु का क्या भरोसा। मेरी वजह से कोई गलत दिशा अपना ले ये भी सच्चे गुरु को मंज़ूर नहीं है। इसलिए यह खुद की तपस्या है खुद की साधना है। अपने मन इन्द्रियों का संयम अपनी सच्चाई अपने जीवन बनाने का सच्चा शौक हो न कि चेलों ने कहा गुरु पूर्ण है गुरु ने भी अपने को पूर्ण मान लिया। भीतर झांक कर देखो कि सचमुच तुम योगी हो तुम्हारा मन इंद्रियों का संयम है या नहीं आचरण बिना आचार्य कैसा। और उपदेशे आप ना करे आवत जावत जन्मे मरे। गुरु पीर सदावे मंगण जावे तिसके कदी न लागे पाय। तुम्हारे निष्काम

से एक पैसा भी तुम्हारे घर आएगा तो वो निष्काम ना हुआ। दादाजी ने कहा जैसे लड़की के विवाह के बाद उसके घर से पानी का गिलास भी नहीं पीना चाहिए। तो ज्ञान रूपी कन्या भी जब किसी को दो तो उससे एक गिलास पानी की भी उम्मीद नहीं रखा। सहज मिला सो दूध बराबर तो ऐसे तो हमारे घर का कुत्ता भी है जो सहज पाकर प्रसन्न होता है। पर यहां तो गुरू कहता है मिलने पर तुम्हें रोना आए। (दिने दुखाया अन दिन राज़ी रिहा) जो न मिलने पर ज्यादा राज़ी रहता है मिलने पर उसे कष्ट होता है।

पत्र ७३ - सत्य की जीत तो अवश्य होगी

सत्य की जीत तो अवश्य होगी। यदि मैं किसी की भेंट नहीं स्वीकार करेंगे तो उसी के पास रह जाएगी। कोई गालियों की भेंट ले आए क्रोध की ले आए जब तुम नहीं लेंगे तो उसी के पास रह जाएगी नशे में रहो। बीज दुख का तनाव का है तो आगे अंधकार ही मिलेगा। एक कहता है मैं अपने कर्मों के कारण अंधकार में हूं अब अपना प्रेम प्रगट करता जाये तो आगे चल कर प्रकाश ही प्रकाश रहेगा धर्म धारण करो तो आगे प्रकाश ही प्रकाश रहेगा। मन जीते जग जीत अपना पवित्र जीवन बनाते चलो। सभी को प्रेम से सराबोर कर लो। भूले हुए मुसाफिर मंज़िल पर आ गया है गफलत की योनियों से इंसान बन के आए। मखलूक खुदा ने तुमको नया बनाया किस्मत से ये ख़ज़ाना तेरे हाथ लग गया है। जाग जाग के सामान ले लेना। Map हाथ में होने से कहीं भटकोगे नहीं। गुरु राह के Pit falls बता देते हैं कि तुम कहीं कच्चे गुरुओं में न फंस जाओ। कई गुरु कहते हैं 3 महीने में कोर्स हो जायेगा और नहीं भी हो तो कहना पड़ेगा कि आत्मसाक्षात्कार हो गया है क्योंकि पैसे दे चुके हो। परंतु हम कोई गौरंटी नहीं लेते हम तो कहते हैं होना होगा तो आज होगा नहीं तो कब भी हो जाएगा इसमें तेरा पुरुषार्थ चाहिए।

(1) लेकिन हम तो दीवाने तेरे हैं,
हम तो मस्ताने तेरे हैं
हम योगी हैं कोई रोगी नहीं
हम तो दीवाने तेरे हैं

(2) हमको अब कोई चाह कुछ चाह नहीं आह नहीं

जब से तेरी इक आस लगी बस गाए अब गुण तेरे हैं
हम तो मस्ताने तेरे हैं

(3) हम योगी हैं कोई रोगी नहीं कोई भोगी नहीं
बड़ी मुश्किल से है हल पाया
तेरी दया हुई तो संभल पाया
जो डूबते वो डूबे रहें हम तो अब तैर तैर हैं।
हम योगी हैं को रोगी ...।

श्रवण कीर्तन संकीर्तन तीसरा उनके स्वरूप को याद रखना तीन भक्ति करो। एक वास्तविक भक्ति है स्मरण भक्ति बाकी दो सहायक भक्ति हैं। ब्रह्मा ने कहा मैंने स्वयं तीन बार मंथन किया और उसका निष्कर्ष निकाला कि ईश्वर भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ है। छः शास्त्रों में से ये निष्कर्ष निकला भगवान का ही सदैव चिंतन मनन निध्यासन करो। यह जीवन ईश्वर से दिया हुआ तोहफ़ा है। इसमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। ऐसे समय में आदर्श गुरु की आवश्यकता है जो जीवन की बाधाओं को पार करना सिखाते हैं।

दूसरों को कुछ कहने से पहले स्वयं करके देखो। एक व्यक्ति एक संत के पास गया और कहा ये सब बातों में तो ठीक है केवल ये गुड़ अधिक खाता है। गुरु ने कहा एक सप्ताह बाद आना जब वो व्यक्ति उसे ले कर गुरु के पास गया तो गुरु ने कहा गुड़ खाना है तो खा लो पर इसके बाद कभी गुड़ नहीं खाना। बच्चे ने गुड़ खाना छोड़ दिया उस व्यक्ति ने प्रश्न किया कि आपने एक सप्ताह बाद क्यूं कहा तब संत ने कहा मैं भी पहले गुड़ खाता था। पहले मैंने छोड़ा तब उसे कहा तो वो भी

खाना छोड़ सकता है। पहले स्वयं पर आज़मा के तब दूसरों को बतायें। हम कहें कुछ और और करें कुछ और। मन में Differentiate करने की शक्ति नहीं है। ये शक्ति गुरु प्रदान करता है कि कैसे तुम सच झूठ को पहचानो और सत्य को प्राप्त करो।

दुनिया में सब राग द्वेष की आग में जल रहे हैं पर भक्त विरह की अग्नि में जलते हैं। किसी के मुख को देख कर ना जलो पर दीपक की तरह जलो जो दूसरे को प्रकाश देने के लिए जलते हैं। कई अपने जीवन में कुछ पाना चाहते हो तो जीवन के व्यक्तित्व को उभारने के लिए कष्ट उठाते हो। मिटा दे अपनी हस्ती को अगर तू मर्तबा चाहे कि दाना ख़ाक में गुले गुलज़ार होता है।

पर्वतारोही कितना कष्ट सहते हैं। God Helps Those Who Helps Themselves. तुम्हें अपनी मदद खुद करनी है। सबसे सुखी जीवन बनाने के लिए सभी को सुख देते चलो। सर्वे भवंतु सुखिन:। सबको सुख देते रहो। नानक नाम चढ़ती कला, तेरे भाणे सरब का भला। किसी के जीवन को बनाने के लिए कोशिश करो। अंधे को अंधा कहकर सच नहीं बोलते हो। सच बोलो तो प्रिय सच बोलो। ऐसा सच हज़ार झूठ से खराब है जिससे किसी का घर बिगड़ जाए। तुम कहते हो कि मेरा फोटो मंत्री के साथ है। काश प्रधानमंत्री तुम्हारा सम्मान करे कि उसके घर तुम्हारा फ़ोटो लगे।

जीतेगा एक ही बाकी हारेगा पर संकल्प यह है कि जो सच्चा हो वो जीते दंगे फ़साद न हों। लोग टूट जाते हैं दूसरे का बसाने में और तुम उनके घर में आग लगाते हो कठिन झूठ मत बोलो। कम से कम बोलो। आंखें दो भी दीं तो एक ही देखती है। जीभ एक बनाई सांप की तरह दो

नहीं दी। तुम सदियों की पुरानी दुश्मनी ख़त्म करवा सकते हो। कम से कम बोलो। संत की तरह भले सारा दिन बोलो पर कलेश हो जाए किसी के घर में तो ऐसा मत बोलो। मरहम पट्टी ना कर सको तो ज़ख्मों पर नमक तो ना छिड़को। किसी का दिल मत तोड़ो। किसी गिरते को उठाने की कोशिश करो। कोशिश करो सभी के जीवन में फूल खिलाने की उन्हें देखकर ख़ुशी होती है फिर उन फूलों को सभी के पास लाने का मन करता है फूल जैसे ना बनो तो भी कांटे तो मत बनो। संत असंत का क्या फ़र्क़ है दोनों रोते हैं। संत के बिछड़ने में रोते हैं संसार के लोग कष्ट मिलने पर दुखी होते हैं। प्रवचन तो गुरु का वही है रोज़ वही बोलते फिर भी भीतर से Change होने पर नयापन लगता है। संसार के पदार्थों के मिलने पर दुःख होता है संत के बिछड़ने पर दुःख होता है। सब रसों से संत का रस ही सबसे स्वादिष्ट सत्य रस है।

पत्र ७५ - जो तू चैतन्य है माया से परे

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहो। जो तू चैतन्य है माया से परे देह अध्यास के कपड़े पहन कर अपने को Miss Mrs या Mr मानने लगे पर Mystery को भूल गए। History सभी को याद है पर गुरु तुम्हें सच बताता है। सच को जानने से झूठ अपने आप छूट जाता है। अपने अदंर दृढ़ता रखो। दृढ़ निश्चय वाले की जीत है। अच्छे संकल्प करते करते मन कभी बुरा भी कर बैठता है और फिर वो भी पूरे हो जाते हैं। तो हम दुखी हो जाते हैं। सुख बाहर खोजना ही दुख बन जाता है। जिन बातों को दबाओगे वो तुम्हारे अंदर Unconscious में घुस जाता है फिर तुम उसी प्रकार के सपने देखने लगते हो। भय और चिंता नहीं करो नहीं तो आवाज भी क्षीण हो जाती है। हमारा मन ही दुख का कारण है इस मन से ऊंचे उठो। भय और क्रोध साथ साथ आते हैं। क्रोध केवल डंडे से डरता है तब भयभीत होता है। तुम ये जानो क्रोध कमजोर आदमी ही करता है। ज्ञानी निर्भय होकर रहता है उसके अंदर में शीतलता रहती है। Do or Die करेंगे या मरेंगे तो करेंगे पर मरेंगे नहीं अपने अंदर से मजबूत बनते जाओ और अपने को ख़्यालों से खाली करके बेगमपुर के बादशाह बन जाओ जो तुम्हारा आदि स्वरूप है।

अपने मस्तिष्क पर दवाब नहीं पड़ने दो। दबाव से अनेक बीमारियां पैदा हो गईं। 40 वर्ष की आयु के बाद डॉक्टर के नम्बर डायरियों में आ जाते हैं और बुढ़ापे तक डॉक्टर सब से अच्छा रिश्तेदार बन जाता है। जीना चाहते हो मरना नहीं चाहते हो। अपने जीवन के कीमती स्वांस गंवा के तुम छूटने वाली चीजें याद करते हो। आराम से रहो चैन से

जीओ। जीवन के कितने क्षण व्यर्थ जाते हैं। ज्ञान में गुरु हमारी हलत पलत संवारता है विचारों को बदलने से मन की स्थिति भी सही होने लगती है। फिर चाहे जीवन में हार हो या जीत तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम भले ही धन हार जाओ पर अपना कीमती जीवन व्यर्थ न गंवाओ अपनी स्वांसों पर नियंत्रण रखो तो अपनी आयु भी बढ़ा सकते हो। जो तुम पसंद करते हो वह मिलता नहीं है जो मिला है उसे अपनी पसंद का कर लो। उसी में अपनी प्रसन्नता ढूंढ लो। जिन परिस्थितियों को बदलने की चाह रखते हो उन्हें कोशिश करके बदलो या तो अपने आप को बदल लो तो सब अच्छा लगता है। दिन भर मनुष्य परिस्थितियां बदलना चाहता है और दुखी रहता है चितांग्रस्त नहीं रहो। जिन चीजों को दोहराते हो वो आदत बन जाती हैं। धागे जुड़कर रस्सी की तार हो जाती है। और उसे तोड़ नहीं पाते फिर तुम उनके गुलाम बन जाते हो। अपने जिद्दी स्वभाव छोड़ो शोर मत मचाओ नहीं तो ये ही आदतें तुम्हे तंग करेंगी। अपनी बातों को ज़िद्द से मनवाना चाहते हैं। हम यह भूल जातें हैं बच्चों की हर बात मानते चलते हैं। हर एक की ज़िद्द पूरी होगी तो बेल में जल पड़ जाता है। परिस्थितियों का सामना करने से दुखी होते हो। आदमी के मन की तीन अवस्थायें हैं -

(1) Conscious - चेतन

(2) Sub conscious - उपचेतन

(3) Unconscious - अचेतन

हर समय सतर्क रहना चेतन मन का कार्य है। मन सजग है जब गाड़ी सीख रहे हैं जैसे अभ्यास पूरा होगा तो चेतन मन फिर Subconscious में चला जाता है चेतन मन कुछ भी सोचता रहेगा और

Subconscious मन अपनी गाड़ी चलाता रहेगा सजग होकर रहो अंदर Balance पहले बिगड़ता है बाहर बाद में।

पत्र 65 - दृढ़ निश्चय वाले की कभी हार नहीं

दृढ़ निश्चय वाले की कभी हार नहीं। Wait & See. धीरज रखकर देखते चलो। भगवान के घर देर है अंधेर नहीं आना है तो आ राह में देर नहीं है। हिम्मते मर्दा मदद ए ख़ुदा। ईश्वर की मदद अवश्य ही तुम्हें मिलेगी विश्वासी का बेड़ा पार है। शेष सभी के लिये बेहद प्यार अपने घर के भगवानों के लिए भी स्नेह उन्हें भी समय समय पर प्रभू की याद कराती रहो। एक ना एक दिन सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।

Your own self

Pramila

पत्र ७७ - हम तो यहां संयम सिखाते हैं

हम तो यहां संयम सिखाते हैं किंतु कई संत सभी को छूट देते हैं कि जैसा तुम्हारी जी में आये वैसा करो। सन्यासियों पर भी लोग लांछन लगाते हैं। कामिनी का लांछन लगायेंगे कि यह पुरुषों और स्त्रियों को भी ज्ञान देता है। किसी स्त्री को बहका के उसे कहते हैं फैशन करके रात को जाओ पेड़ के नीचे बैठो और बाल बिखेर कर सुबह आकर कहेगी कि आज की रात तथागत के आश्रम में बिताई। दूसरा लांछन किसी औरत को कहते हैं सभा के बीच में जाकर कहो कि इसके बच्चे की मां बनने वाली हूं। तू नहीं कुछ कर सकता तो अपने भक्तों से सहायता लेकर दो। बदनाम करने के तरीके बताते हैं। क्रोध को क्रोध से नहीं प्यार से जीत सकते हैं। घृणा को घृणा से नहीं नाली के पानी में स्वच्छ जल से सफाई हो सकती है। रास्ते पर गंद फैलाने से कुछ नहीं होगा। किसी सुंदरी के मरने पर उसकी लाश जमीन के अंदर गाड़ के फिर कहेंगे इन्होंने कहा तथागत ने मारकर गाड़ दिया है और राजा से कहा खोज करो कहीं न कहीं से लाश मिली। लेकिन तथागत मुस्कुराए कि तुम लोग घबराओ नहीं सत्य की जीत होगी। और थोड़े ही दिनों में पता चला कि एक शराबखाने में शराबी आपस में लड़ रहे थे एक कह रहा था कि मारा तो मैंने दूसरा कह रहा था पकड़ा तो मैंने तो मुझे पैसा ज़्यादा मिलना चाहिए। ऐसे सत्य की जीत होती है। एक व्यक्ति तथागत के पास गालियां निकालता हुआ आया लेकिन वह शांत रहे। बुद्ध ने कहा यदि किसी ने भेंट दी और हमने नहीं ली तो उसका उपहार उसके पास ही रह जाएगा। वो उनके चरणों पर गिर पड़ा। एक हम हैं कि गाली का जवाब दस गाली से देते हैं। क्रोधी व्यक्ति भी मुक्त हो

गया। किस चक्कर में तुम सब पड़े हो अपने को धोखा देते हो। हम अपने को सुधारें हमारा चित इस क्षण क्या कर रहा है। वर्तमान के प्रति सजग रहें।

चार प्रकार के लोग हैं -

(1) अंधकार से अंधकार की ओर भाग रहे हैं

(2) प्रकाश से अंधकार की ओर भाग रहा है

(3) अंधकार से प्रकाश की ओर भाग रहा है

(4) प्रकाश से प्रकाश की ओर भाग रहे हैं

हरेक दूसरे को दोष देते हैं कि इसने मुझे दुखी किया है। अंधकार से अंधकार की ओर भाग रहे हैं। करुणा जगाओ तो प्रकाश ही प्रकाश रहेगा। कर्मों के अनुसार मिला है किसी को दोष न दें। फिर आगे को प्रकाश मिलेगा। चित्त को निर्मल बनाते जाएंगे तो मुक्ति अवश्य मिलेगी। Be Clean Rather Than Clever. होशियारी इंसान को बर्बाद करती है। गुरु के पास सरलता और नम्रता से आकर बैठें। अपने दोष दूर करें किसी और पर दोषारोपण ना करें। जो दोष दूसरे के देखेंगे वही हमारे अंदर प्रवेश कर जाएंगे।

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
सदा ना रहेगा ज़माना किसी का
सदा न संग सहेलियां सदा ना काला केस
सदा ना इस जग जीवणा सदा ना राजा देस।

सदैव कोई चीज़ रहने वाली नहीं है इसीलिए किसी चीज़ का अभिमान नहीं करना चाहिए। पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई। आज भी कन्या कुंवारी है कोई साथ नहीं ले गया। धरती का दहेज धरती के पास ही रहेगा ईश्वर ने जब से सृष्टि बनाई है तभी से ऐसी ही है सभी के बीज इस पृथ्वी पर ही हैं। वही चन्द्रमा वही सूरज है। बीज का नाश नहीं है वही पिछले साल के बचे हुए नए साल में बोए जाते हैं और नई फसल कहलाती है। परमात्मा ने इतना सुंदर शरीर सब सालिम इन्द्रियां दी हैं भगवान की भक्ति के लिए। मन को सत्संग में लगाना है। गुरु के नीचे रहकर अपना जीवन संवारना है। गुरु ही हमारा मार्ग दर्शक है। मनुष्य जैसा है वैसा ही दूसरा उन्हें अपनी छाया सा दिखता है। चोर को चोर शराबी को शराबी किसान को किसान दिखता है। एक व्यक्ति गांव के बाहर बेहोश हो कर गिरा पड़ा था वहां से एक चोर निकला उसे लगा यह भी चोर ही होगा। यहां से भागें नहीं तो कहीं इसके साथ मैं भी ना पकड़ा जाऊं। वहीं से शराबी निकला उसे वो शराबी लगा उसने भी उसे नहीं उठाया। फिर एक किसान ने देखा किसान है वह उसे अपने घर ले आया।

सारे भरोसे छोड़ कर जो मुझे भजता है मैं उसकी रक्षा करता हूं। भगवान ऐसी माता है जिसकी सर्वत्र दृष्टि है उसका अनिष्ठ हो ही नहीं सकता। अपने अंदर कभी हीन भावना नहीं रखनी चाहिए। या तो सदैव Positive Thinking रखो। कभी मुख से नहीं कहो कि मैं यह काम नहीं कर सकता। मैं कमजोर हूं छोटा हूं मेरे में कोई क्षमता नहीं है क्योंकि जैसा सोचोगे वैसा ही हो जाओगे। हर समय गुरु को अपने अंग संग महसूस करो। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। इस मन से ही मिल जाते हैं प्रभूवर कभी कभी। आते हैं इसी वेष में भगवन कभी कभी।

केवल हम उसे पहचान लें और अपना जीवन उन्हें समर्पित कर दें। जो चीज हमने बेच दी वह चाहे मेरे पास भी रहेगी फिर भी हम उसे अपना नहीं मानेंगे क्योंकि उसका दाम ले चुके हैं। अब वो चाहे उसे जैसे भी इस्तेमाल करे तोड़े। तोड़ फोड़ के नया रूप दें वो देखता रहेगा तो भी कुछ कहेगा नहीं क्योंकि उसके अंदर से ममता निकल गई।

संसार में भी तन मन धन गुरू को अर्पण करने के बाद मैं मेरे के लिए हम नहीं सोचेंगे। घर मे Bank Cashier की तरह आया Manager की तरह रहेंगे। हउमै दीर्घ रोग है पर दारु भी उस माहि। कृपा करे जो आपणी तो गुरु का शब्द कमाए।

दुनिया में आए सबसे पहले काम था स्वांस लेना और अंतिम काम श्वास छोड़ना। अपने अंदर रोग भोग शोक चिंता जो मनुष्य के अंदर है जो मनुष्य को धकेल कर मृत्यु की ओर ले जाती है। वस्तु मिली और छूट गई तो उसे लगता है वो मेरे प्राण ले गई। भय बना रहता है अपमान नहीं प्रतिष्ठा पर आंच न आए व्यवसाय में घाटा न हो जाये। जहां हम पहुंचे हैं वहां से नीचे न चला जाये। आदमी चिंतित रहता है। भय सदैव भविष्य का होता है। उसकी बेटी का नाम है चिंता। भविष्य का पहला अक्षर है - भ। भय दिखाकर ही बीमा कंपनी वाले कमा रहे हैं। सबका बीमा करवा लें। बीमा कंपनी वाले पहले तो आपकी बढ़ाई करते रहते हैं। आपने बड़ी मेहनत से कमाया है पर वो चला ना जाए तो सबका बीमा करवा लो। और वो अपनी गाढ़ी कमाई का हिस्सा उन्हें देने लगता है। कठिनाइयां भी है पर इसके साथ याद रखना दुनिया का मालिक भी तुम्हारे साथ है। दुनिया का भरोसा टूट सकता है पर ईश्वर का भरोसा टूटता नहीं है। लड़की को बचपन से डराया जाता है कि ससुराल में क्या

करोगी। लड़कों को कहेंगे अच्छी तरह पढ़ लो नहीं तो आगे क्या करोगे। खुद चिंता करते हैं और बच्चों को भी भय दिखाते हैं। भय व चिंता का साम्राज्य बना हुआ है। जितना अधिक भय दिखा सकता है उतना बड़ा संगठन बना सकता है ऐसा Hitler ने कहा। लेकिन वह खुद निर्भय नहीं रह पाया क्यूंकि यह नियम है जो 2 दोगे वही लौट 2 कर आएगा हिटलर कभी चैन की नींद नहीं सो पाया। पूरी नींद कभी नहीं ली सारी दुनिया उससे कांप रही थी वो किसी से भयभीत हो रहा था। जो रक्षा कर रहे हैं उनकी रक्षा करने वाला भी कोई है सामर्थ्य खत्म कभी मत करो। जब चिंता आने लगती है तो सबसे पहले बुद्धि पर दवाब पड़ता है निराशा होगी नींद खराब होगी आंते सिकुड़ने लगेंगी। सिकुड़ते समय दबाव आता है। अल्सर होने की सम्भावना होती है।

पत्र ७7 - बोलो तो पहले तु म तोलो

बोलो तो पहले तुम तोलो। अगर घर न किसी का बांध सको तो झोंपड़ी किसी की जलाना नहीं। यदि बन सकते भगवान नहीं पर कम से कम इंसान बनो। यदि भला किसी का कर ना सको तो बुरा किसी का मत करना।

महापुरुष केवल एक के लिए नहीं कहते हैं सभी के लिए कहते हैं। उनके लिए कोई नहीं है ग़ैर। कृष्ण ने गीता एक अर्जुन को निमित बना कर सभी के लिए बोली। ज्ञान को कष्ट समझ कर नहीं उठाओगे तो जीवन में भी कोई कष्ट नहीं रहेगा।

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई ये सारे हैं भाई भाई
एक पिता और है और एक है भाई
मत रख बैर रे बाबा कोई नहीं है गैर कोई नहीं है गैर रे

भारत के सब रहने वाले दुनिया के सब रहने वाले
कैसे गोरे, कैसे काले
हिंदु मुस्लिम झगड़े पाले
पड़ गए जिसमें जान के लाले
काहे का ये वैर रे बाबा कोई नहीं है गैर रे

राम समझ रहमान समझ ले
धर्म समझ ईमान समझ ले

मस्जिद कैसी मंदिर कैसा
ईश्वर के सब स्थान समझ ले
कर दोनों की खैर रे बाबा कोई नहीं है गैर रे

सो तेरा जिस क्षण रे बाबा
क्यों बैठा तू वन मे बाबा
खाक मली क्यों तन रे बाबा
ढूंढ ले उसको मन में बाबा
मांग ले सबकी खैर रे बाबा कोई नहीं है गैर रे

मुझमें राम तुझमें राम सबमें राम
सबसे कर लो प्रेम जगत में कोई नहीं पराया
कोई पराया नहीं है

कबीरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर
ना काहू से दोस्ती ना किसी से वैर रे बाबा

तू पै गया पंजाबियां दे पल्ले ठाकुरा बल्ले बल्ले
(बल्ले ही बल्ले) 3 तू पै गया पंजाबियां दे पल्ले

नम्रता जीवन का सार है। झुकता वही जिसमें जान होती है अकड़ तो मुर्दे की पहचान है। मन नीवां मत ऊंची। आत्म बल का भण्डार तू है। तुम हमेशा Relaxation में रहो। अपने जीवन को प्रगट कर लो जहां

सब गुणों का भंडार है। जहां प्रकाश ही प्रकाश है। कोई हालत में प्रसन्न रहो। अनुकूल प्रतिकूल हालतों के गुलाम नहीं बनो। अहंकार तुझे बांध नहीं पाएगा। आजकल घर घर की कहानी है Tension भीतर का आनंद किसी में दिखाई नहीं देता। कोई सुखी व्यक्ति दिखाई नहीं देता। लाखों में कोई एक प्यासा है पर सब सुखपूर्वक जीवन जीना चाहते हैं।

तेरी प्यास सही है पर तेरी खोज गलत है। तू बाहर तीर्थों में मंदिर में शास्त्रों में तू दूसरे से प्रसन्न होना चाहता है। अपनी राह अपना मार्ग चुन लो तो मंजिल को प्राप्त हो जाओगे। जो सदैव से प्राप्त है उसे प्राप्त कर लो। बाहर की खोज में चाहे कितने शिखर बना लो पर शांति उनमें नहीं है। बाहर दौड़ने पर अपने मनोरोगों का पता चला है। अंतर्मुखता में आ जाओ। तुम्हारे अंदर भी यह खजाना है। जिस तरफ किसी की दृष्टि नहीं पड़ी सभी सयाने ऐसे ही रह गए। बड़े बड़े विद्वान होकर गए लेकिन बुद्धि के पार नहीं गए। यदि गुरू मिल जाता तो स्वयं ही सब कुछ हो जाता। एक मंदिर में ही पहुंच जाओ। तो हर संदेह संशय ख़त्म हो जाएगा। यह Bliss आनंद अमृत तेरे भीतर ही है। कस्तूरी कुंडल बसे मृग ढूंढे वन माहि। ऐसे घट घट राम है दुनिया देखे नाहि।

राजा जनक ने 1000 गायें वो सोने के सींग से मड़ी हुई ले जायें जो तत्व ज्ञानी गुरु हो वो ले जाये। उन्हें याज्ञवल्क्य ले गये। सभी पंडितों ने तर्क वितर्क किये। क्या तुम भी ब्रह्मज्ञानी हो उसी समय में गार्गी भी आ गई और उसने सभी से मौन रहने को कहा और स्वयं प्रश्न पूछे।

(1) वो कौन सा पुरुष है जिसको कोई खो नहीं सकता पाकर कह नहीं सकते पुरुष होते हुए भी पुरुष नहीं अपना होते हुए भी अपना नहीं है। उसने प्रश्नों का जाल बिछा दिया।

(2) प्रश्न कर्कटी नाम की तपस्वी थी वह सामने वाले को डरा देती थी। उसने तप करके ब्रह्मा से कहा वरदान मांगा कि वो किसी से हारेगी नहीं उसने भी पूछा कि

(3) ऐसा क्या है जो छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा है मन बुद्धि के संकल्प बदलता है वो कौन है? जिसे जीव कभी छोड़ नहीं सकता मिलने पर जीव जीव नहीं रहता जो अनंत ब्रह्मांड में एक रस भरपूर होकर ज्यों का त्यों है। सब बनता बिगड़ता वो नहीं बिगड़ता वो कौन है? जो मिश्री में ओत प्रोत है। उसे जानकर सब व्यर्थ हो जाता है। जो भूल्या तभी हुआ खराब हुए। तू अपने को भूला तू कौन है।

मन तू ज्योत स्वरूप है अपना मूल पछान। छू छू करने वाला मारवाड़ में पूजा जाएगा। भगवान के लिए यह होना चाहिए। वैसा हो। ऐसे ढोंग वाले गुजरात में मिलेंगे ज्ञानी तो पंजाब। वहां मूर्ति में रब देखते हैं यहां हर जगह देखते हैं। साचा संतों ने वंदन बार बार। सच्चे संतों को प्रणाम करते हैं। ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप हो जाता है। पहले ये मूर्ति पूजायें सब नहीं थे। भगवान के सत्तचित्त आनंद स्वरूप को जान लेते थे। लोगों की बुद्धि में सतोगुण था। द्वापर और त्रेता के बीच में संतों ने देखा कि अब इन्हें ब्रह्मज्ञान की आवश्यकता थी लेकिन लोगों ने मूर्ति पूजा को अच्छी समझा। हर एक ने अपने अनुरूप कृष्ण की मूर्ति बना दी। हर जगह के

कृष्ण एक से नहीं दिखते। Artists ने उनकी मान्यताओं के अनुरूप मूर्तियां बनाई। एक सत पुरुष होवे तो कईयों को आनंद आ जाएगा।

याज्ञवल्क्य और अष्टावक्र पूर्ण पुरुष थे। जनक को स्वप्न आया मिथला हार गई और वह बंदी बन गया। उसे मृत्यु दण्ड तो नहीं दिया और उसे कमंडल और अंगोछा दे दिया। उसे कोई शरण न दे। दूसरे नगर में गए जहां ग़रीबों को खिचड़ी बंट रही थी वहां खिचड़ी मिली बर्तनों की खुरचन निकाल कर खाई और उसके बदले बड़े बड़े बर्तन मांजे और हक़ीक़त में वो सो रहे हैं अपने मिथिला नगर के सुंदर पलंग पर। अचानक आंख खुली और अंदर में विचार चला कि सत्य क्या है। ये सचा या वो सचा जो स्वप्न देखा। तभी उसने सब ज्ञानियों और विद्वानों को अपनी सभा में उत्तर देने के लिए बुलाया परंतु जब कोई भी उत्तर नहीं दे सका तो सभी को जेल में डाल दिया। उसमें अष्टावक्र के पिता भी थे। वो अपने पिता को छुड़वाने के लिए जनक की सभा में गया और उन्हें देखते ही सभी विद्वान ज्ञानी एवं राजा को उनका टेढ़ा शरीर देख कर हंसी आ गयी। उस पर अष्टावक्र जी भी हंसने लगे। राजा को अपनी भूल समझ में आयी। उन्होंने अष्टावक्र से हंसने का कारण पूछा तो अष्टावक्र ने पलट कर उन्हीं से प्रश्न किया जिसके उत्तर में राजा ने कहा आपकी देह को देखकर सभी को हंसी आई। उस पर मुनि ने कहा मुझे इसलिए हंसी आई कि तुम्हारी पूरी सभा चमारों से भरी हुई है। उनकी चम दृष्टि है वह अंदर के आत्म तत्व को नहीं जानते। मंदिर टेढ़ा है पर आकाश नहीं। नदी के किनारे टेढ़े हैं परंतु जल नहीं। गन्ना टेढ़ा मेढ़ा है परंतु उसका रस नहीं। ऐसा सही अर्थ सुनकर राजा उसके आगे झुक गया और प्रश्न पूछा जिसका उत्तर था ना ये सचा ना वो सचा। उसने जाना कि राजा जब अभी तक प्रश्न कर रहा है तो यह शर्तिया

ज्ञानी तो नहीं है, जिज्ञासु है क्यूंकि जिज्ञासा है जानने की कि सत्य क्या है? उसके बाद राजा को एक वन में ले गया और फ़ीस में उसका तन मन धन ले लिया। तभी राजा ने वापिस जाने के लिए घोड़े की रकाब पर पैर रखा तो गुरु ने एक थप्पड़ लगाया कि ये तन किसका है? मन में प्रश्न उठा कि राज्य कैसे चलेगा तभी दूसरी थप्पड़ खाई और जब दान देने के लिए पैसे निकाले तो तीसरी थप्पड़ खाई कि यह धन किसका है? राजा आवाक रह गया और समझ गया कि अब मेरा कुछ नहीं है। फिर उनके प्रश्न व उत्तर चले जो अष्टावक्र गीता के रूप में हैं। और तब राजा को कहा कि तुम मेरा समझ कर यह राज्य चलाओ। राजा अपनी मैं मेरी से छूट गया। तभी सब दुखों से छूट गया। और निर्मोही होकर राज्य किया। महल को आग लगने पर कहा जिसकी जले वही पछताए मेरी है ही नहीं ये नगरी। लोगों को संशय आने पर नंगी तलवारें टांग के भोजन खिलवाया जिससे उन्हें भोजन का स्वाद नहीं आया। शरीर पर मौत की तलवार टंगी हुई है तो स्वाद क्या लेंगे। शुकदेव ने फिर राजा जनक से ज्ञान लिया और उसे भी दूध का भरा कटोरा देकर बाज़ार घूमने को कहा और उसका ध्यान कहीं नहीं गया। उसके अंदर का भी संशय दूर हुआ कि जिसको प्रभू के स्वरूप में ही ध्यान है उसका ध्यान पूरी दुनिया में कहीं नहीं जाएगा। शुकदेव को छः दिन बाहर खड़ा किया। छः दिन सुंदर स्त्रियों के बीच में रखा उसमें कोई वासना नहीं गई। तब गुरु ने कहा तुमको ज्ञान की प्राप्ति हुई फिर शुकदेव ने दक्षिणा देनी चाही। तो जनक ने उसके अहंकार को पकड़ा कि अभी मैं है तो कहा निरुपयोगी चीज़ लेकर आओ। उसने विष्टा उठानी चाही तो उस ने कहा मैं भी खाद बनकर उपयोगी हूं। कुत्ते को हाथ लगाया तो कुत्ते ने कहा मैं भी मालिक का पहरा देता हूं। विष्टा ने कहा कल तक मैं मिठाई थी और तेरे जैसे

देह अध्यासी का साथ करके मेरी ये हालत हुई तो शुकदेव को समझ में आया और दक्षिणा के रूप में अपना देह अध्यास गुरु को अर्पित किया। ऐसे ही राजा जनक विदेही कहलाये।

क्रोध और शांति एक साथ नहीं रह सकते। क्षमा का गुण धारण करना चाहिए। जात पात के भरम ख़त्म कर दो क्यूंकि एक आत्मा स्वरूप ही सत्य है। यदि गुण धारण करेंगे तो प्रकृति इनाम देती है। नहीं तो प्रकृति भी दंड देती है। पुरानी परम्पराओं को विचारों को छोड़ो। किसी साधन यत्न से विकार नहीं जाते।अंधेरा प्रकाश करने पर ही समाप्त होगा।

पत्र ७४ - मनु ष्य हर समय मस्तिष्क

मनुष्य हर समय मस्तिष्क का संतुलन रखता है। जब संतुलन बिगड़ने लगे तो प्रकृति के बीच चले जाओ। नहीं तो जवानी में ही वृद्धावस्था आ जाएगी। बीमारियां अंदर से प्रगट होने लगती है। डाक्टरों के नम्बर डायरी मे आने लगते हैं। पहले किसी और के नंबर रहते है। Doctor सबसे अच्छा दोस्त लगने लगता है। तुम नहीं रहोगे तो यह चीजें किस लिए एकत्रित की। पैसा कमाने में जीवन गंवा दी। तुम्हारे जीवन में नियंत्रण है ही नहीं। अब तुम किसी पचड़े में ना पड़ो। मस्त रहना सीखो सोने जागने के नियम बदल दो। खाने पीने के नियम बदल दो सोचना छोड़ दो तुम्हारा यौवन दोबारा लौट आएगा। मुकदमा हारने पर भी उसे शोक नहीं होता। फिर तुम सौ साल भी जी सकते हो। समस्या से मुक्ति प्राप्त करके जीवन का आनंद लें। जो मिला है वही पसंद का हो जाये। उसी में अपनी पसंद मिला दो। जिन परिस्थितियों को बदल सकते हो उसके लिए कोशिश करो। जिन्हें नहीं बदल सकते हो ख़ुद को बदलते जाओ परिस्थितियों से लड़ो नहीं भय चिंता छोड़ दो आदत कैसे बनती है जिन चीज़ों को दोहराते जाते हो वही आदत बन जाती है। धागे जोड़ते जोड़ते रस्सी बन जाती है जिसे तुम तोड़ नहीं सकते। पहले आदत का निर्माण करते हो फिर आदतें तुम्हारा निर्माण करती हैं। शुरू से ही बच्चा चिड़चड़ा ज़िद्दी है तो बड़े होकर वैसी आदत हो जाएगी हर बात ज़िद्द से मनवाना चाहते हो। हम लोग भूल जाते हैं कि यह इसके लिये ख़राब है और पीछा छुड़ाने के लिए आदतें पूरी करते हैं। उनके ज़िद्द की क्यारी को पानी दे रहे हो। मन में शांति नहीं है। आदमी के मन की तीन स्थितियां हैं

(1) चेतन मन - conscious mind

(2) उपचेतन - subconscious

(3) अचेतन - unconscious

कभी कभी अपने को देखो हम क्या हैं कैसे कार्य करते हैं। हर समय सजग रहना यह चेतन मन है। सजग हो गया Car चलते समय जब तक अभ्यास कर रहे हो और सीख गये तो उपचेतन में Feed हो गई और Subconscious अभ्यास को Feed कर चुकी है। वो कार्य करते रहो अंदर का बैलेंस पहले बिगड़ता है बाहर का बाद में बिगड़ता है। जो उपचेतन मन में सब बातें हैं वो तर्क नहीं करते। जब आप सम्मोहन में आ गए तो आपको जो भी कहेगा वह तुम मानते चलोगे। मां के पास दिल होता है दिमाग कम होता है। बाप के पास दिमाग अधिक दिल कम करता है। मातायें भावनाओं पर ज्यादा टिकी रहती हैं। अवचेतन मन पशु का काम करता है। कोई न कोई जलील हरकत करता है। जिन चीजों को दबाया जाता है वह Unconscious मे बैठ जाती हैं। अवचेतन मन फिर सपने में करने लगता है जो अंदर दब गई हैं। सपने का चोर देखकर ज्यादा डरते हैं। भय चिंता में रहने वाले की आवाज पर भी असर करता है। जब हम किसी भय या क्रोध में होते हैं तो डर भी लगता है। क्रोधित व्यक्ति का डंडा देखकर ग़ुस्सा सुकड़ने लगता है। एक दम ठंडा होकर कहेगा मैं तेरा भला करना चाहता हूं। भय से क्रोध दबता है।ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सतगुरु की आवश्यकता है।

सतगुरु पूरे देव मिले
फिर दूजा देव मनावां क्यों?
आत्म रस वाले आत्म मिल गए

बन बन खोजन जावां क्यों?

सतगुरू मिलने से मंजिल सहज हो जाती है। ईश्वर से प्रेम बढ़ जाता है। प्रेम ही परमात्मा है। प्रेम बिना थोथे सभी जाप ताप व्रत नेम। प्रेम है One Way Traffic केवल देते चलो।

निष्काम कर्म का कोई फल नहीं क्यूंकि निष्काम ही अपने आप में फल है तो फल के ऊपर फल नहीं लगते। जीवन ही प्रेममय हो जाए। Love All Alike. सर्व से एक जैसा प्रेम। Sameness & Oneness with God.

No Sin No Sickness No Death.

How I Feel रोज़ अपने से पूछो। मैं क्या हूं? कौन हूं? Self Enquiry करनी है। मै साक्षी दृष्टा स्वयं को स्वयं प्रकाशित करता हूं। जितना दबाव मस्तिष्क पर पड़ता है उतना अशांत हो जाता है।

सदा न रहेगा जमाना किसी
नहीं साथ जाता खजाना किसी का
नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
बुरा है बुरा जग में फंसाना किसी का
दुनिया का गुलशन लगा ही रहेगा।
आना किसी का जाना किसी का।

जीवन को मुक्त करना हमारे हाथ में है। विकार रहित हो जायें नहीं मैं हूं नहीं मेरा है। मैं तू में ही सब झगड़े हैं।

कृष्ण से पूछा कि तुम्हें माखन क्यूं प्रिय है। वह बोले इसमें मां शब्द है मां ही सबसे प्रिय है। इसलिए लोग नवरात्रों में भी मां की पूजा करते हैं। नव शब्द महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसका पहाड़ा आद से अंत एक ही है। 9 18 27 8+1 जोड़ने से 9, 2+7 जोड़ने से 9 बने। तुम भी हर हालत में सम रहो।

पत्र ७१ - सत्गु रु मिले मे रे सारे दु ख बिसरे

सदैव अपने सच्चे आनंद में आनंदित रहो। यह जीवन जिस अर्थ के लिए मिला है वो यहीं आकर पूरा होता है।

सतगुरु मिले मेरे सारे दुःख बिसरे अंतर के पट खुल गयो रे

गुरु अंदर बाहर से हमारा खोट निकाल कर हमें आप समान बनाने में तत्पर है। हम भी थोड़ा आगे बढ़कर उसकी सहायता करें तो ये कार्य जल्दी सिद्ध हो जाएगा। सभी के लिए प्यार

प्यार सहित

Pramila

पत्र 70 - संत दर्शन से पापी भी

संत दर्शन से पापी भी तर जाते हैं। रामचन्द्र जब वनवास गए तो जिन पर प्रभू की दृष्टि पड़ गई तो वो भी तर गए।

जीवन में यदि सुख शांति का वृक्ष नहीं लगा तो इसका मतलब वो वन जिसमें सुगंधित पुष्प नहीं तो वो वन बेकार लगता है। जिस पर प्रभू की कृपा नहीं बरसी तो उसके लिए संसार दुखमय है। संसार को दुखों का घर माना गया है। ये शरीर भी व्याधियों का घर है। जिसमें दुख ही दुख है। दुख की अनेक शक्लें आयेंगी । पुरुषार्थ से इन्हें ठीक कर सकते हैं। एक को सम्भालेंगे तो दूसरे आएंगे। अचानक कोई पागल पत्थर मार के दुख दे जाए। समाज मे पाप कोई और करे दुख उसका समाज भोगेगा। राजा का दंड प्रजा भोगती है। उनकी कलम से कईयों का सर कलम होगा। हम बुरे होना नहीं चाहते। गीता में अर्जुन ने पूछा- हे कृष्ण! मनुष्य झूठ नहीं बोलना चाहता नहीं करना चाहता है फिर बलात्कार से कौन कर्म कराता है। काम क्रोध के अधीन होकर मनुष्य कई पाप करता है मनुष्य के अंदर बड़े तूफान आ जाते हैं। क्रोध में मनुष्य यमराज का रूप हो जाता है। भयंकर आग पहले अपने घर को जलाती है बाद में दूसरे का बुरा करेगी। हम नहीं चाहते बुरा करना और हो जाता है।

तुलसी या संसार मे भांत भांत के लोग
सबसे मिलकर रहिये नदी नाव संजोग

पहले मैं सुखी या निश्चिंत था कोई फिक्र नहीं थी कोई परेशानी नहीं थी। आंख मे आंसू अंग अंग में निराशा क्या ये दुर्भाग्य है इंसान कहता है परिवार या मित्र अच्छे नहीं। अच्छे घर में जन्म नहीं मिला। किसी और

देश में जन्म लेते अपने दुखी होने का जिम्मेदार दूसरे को ठहराते हैं। महाभारत मे धृतराष्ट्र विदुर से पूछते हैं दुख सबकी सम्पत्ति क्यों बनती है हरेक दुख का गम का मारा है। ये दुःख कैसे और क्यूं मिलता है कुछ दुःख आयेंगे और चले जायेंगे थोड़े समय में परख होती है।

रहिमन विपदा हू भली जो थोड़े दिन होए।

हित अनहित या जगत में जान पड़त सब कोए।

दुख में जो सहयोगी बनें ऐसा सच्चा साथी सगा है। वही सच्चा साथी है। दुख में दो आंसू या दो बूंद भी दिए हों तो उसे ना भूलना। दुख आपको अकेला कर देता है जो उसमें सहयोग करे वो ही तुम्हारा मित्र है।

धीरज धर्म मित्र और नारी

आपत्ति काल परखिए चारी

विपत्ति आने पर ही धार्मिक हैं या नहीं है पत्नी है या नहीं मेरी, जो टूटने से बचा ले। पत्नी जब भोजन कराए तो मां का रूप है। दुख में मैत्री बन जाए। योजना में मित्र बन जाए। सारे रिश्ते उससे जुड़ जाते हैं। दुख के समय जो साथ देती है वही पत्नी है।

पत्र 71 - अपने अपने आनंद में मस्त

अपने अपने आनंद में मस्त रहते हैं। यह प्रेम प्याला आप भी पी रहे हैं और सबको पिला रहे हैं। प्यार का पहला अक्षर ही अधूरा है तो प्रेम में कभी भी तृप्ति नहीं आती। व्याकुल और बेचैनी उदासी विरह वेदना बनी ही रहती है। ये प्रेम भी किसी भाग्यशाली को ही लगता है। जो इस राह पर आया वो ही इस खजाने से मालामाल हो जाता है और फिर सभी को बांटना शुरू कर देता है अपने अंदर प्रेम उत्साह हमेशा भरा रहे उमंग मे रहें। उदासी मायूसी का नाम भी गुरु को पसंद नहीं है।

आनंद श्रोत बह रहा पर तू उदास है
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है।
गुरुअ दिना खोले खुशीया जा खजाना
गुजरया गमन जा जमाना जमाना
अब कोई दुख तुम्हें दुखी नहीं कर पाएगा।
जिसके ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसा पावे
बोल न जाने माया मद माता मरणा चित्त न आवे।
मै क्यों डरुं किससे डरुं ज्ञान सत्संग से भाव भक्ति से।

सत्संग मिले तो भाव और भक्ति होवे। तुलसीदास ने भी कहा

सुत दारा और लक्ष्मी पापी को भी होय
संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोए।

इन तीन का मिलना सतगुरु की कृपा से आशीर्वाद मिलता है दस काम छोड़कर भी आएगा जिस को लगन लगेगी। दुनिया के बाजार में मैंने भी एक बाज़ार खोला है।

ले लो रे कोई राम का प्यारा
मैं शोर मंचावां गली गली
हरि नाम के हीरे मोती मैं बिखरांवा गली गली 2
जिस जिस ने ये हीरे लूटे वो तो माला माल हुए
दुनिया के जो पुजारी हुए आख़िर वो कंगाल हुए
धन दौलत और माया वालो
मैं बतलायूं गली गली
ले लो रे कोई राम का प्यारा
शोर मंचावां गली गली

गुरु कहता है यह धन जाकर लुटाओ बांटो तो तुम्हारा जीवन बनेगा। ईर्ष्या के फफोले दिखाई नहीं देते लेकिन गहरे होते हैं। 55% औरतों में यह ईर्ष्या रहती है। अपने सुख का मजा जाता रहता है। एक आदमी ने बहुत मकान बनाए। सभी का सार एक बंगला बनाने में लगा दिया। सभी को दिखाकर कहता था इसमें कोई कमी तो नहीं है। एक दिन उस व्यक्ति को उदास देखा गया। लोगों ने जानना चाहा तो बोला एक वर्ष विदेश में रहकर बहुत सी चीजें उसमें सजाने के लिए लाया था लेकिन उसकी बगल में उससे बड़ा पड़ोसी का बना हुआ था। मैं अब इससे बड़ा मकान बनवाना चाहता हूं और जब वह देखेगा तो कहेगा हार्दिक बधाई लेकिन अंदर में हार्दिक जलन हो रही होगी। लोगों ने समझाया कब तक

होड़ करोगे। तो बोला क्या लोग मेरे पीछे ही पड़े रहेंगे। लोग प्रतिस्पर्धा घृणा में पड़े रहते हैं जो आदमी कभी संतुष्ट नहीं होता है वह सदैव दुखी रहेगा। भगवान ने सब कुछ दे दिया है फिर भी अंदर से असंतुष्ट है। व्यग्रता बनी रहती है। संतोष नहीं है इसलिए दुखी है। और कहा गया है कि जो व्यक्ति नित्य प्रति शंका में रहता है संबंधों में संदेह हो जाए तो बंटवारे हो जाते हैं। बिना बात के यह चीज पलती है बढ़ती है और जीने के प्रति प्रश्न चिन्ह लगा देती हैं कि क्यों जी रहे हैं। जो व्यक्ति क्रोधी है वह भी दुखी रहेगा। जिस व्यक्ति की स्वतंत्र कमाई नहीं है दूसरों पर निर्भर रहता है वह मनुष्य हमेशा दुखी रहेगा। आने वाले दुखों का कारण ढूंढकर आज से अपना वर्तमान याने आज को सुधार लो। आदमी दुखी होगा तो किसी पंडित या ज्योतिषी के पास जाएगा कि देखो मेरा हाथ वह भी ग्रह नक्षत्रों की बातें करके उलझा देगा दशाएं बताएगा और तुम्हारी दुर्दशा कर देगा। पंडित जी से एक आदमी भविष्य पूछने गया। साफ-साफ बता दो कितने साल का कष्ट है। बोले 2 साल का कष्ट है बोला फिर तो खत्म हो जाएगा। ज्योतिषी बोला दुख तो रहेगा पर तब तक सहने की आदत पड़ जाएगी। दुख भी है दुख का कारण भी है निवारण भी है। दुख है तो कबूतर की तरह बिल्ली के सामने आंखें बंद कर लेते हैं कि बिल्ली है नहीं पर दुख है। तो उसका कारण भी है तो उसका निवारण भी है। तो पूछा गया क्या करना चाहिए।

(1) ना सदा दुख रहेगा ना सुख रहेगा।

(2) जो तुम्हारी इंद्रियों को अच्छा लगता है वह सुख है, जो प्रतिकूल है वह तुम्हारे लिए दुख है। अपने पर नियंत्रण करो तो सुखी हो जाओगे।

ज्ञानी हर परिस्थिति के लिए पहले से ही तैयार रहता है। परिस्थितियां तो रोज-रोज नई शक्ल बना कर आती हैं। तुम उन्हें जानो पहचानो और अंदर से ही उन्हें दूर करने का प्रयास करो।

गुरु का साथ है कितना प्यारा...
भूल गए हम यह जग सारा...

इतनी प्रभू प्रेम की लगन लगे जो देह अध्यास ही ना रहे। सभी कुछ इस 'मैं' को ही अच्छा लगता है। दादा ने कहा 'मैं ना' का मंत्र याद करो मैं ही नहीं तो दुख किसको लगेगा। मान अपमान शब्द आवाजें सब मैं को ही असर करती हैं। अपने आप को कभी हीन भावना से मत देखो कमजोरी पाप है। कमजोर व्यक्ति को तो जीने का कोई अधिकार नहीं कमजोर रहने से तो अच्छा है मौत को गले लगा लो करूंगा या मरूंगा। इस राह पर आगे बढ़कर पीछे मुड़कर देखना भी कायरता है। तुम शेर की औलाद हो तो शेर शिवोहम की गर्जना करो। शेर का बच्चा अपने बाप की गर्जना से नहीं डरता तो तुम क्यों परमात्मा से भेजी हुई किसी भी विपत्ति से डरते हो। निर्भय होये भजो भगवान। अधिक से अधिक क्या होगा। शेर होकर संध्या माई अर्थात (लोकारीति) से डर जाते हैं कि यह हमें खा जाएगी। लेकिन वास्तविक में संध्या माई तो केवल शाम ही है लेकिन तुम उस शब्द को ना जान कर केवल डरते रहते हो पर जब दूसरा शेर गुरु मिलता है तो कहता है तुम भी ललकार करो मेरी तरह तो ये धोबी रूपी संध्या माई खुद ही तुमसे डर कर भाग जाएगी।

तुम दुनिया से डरते हो और दुनिया तुमसे डरती है कि कहीं यह पूरी प्रभू की ना हो जाए। तो हम लोगों का क्या होगा। गुरु तुम्हें तुम्हारी Value करना सिखाता है कि तुम अपने को कमज़ोर औरत या लड़की

क्यों मान कर चल रहे हो। दुनिया से डरोगे तो दुनिया डराएगी रोब जमायेगी आंखें दिखाएगी हंसी उड़ायेगी चैन ना लेने देगी जान जलाएगी। दुनिया के बाप हो तुम दुनिया तुम्हारी है। ये एक पुरानी पिक्चर का गाना है लेकिन कितना सही है। यह हर एक के जीवन से लागू होता है। बस अपने अंदर पहले सहन शक्ति भर लो। तन मन में शक्ति भर लो आत्म विचार से दुई का नाश होता है आत्म विचार से। वास्तव में तो गुरु पक्का कराता है कि जगत अणिमा बणिया ही नहीं लेकिन हमारे अज्ञान अंधेरे में यह माया की पिक्चर सच्ची दिखाई देती है। रोशनी करो तो पिक्चर गायब हो जाएगी। अपने को अकेला अबला लड़की दुखियारी मत समझो।

जो तू चाही सो तू आही
मोरा मन भजन करी तू कहंजो।

स्वयं में जाकर स्वयं का दीदार करो। प्रधान मंत्री चुनाव के समय जब पहले वोट डालने जाता है तो कांग्रेस का होगा तो कांग्रेस में बीजेपी का होगा तो बीजेपी में ही डालेगा। क्योंकि एक वोट भी बहुत कीमती है। हार जीत का फैसला कर सकता है। इसलिए तुम भी अपने को ही वोट देकर अपनी शक्ति बढ़ाओ।

सभी के लिए प्यार - Your own self

Pramila

पत्र 72 - खुश रहने की कला

सदैव मुस्कुराते रहो हंसते रहो। खुश रहने की कला सतगुरु ही सिखाता है। यह जीवन जिस कार्य के लिए मिला वहां तक प्रभू ने तुम्हें पहुंचा दिया है। अब बाकी आगे बढ़ना तुम्हारा अपना काम है। पुरुषार्थ का अर्थ है पुरुष अर्थ। गुरु की कृपा और अपने प्रयास हमें अपनी मंजिल तक पहुंचायेंगे। यह आनंद खुशी जो मिली है वह सभी में बांटते चलो। मन को ख्यालों से खाली कर दो। मैं मेरा कुछ नहीं है। सब एक ड्रामा खेल हो रहा है। तुम्हें तो सच्चा प्रेम मिल गया है। सबसे ऊंची प्रेम सगाई। यह प्रेम किसी भाग्यशाली के हृदय में पैदा होता है। इस प्रेम की आग में ही सब कुछ जल जाता है। कोई ऐसी आग लगाए ये तन मन जीवन सुलग उठे। मेरा सब जल जाए हरि का हो सो रह जाए। मैं को गुम कर दो तो स्वयं में ही सब प्राप्त हो जाएगा।

Your own self

Pramila

पत्र 73 - उत्पति और उपपति

उत्पति का अर्थ उत्पति हुई उपपति याने कैसे हुई। और कब हुई। मनुष्य का आधा जीवन नींद में आधा गृहस्थ के कार्यों में और थोड़ा बचा तो इधर की उधर उधर की उधर करता है। बीता हुआ समय तो आता नहीं है धन आता है और जाता है। मृत्यु अवश्य होनी है। सफ़र करने के लिये कितनी तैयारी करते हैं मृत्यु के लिये क्या तैयारी करते हो। लक्ष्मी तो शाश्वत नहीं है उसके जाने में समय नहीं लगता। इस मृत्यु से बचने के लिए सत्संग ही साधन है।

श्रवण : प्रभू की महिमा का श्रवण जो कुछ सुनते हो श्रद्धा सहित हो और मनमनाभव होकर सुनो।

स्मरण – याद करते रहो उस समय जगत का विस्मरण करते रहो। हर समय गुरु की महिमा करते चलो। स्मरण करते समय यदि जगत याद आ गया तो भक्ति खंडित हो गई। निष्काम के लिए गुरु प्रेरित करता है तो उसमें भी Automatic गुरु महिमा का वर्णन होता है। तुमने मुझको प्यार किया है इतना कौन करेगा इतना। गुरु के प्रेम से ही जगत मिथ्या भासता है कार्य शरीर से होते हैं और चित में चितवन गुरु का चलता रहता है। जितना अधिक समय गुरु के साथ बिताया वही भक्ति करते चलो फिर गुरु हमें सर्व सृष्टि से जोड़ता है कि मुझे ही सर्व में देखो। गुरु तत्व को जानने वाला है हमें भी तत्व में ही पहुंचाना चाहता है। सांसारिक प्रेम में तो प्रेमी प्रेमिका दोनों वासना में अंधे होते हैं और आपस में बातें भी संसार की करते हैं लेकिन गुरु असंसारी है हमें भी

असंसारी बनाता है। धीरे धीरे मन संसार से उपराम होकर एक निष्ठ भक्ति में लग जाता है। ज्ञान भक्ति कर्म तीनो का समन्वय ही ज्ञान है।

जागृत स्वप्न सुषोपति में भी सावधान हो जाता क्यूंकि वो जानता है गुरु मुझे पूरा समय देख रहा है तो मेरे से कोई गलती ना हो जाये। तुम कभी गुरु की परीक्षा मत लेना। गुरु तो अपने सतगुरु के आगे परीक्षा दे चुका है कभी कभी मन कहता है कि मैं भी गुरु को देखूं तो सही कि गुरु भी पूरा जागृत है और तुम्हारे मन को भी दूर से ही गुरु जान लेता है कि ऐसा तुम कभी मत करना गुरु को परखने का काम तुम्हारा नहीं हैं। गुरु तुम्हारे मन को समझ लेता है। गुरु जागृत करता है उसका अंत:करण इतना शांत है कि पदचाप सुई के गिरने की खनक भी सुन लेता है गुरु की महान कृपा है पूरा सागर पार पहुंचा देता है। किनारे पर पहुंच कर नाव पकड़ कर नहीं बैठो आलस्य मत करो अपने जीवन को पराकाष्ठा तक पहुंचाना है तुम भी शीघ्रता करो देर मत करो। कल यह शरीर छूट जाए इसलिये तुम कभी भी आराम से न बैठ जाओ कि अब तो प्राप्त कर चुके हैं चाहे जैसे रहें जैसे चलें। गुरु हमें हज़ार आंखो से देख रहा है इसलिये मेरे से कोई भी ग़लत कार्य नहीं होना चाहिए। महसूस करें कि हर पल प्रभू मेरे साथ हैं पल पल तेरा बीता जाये अब तो काम उतार कर बैठो। माया के काम भी बहुत कर लिये पर अब तुम इस सच के लिये पुरुषार्थ करो। अपने को दलदल से निकालो। ईश्वरीय प्रेम करो। सांसारिक प्यार तो करके देख लिया जिस देह को प्यार करते हो वो भी फानी है हर व्यक्ति की एक झूठी कहानी रह जाती है कितने दिन तक तुम अपने बाप दादाओं को याद करते हो उनकी तस्वीरें तो तुम्हारे स्टोर रूम में पड़ी रहती हैं पर आज हम राम को कृष्ण को नानक बुद्ध ईसा मीरा गार्गी सीता के गुणगान करते हैं क्योंकि उन्होंने सब के हृदय में

अपने आचरण की छाप छोड़ी है। गुरु शब्दों से नहीं वरन् अपने जीवन से हमें सीखता है। उसके जीवन कथनी व करनी एक ही है। जो कुछ वो कहते हैं वही उनका जीवन है। इसलिए उनके द्वारा बोला हुआ एक वचन भी हमारे जीवन को बदल देता है।

One Touch One Glance of True गुरु इस enough to show you God. गुरु को करुणा का भाव है कि जो ये मेरे दर पे आया है ये कहीं किसी और माया में न फंस जाये। बीच में Speed Breaker भी बहुत आते हैं पर आशिक़ अपनी मंजिल पर पहुंच कर ही दम लेते हैं हर मुसीबत को पार कर जाते हैं अपने साहस अपनी आंतरिक शक्ति के द्वारा गुरु की याद ही महा सुख दायी है जब जब याद करते है वो हमारी आंखो के आगे खड़ा हो जाता है गुरु हमारा पीछा करता है। पाछे लागा हरि फिरे कहत कबीर कबीर। जब कबीरा मन ऐसे निर्मल भया जैसे गंगा नीर – हृदय की शुद्धता हो जाती है पवित्रता बढ़ाते जाओ।

Be Clean rather than Clever.

होशियारी नहीं पर केवल भोले भाव हो जाओ भोले भाव मिले रघुराई। चतुराई ना भाये उसे वो प्यार करे अनजान से। हर बात से अनजान हो जाओ। जगत की विस्मृति ही अंदर का आनंद है। भूल जा जो देखता है जो है देखा भूल जा क्या करेगा याद करके ये ज़माना भूल जा क्योंकि ये ज़माना तुम्हारे साथ नहीं चलेगा। संग सहाई सो आवे न चीत जो बैरायी ता सिहु प्रीत। विषयों से माया से बहुत दिन प्रीति की है आधी उम्र चली गयी अब बाकी का जीवन प्रभू की स्तुति में लगा दो लोग क्या कहेंगे? वे खुश होंगे या नहीं चिंताए छोड़ दो।

भगवान अपने भक्त की करता खुद निगरानी रोज़ नया बिस्तर नयी मंजी नया दाना पानी। तुम केवल उसके हो जाओ फिर वो तुम्हारा योग क्षेम स्वयं उठाता है। तू योग क्षेम को भी न चाहने वाला बन। Be nothing हो जाओ कुछ बनने में ही दुख है। प्यार सभी से पर दिल तो एक प्रभू हवाले कर दें। गोपियों ने ऊधव से कहा प्रभू तो हमारे तन में मन में नैन में बस गया है अब कहां लिखू संदेश। पत्तियां तो उसको लिखू जो कोई होय विदेश। वह तो हाज़रा हजूर हैं। मंदिर में नहीं मस्जिद में नहीं जहां याद करो भगवान वहीं। दिन दूनी हो विरह वेदना पल भर चैन ना आये रे कोई ऐसी आग लगा दे ये तन मन जीवन सुलग उठे। तेरे नाम की लौ कुछ ऐसी लगे पल भर भी तुझे विसरा न सकूं तेरे नाम की लौ कुछ प्रेम में अखियां भर आई कुछ प्रेम में ऐसा दिल डूबा अपनी हालत खुद ही समझूं लेकिन तुमको समझा न सकूं। बस उस प्रेम के समुंदर में डूब जाओ। गुम हो जाओ। सब कार्य पहले से भी अच्छे होंगे। तुम्हें कुछ सोचने की जरुरत नहीं है मेरी चिंता हरि करे मुझे न चिंता कोय। अर्जुन शिविर में आराम से सो रहा था जब भीष्म ने प्रतिज्ञा की कि कल तक इसे मार दूगां। कृष्ण अर्जुन के शिविर में गये और बोले तुझे कोई चिंता नहीं है आराम से सो रहे हो सो अर्जुन बोला जब मेरा रक्षक जाग रहा है तो मैं क्यों नहीं आराम से सोऊं। एक सारथी अर्जुन ने चुन लिया जिसने कुरुक्षेत्र से उसे निकाल कर जीता दिया हम भी अपनी बागडोर ऐसे कृष्ण को ही सौंप दे अपना रथ देकर निश्चिंत होकर बैठ जायें टेक लगा कर क्योंकि मेरे सारे कार्य प्रभू स्वयं ही कर रहा है। नाथ मेरे मैं क्या कुछ सोचूं तू जाने तेरा काम जगत के स्वामी हे अंतरयामी मैं तुझसे क्या मांगूं? जब बिना मांगे ही तुम मुझे सब कुछ दे रहे हो। अनबोलत मेरी वृथा जानी अपना नाम जपाया ठाकुर तुम

शरनाई आया। उतर गया मेरे मन का संशय जब तेरा दर्शन पाया। दर्शन पाकर तुम खुद उसके रूप में रंग जाते हो अपनी शक्ल में भी उस के होने का धोखा होता है कि वो तो यहीं मेरे रोम रोम में बस रहा हैं अब बाहर देखने की तो कोई इच्छा ही नहीं रही। कोई इच्छा होने से पहले ही प्रभू पूरी कर देता है तो भक्त को कुछ कहना भी नहीं पड़ता क्योंकि भक्त की भाषा मूक होती हैं वह तो अपने प्रीतम को देख कर अघाता ही नहीं है। अपने भक्त को अटल पदवी देता है जहां से वो हिल नहीं सकता। मै ही तुम हूं तुम ही मैं हूं ये भेद सनम मुझे आज मिला। तभी तो तुमसे अभेद हो गये इस सुख के आगे बैकुंठ के सुख भी फीके है इस सुख में छिपा हुआ एक मीठा दर्द है जो कह भी नहीं सकते छिपा भी नहीं सकते यह ईश्वरीय प्रेम सदा ही आनंद देता है विरह में भी योग होता है विरहासक्ति हो जाती है उसकी याद में ही सुख मिलता है सांई तेरी याद महा सुख दायी। ज़िंदगी प्यार की दो चार घड़ी होती है चाहे थोड़ी सी भी हो उम्र बड़ी होती है। कुछ पल के लिए भी प्रभू का साथ जीवन के अमूल्य क्षण हो जाते हैं जो संसार में करोड़ों रु खर्चने से भी नहीं मिलते। इस धन के बाद फिर किसी माया की Value नहीं रहती सच्चा गुरु सच्चा प्यार करके प्यार करना सिखाता है। बच्चे के साथ मां को भी उसकी भाषा में तोतला ही बोलना पड़ता है और फिर कैसे एक दिन गुरु हमें उस प्रेम का महासागर बना देता है जितना लुटाओ उतना खुटता नहीं है। देते चलो देते चलो उसी में आनन्दित हो जाओ पागल हो जाता है प्रेमी कि कैसे हमें यह जन्म जन्म की पूंजी मिली है जो दुनिया में सभी ने गंवा दी है।

पायो जी मैंने राम रत्न धन पायो मीरा ने भी कहा असुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोयी मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा ना कोई जाके सिर

मोर मुकुट मेरो पति सोई। अपना कंत अपना सखा अपना साथी एक गुरु ही है कैवल्य भक्ति हो जाती है जहां दो भी नहीं रहते प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय। तू तू करता तू रहा मुझमें रहा न मूं आपा पर का मिट गया फिर जित देखां तित तू। तेरे बिना ना कुछ सूझे तेरे बिना ना कुछ भाये। प्रेम की है यह तार सजन जो इधर सजे और उधर बजे गुरु ही हमारे सोये हुए हृदय को जगाता है तुमने मुझको प्रेम सिखाया और फिर एक नयी दुनिया में बसाया मस्त बनाया रूप दिखाया। तुम्हीं हो रूप सिंगार सतगुर तुम्हीं हो सर्व आधार। इसमें डूब कर ही किनारा पाया जाता है। जहां मैं की विस्मृति हो जाती है।

Dive into Gurujiz Love Self Ocean...

divinepramilabhagwan.com